

नया सोवियत साम्राज्य

नया सोवियत साम्राज्य

लेखक की पुस्तक The New Soviet Empire का
संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर

डेविड जे० डालिन

नई दिल्ली
आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया आठ आने

प्रकाशक
आधुनिक साहित्य प्रकाशन
पोस्ट बॉक्स नं० ६६४, नई दिल्ली।

मुद्रक
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

सूची

इस पुस्तक में युद्धोत्तरकालीन पूर्वी यूरोप में फैलते हुए नये सोवियत साम्राज्य पर दृष्टि डाली गई है और उससे उत्पन्न गम्भीर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को स्पष्ट रूप में चित्रित किया गया है। आज की राजनीतिक अशान्ति का अध्ययन करने वाले किसी भी विद्यार्थी के लिए पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

: १ :

सोवियत साम्राज्य का विकास

जब कि जर्मनी, जापान, इटली, ब्रिटेन, फ्रांस और नीदरलैण्ड्स के साम्राज्यवादी ढाँचे खण्ड-खण्ड और छिन्न-भिन्न हो रहे थे, उसी समय सोवियत साम्राज्य का जन्म हुआ।

१६३० के दशकान्त तक सोवियत राज्य को साम्राज्य का नाम नहीं दिया जा सकता था। वह अपने घरेलू झंझटों में इतना उलझा हुआ था कि उसके साम्राज्य-निर्माण या विजय-लिप्सा का कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ता था। उसके सिद्धान्त और साम्राज्यवाद-विरोधी विचार-धारा में ही भावी अभियान के तत्त्व मौजूद थे। १६३६ से, और विशेषकर १६४४ से, सोवियत संघ पूर्व का नया साम्राज्य बनने की दिशा में अग्रसर हो रहा है। साम्राज्य विभिन्न राष्ट्रों का एक विशाल समूह होता है जिन्हें एक महाशक्ति बलपूर्वक एक साथ रखती है। साम्राज्यवादी मार्ग का अर्थ होता है सभी कूटनीतिक साधनों, दबाव और सशस्त्र सेना के बल पर राज्य-विस्तार।

प्रारम्भ में स्वयं सोवियत राज्य साम्राज्यों के विनाश का साधन सिद्ध हुआ था और उसने साम्राज्यवाद के विरुद्ध किसी भी सरकार की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली अभियान चलाया था। अब जब घटनाओं का रुख बदल गया और साम्राज्य के लिए मार्ग खुल गया, तब स्तालिन का शासन

१६१७ में बन्द साम्राज्यवादी आन्दोलन के सूत्र को फिर से ग्रहण कैसे कर सकता था? वह न तो पुराना राग अलाप सकता था और न पुराना सपना देख सकता था। वह रूसी विस्तार का पुराना रास्ता भी नहीं अपना सकता था।

प्राचीन साम्राज्यवाद का उद्देश्य तो स्पष्ट था—राज्य का विस्तार। उसका अन्तिम लक्ष्य था साम्राज्यवादी प्रासाद की भव्यता, जिसका प्रतिरूप होता था राजा, जार या सम्राट् का महान् व्यक्तित्व। यह तो स्वयंसिद्ध है कि सैनिक विजय से नये क्षेत्रों की प्राप्ति होती है और एक महायुद्ध के बाद महान् विजय का परिणाम विजेता के राज्य का व्यापक विस्तार होता है; विदेशी राज्यों को हड़पना ही विजेता का स्पष्ट और निर्विवाद अधिकार था। किन्तु इस प्रकार की चीज ऐसे रूस में सम्भव नहीं थी, जिसने साम्राज्यवाद के विरोध का सिद्धान्त बना लिया था; जिसने साम्राज्यवादी शोषण के विरुद्ध अपने संघर्ष के लिए संसार-भर में अपने अनुयायी बना लिए थे; जिसने राजनीतिक महासागरों के 'पूँजीवादी समुद्री राक्षसों' के उत्पीड़न से सभी राष्ट्रों को मुक्त करने और उपनिवेशों को स्वतन्त्र करने का दावा किया था; और जिसने विदेशों में और विशेषकर ईरान और चीन में रूस के साम्राज्यीय अधिकारों के परित्याग के अद्वितीय संकेत द्वारा विश्व को नैतिक शिक्षा देने का प्रयत्न किया था।

किन्तु अब द्वितीय महायुद्ध के बाद पूर्व, दक्षिण और पश्चिम की ओर फिर वही अभियान आरम्भ हो गया है, जिससे युग-युग से रूसी विजेता अनुप्रेरित होते रहे हैं। विजय की इस प्रवृत्ति और सभी प्रकार के विस्तारों की इस अबौद्धिक प्रेरणा का पुनर्जन्म युद्ध के आन्दोलनों से हुआ। इसके साथ ही राजनीतिक शक्ति, युद्धवादी दर्शन, सैनिक सफलताओं पर आनन्दोल्लास भावी, अभियानों का व्यापक क्षेत्र, नये प्रदेशों की प्राप्ति और नई शक्ति भी सामने आई।

यह नया विस्तारवाद पुराने रूसी विचारों और तरीकों से तीन बातों में भिन्न था—

(१) इसका क्षेत्र व्यापक था और इसके उद्देश्य पुरानी रूसी

नीति के उद्देश्यों से ऊँचे थे। उसका प्राचीन उद्देश्य सीमित था—कभी तुर्की का एक क्षेत्र, कभी पोलैण्ड का एक टुकड़ा और कभी चीन का एक प्रदेश। मौजूदा लक्ष्य सारी पृथ्वी को घेर लेना है। इस तरह पुराने रूस को खुश करना ज्यादा आसान था और नये रूस की अपेक्षा उसके साथ सन्धि करना भी सरल था।

(२) प्राचीन साम्राज्यों का निर्माण सेनाओं के बल पर होता था; सैनिक शक्ति विजित और अनुयोजित क्षेत्रों में अपनी सेनाएँ तैनात कर देती थी। दूसरी ओर सोवियत साम्राज्य के विधाताओं की योजना लोकप्रिय आन्दोलनों के द्वारा कार्य करने की है, जिसे हम 'पाँचवाँ दस्ता' कहते हैं। कम्युनिस्ट सशस्त्र सेनाओं की जगह सिद्धान्ततः उसी का प्रयोग करते हैं।

(३) प्राचीन रूसी साम्राज्य के विपरीत सोवियत सरकार ने अभी तक अपने पिछलग्गू राष्ट्रों के प्रदेशों को रूस में सम्मिलित नहीं किया। उसने उनकी सार्वभौमता की भावना की रक्षा की है और आर्थिक शोषण के लिए अपने पिछलग्गुओं के उपयोग के किसी प्रकार इरादे का खण्डन किया है।

१९४५ के बाद के पाँच वर्ष देखने में तो मास्को के लिए अत्यन्त सफल रहे हैं, किन्तु साथ-ही-साथ सोवियत साम्राज्य-निर्माण में गम्भीर संकट के द्योतक भी रहे हैं। इस संकट का कारण नये साम्राज्य के गठन और विस्तार में उपर्युक्त तीनों प्रणालियों की त्रुटियाँ रही हैं। साम्राज्यवाद के सोवियत ढंग की विचित्रताएँ उसकी निर्बलता का कारण सिद्ध हुईं।

सोवियत सिद्धान्तों के अनुसार युद्ध के बाद सोवियत सेनाएँ पहले यूगोस्लाविया से हटा ली गईं। यूगोस्लाविया ही यूरोप में नये प्रकार के साम्राज्य-निर्माण के लिए प्रारम्भिक प्रयोग-क्षेत्र बनने वाला था। यूगोस्लाव नेता सत्ताधारी कम्युनिस्ट पार्टी के आदर्श व्यवहार का प्रदर्शन करने वाले थे; समझा जाता था कि वे क्रेमलिन को सर्वोच्च सत्ता के रूप में मान्य करेंगे और यदि यूगोस्लाविया के विशेष हितों का सोवियत यूनियन के हितों के साथ कोई संघर्ष हुआ तो वह रूस के अधीन कर दिया जायगा। यूगोस्लाविया सभी कम्युनिस्ट राष्ट्रों की 'मातृभूमि' के पुनर्निर्माण और सुदृढ़ी-

करण में आर्थिक सहायता करेगा और इसके लिए वह खुशी के साथ कुरबा-नियाँ भी करेगा।

वास्तव में जो-कुछ भी हुआ, वह तो सर्वविदित है। सोवियत सेनाओं के देश छोड़ते ही घातक संघर्ष शुरू हो गया। १९४६ में स्थिति गम्भीर हो गई; १९४७ में फूट इतनी गहरी हो गई कि 'कोमिन्फार्म' का निर्माण करना पड़ा, जिसका यूगोस्लाव नेताओं के अनुसार एकमात्र उद्देश्य टिटो के विरुद्ध 'इण्टरनेशनल' का रोष उत्तेजित करना था। १९४८ में यूगो-स्लाविया सोवियत परिवार से निकाल दिया गया। शीघ्र ही सभी सोवियत आर्थिक और सैनिक मिशनों को उस गद्दार पिछलग्गू का देश छोड़ना पड़ा। सोवियत साम्राज्य को एक महान् देश से हाथ धोना पड़ा और उसके प्रभाव का क्षेत्र, जो पश्चिम में इटली की सीमा तक फैला हुआ था, काफी सिकुड़ गया। यूरोप में सोवियत प्रगति रुक गई, कम-से-कम दक्षिण की ओर।

यूगोस्लाविया की घटना से एक शिक्षा मिली—अन्य पिट्ठुओं का विश्वास और सच्चाई प्राप्त करने के लिए कार्यवाही की जानी चाहिए। इस कार्यवाही का अर्थ था सशस्त्र कब्जे के पुराने तरीकों को फिर से अपनाना। पोलैण्ड प्रथम राष्ट्र था, जिसने सोवियत साम्राज्य के आन्तरिक परिवर्तन के प्रभावों को महसूस किया। वहाँ सोवियत-विरोधी प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से प्रबल जान पड़ती थीं।

१९१७ के पहले पोलैण्ड का अधिकांश भाग प्राचीन साम्राज्य में सम्मिलित था। उस पर एक रूसी गवर्नर जनरल, कई रूसी प्रान्तीय गवर्नरों और रूसी अधिकारियों का शासन था; वहाँ एक रूसी सेना भी तैनात थी। यूगोस्लाविया में टिटो के विद्रोह के बाद सोवियत सरकार ने पोलैण्ड में ऐसी नई कार्यवाहियाँ कीं, जो क्रान्ति के पहले के ढाँचों से बिलकुल मिलती-जुलती थीं।

नवम्बर १९४९ में, सोवियत मार्शल कौन्स्तान्तिन रोकोसोव्स्की (Konstantin Rokossovsky) को पोलैण्ड में नियुक्त किया गया। यद्यपि

वे सोवियत नागरिक और सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने रहे, तथापि वे पोलैण्ड के सुरक्षा-मन्त्री और स्टेट कौंसिल के सदस्य बना दिये गए। स्टेट कौंसिल पोलैण्ड की उच्चतम कार्यकारिणी संस्था है, जिसे कानून बनाने और व्यय-विनियोग निर्धारित करने के व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। उन्हें पोलैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी की (यूनाइटेड वर्कर्स पार्टी) केन्द्रीय समिति में भी रखा गया और वे तत्काल 'पोलिश पोलितब्यूरो' में भी ले लिये गए, यद्यपि शुरू-शुरू में अनधिकृत तौर पर लिये गए थे।

रोकोसोव्स्की की नियुक्ति की घोषणा के साथ-साथ उन सभी पोलिश कम्युनिस्ट नेताओं को सरकार और सेना से निकाल दिया गया, जिन पर सोवियत यूनियन के साथ घनिष्ट सम्बन्ध का विरोधी होने का सन्देह था। सबसे पहले पोलैण्ड के शक्तिशाली 'टिटो' और कम्युनिस्ट पार्टी के महा-मन्त्री लेडीस्ला गोमुल्का (Ladyslaw Gomulka) पर प्रहार हुआ।

नया ढाँचा बिलकुल पुराने शाही ढाँचे के समान था; लेकिन चूँकि स्तालिन सार्वभौम पोलैण्ड के बाह्य स्वरूप को कायम रखना चाहते थे, इसलिए मार्शल रोकोसोव्स्की की उच्चता को अपवाद-स्वरूप और विशुद्ध व्यक्तिगत ढंग के अद्वितीय कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। पोलैण्ड के प्रेसिडेण्ट बीरुत (Bierut) ने सोवियत सरकार से प्रार्थना की कि "सम्भव हो तो' मार्शल को पोलैण्ड की मरजी पर रखा जाय और सोवियत सरकार ने दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को दृष्टि में रखकर इसे स्वीकार कर लिया। वास्तव में 'सम्राट्' स्तालिन को पोलैण्ड पर रूसी सिंहासन के अपने किसी भी पूर्वाधिकारी की अपेक्षा अधिक अधिकार प्राप्त था, फिर भी 'कम्युनिस्ट' स्तालिन को पोलैण्ड पर अपने किसी अधिकार से इन्कार करना ही चाहिए था।

सोवियत-सरकार की विदेशी आर्थिक कार्रवाइयों में भी यही दुविधा सन्निहित है। इस क्षेत्र में एक ओर सोवियत कार्य-प्रणाली और दूसरी ओर बुनियादी कम्युनिस्ट दर्शन और प्रचार के बीच संघर्ष हो जाता है।

राजनीतिक उद्देश्यों से साम्राज्यवाद के सिद्धान्तों और विचारों का जन्म

विश्व-साम्राज्य के १८१५-१९१४ के युग के अन्त में हुआ। इन सिद्धान्तों में से एक का प्रतिपादन लेनिन ने प्रथम विश्वयुद्ध के आरम्भ में अपनी पुस्तक 'इम्पीरियलिज़्म एज, दी हॉइयेस्ट स्टेज आफ कैपिटलिज़्म' में किया है। इस रचना की काफी ख्याति हुई और वह कठोर कम्युनिस्ट विचार-धारा का अंग बन गई। सभी सोवियत यूनिवर्सिटियों और स्कूलों में इसे अभी भी पढ़ाया जाता है। गैर-कम्युनिस्ट रूसियों और विदेशों के सभी कम्युनिस्टों को इसे पढ़ना पड़ता है। सच पूछा जाय तो संयुक्त-राष्ट्र संघ में सोवियत और उसके पिट्ठू प्रतिनिधियों का सारा साम्राज्यवाद-विरोधी हमला, पश्चिम के 'जंगखोरों' के खिलाफ उनकी सारी बौखलाहट इसी के आधार पर होती है।

लेनिन ने सोचा कि दुनिया का बँटवारा अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। ८० वर्षों के 'हड़प और बँटवारे' के बाद अब बँटवारे के लिए कुछ भी बाकी नहीं रह गया है। फिर आगे क्या होगा? क्या पूँजीवाद राष्ट्र अपने साम्राज्यों को बढ़ाए बिना जिन्दा रह सकते हैं? लेनिन का विश्वास था कि बिना विशाल उपनिवेशों के वे टिक नहीं सकते, और पूँजीवाद के हाथ में दूर-दूर तक फैले हुए उपनिवेश न हों तो उसका 'पतन' आरम्भ हो जायगा। लेनिन के विचार से उपनिवेशों, अर्ध-उपनिवेशों और परतन्त्र देशों की आवश्यकता पहले खासकर व्यापार के लिए हुई। अब मुख्यतः 'मातृभूमि' के पूँजी-विनियोग के लिए इनकी खोज हो रही है। बिना उपनिवेशों और परतन्त्र देशों के पूँजीवाद का गला घुट जायगा। अब वह अधिकाधिक आक्रामक और लड़ाकू बनता जा रहा है, क्योंकि उनकी प्राप्ति के लिए बल-प्रयोग ही एकमात्र साधन रह गया है। इसीलिए उसने निकट-भविष्य में युद्धों की शृङ्खला और विश्वव्यापी सामाजिक क्रान्ति की कल्पना की थी।

गत दस वर्षों की घटनाओं ने साम्राज्यवाद की इस कल्पना की असत्यता सिद्ध कर दी है। जिस विश्व का 'विभाजन' किया गया और जिसमें उपनिवेशों और परतन्त्र देशों की प्राप्ति केवल युद्धों (साम्राज्यवादी युद्धों) से ही

हो सकती थी, उसने अभी हाल तक महान् शक्तियों पर अवलम्बित राष्ट्रों का पुनर्जन्म होते देखा है; उपनिवेशों का संसार सिकुड़ गया है और सिकुड़ता जा रहा है। ब्रिटेन ने भारत, बर्मा, लंका और फिलस्तीन को खो दिया, नीदरलैण्ड ने इण्डोनेशिया को, फ्रांस ने सीरिया और लेबनान को, और जापान ने कोरिया, फार्मोसा और मंचूरिया को। इटली कम-से-कम लीबिया और अबीसीनिया को खो रहा है। अमेरिका ने फिलिपाइन्स पर अपना अधिकार छोड़ दिया है। ब्रिटिश अधिराज्यों को, जो पहले उपनिवेश थे, इतनी स्वतन्त्रता मिल चुकी है कि उनकी गणना 'उपनिवेशों' में अथवा शोषित राष्ट्रों में नहीं की जा सकती।

महाशक्तियों को १ करोड़ १५ लाख वर्गमील के उपनिवेशों और ५६ करोड़ १० लाख की आबादी से हाथ धोना पड़ा है। एशिया, जो पहले महाशक्तियों की प्रतिद्वन्द्विता और औपनिवेशिक युद्धों का क्षेत्र बना हुआ था, अपने विदेशी प्रभुओं से पूर्णतया मुक्त हो गया है। १ अरब २० करोड़ की आबादी में से केवल ५ करोड़ ५० लाख जनता अभी भी पश्चिमी शक्तियों के उपनिवेशों और पराधीनता में रहती है। अफ्रीका साम्राज्यवाद का अन्तिम गढ़ रह गया है, किन्तु इसकी आबादी विश्व की कुल जनसंख्या के ५ प्रतिशत से भी कम है।

युद्धोत्तर-काल में मास्को का विदेश-व्यापार-मन्त्रालय आर्थिक साम्राज्य-निर्माण मन्त्रालय बन गया है; युद्ध के बाद से इसका विस्तार काफी बढ़ गया है और इस समय उसके हाथ में सभी प्रकार के विदेशी आर्थिक कारोबार हैं, जब कि साधारण आयात और निर्यात-व्यापार का कोई खास महत्त्व नहीं रह गया है। विदेश जाने की तैयारी करने वाले अपने कुछ कर्मचारियों को सिखाते-पढ़ाते समय अनस्तास मिकोयन (Anastas Mikoyan) ने कहा था, "आप लोग सोवियत उपनिवेश-कर्ता हैं। अर्थशास्त्र ही नीतियों का निर्णय करता है—आप लोग सोवियत व्यापारी बनें, 'सोवियत पूँजी-वादी'। हम आपकी मदद करेंगे।" अनस्तास मिकोयन अभी हाल तक विदेश व्यापार-मन्त्रालय के प्रधान थे। वह स्पष्टवादी हैं और बन्द कमरे के

भीतर प्रायः बिगड़ उठते हैं।

१९४४ के दिनों से, जब कि सोवियत सेनाओं ने दूसरे देशों में घुमना शुरू कर दिया, मिकोयन एजेंसी को नये और कठिन कार्यों का सामना करना पड़ा। व्यापार का पुनर्गठन करना था; यह एक विचित्र ढंग का व्यापार था, क्योंकि रूस को निर्यात तो करना नहीं था और उसे यथार्थ में हर चीज की जरूरत थी। अमेरिका से उधार-प्रथा के आधार पर सामान मिलता रहा, किन्तु एक बरबाद मुल्क की जरूरतों के लिए वह काफी नहीं था। मिकोयन के 'एम० वी० टी०' (Ministerstvo Vneshvei Torgovli) के सामने काम यह था कि किसी भी तरह, सही या गलत तरीके से, विदेशों से सामान प्राप्त किया जाय।

सीधे-सादे नौजवानों के लिए, जो सवाल करते और जिनके मन को शान्त करने की जरूरत होती है, सोवियत यूनियन का उद्धार-कार्य सामने लाकर रख दिया गया। एक महान् उद्धारक विशेष व्यवहार और अधिकार का पात्र होता है। शीघ्र ही जर्मनी पर 'एकाकी' विजय और सुदूरपूर्व में सोवियत की निर्णयात्मक कार्यवाही की प्रशंसा होने लगी। फलस्वरूप जिस देश ने विश्व की स्वतन्त्रता के लिए अपना खून बहाया है, उसमें फिर से जिन्दगी लाने में सहायक कोई भी चीज मान्य हो सकती है।

संयोगवश, सोवियत सेनाओं ने रूमानिया में डॉ० कार्ल अगस्ट क्लोडियस को, जो नाजी शासन का आर्थिक साम्राज्य-निर्माता था, गिरफ्तार कर लिया। वह यूरोप के सभी आथिक मामलों का प्रमुख विशेषज्ञ था। उसने बर्लिन को १९३७ से १९४३ तक विस्तृत नये विश्व की आर्थिक राजधानी बनाने के लिए बड़ी मेहनत की थी। उसने तृतीय राइख (Third Reich) के लिए व्यापारिक समझौते किये। वह अपनी 'पितृभूमि' के लिए सर्वदा विशेष लाभों की आशा रखता था।

जब सोवियत सेनाएँ क्लोडियस को बन्दी बनाकर मास्को ले आईं, उस समय मिकोयन को अपने जर्मन 'प्रतिरूप' के बारे में बहुत-कुछ ज्ञात था। सौभाग्य से क्लोडियस ठीक ऐसे मौके पर पहुँचा जब कि एक नये ढंग

का विदेश-व्यापार आरम्भ होने वाला था, जिसका मिकोयन को भी तब तक पता न था। कई वर्ष पहले, जब कि जर्मनी बहुत बढ़ा-चढ़ा हुआ था, किन्तु पैसा देना नहीं चाहता था अथवा देने में असमर्थ था, क्लोडियस ने पूर्वी यूरोप से तेल, चरबी, गल्ला और चारा प्राप्त किया था। अब सोवियत यूनियन को, जो वैसा ही बढ़ा-चढ़ा हुआ था, किन्तु पैसा चुकता करने में वैसे ही असमर्थ भी था, इन चीजों की आवश्यकता थी। क्लोडियस ने अपनी बुद्धि लगा दी········।

मास्को का सिद्धान्त था कि सोवियत-अधिकृत प्रदेशों में जर्मनी या जर्मनों की सम्पत्ति और पूँजी अपने-आप सोवियत यूनियन की हो जायगी। मंचूरिया और कोरिया में जापानी सम्पत्ति पर भी यही सिद्धान्त लागू था। याल्टा-कान्फ्रेन्स-सम्बन्धी अपनी पुस्तक में एडवर्ड स्टेटिनियस (Edward Stettinius) ने जर्मनी की औद्योगिक उत्पादक-शक्ति को ८० प्रतिशत कम कर देने की स्तालिन की इच्छा का जिक्र किया है। इसका अर्थ है जर्मन-उद्योग का पूर्ण विघटन। वास्तव में औद्योगिक इकाइयों को छिन्न-भिन्न करके उनकी सामग्री को पूर्व में भेजना ही 'हरजाना' लेने का खास रूसी तरीका था—कम-से-कम प्रारम्भिक अवस्था में। सोवियत अर्थशास्त्री यूजिनी वर्गा (Eugene Varga) ने सबसे पहले खुलेआम इस तरीके का प्रस्ताव रखा, जो हरजाना प्राप्त करने के पुराने तरीकों से कहीं ज्यादा अच्छा जान पड़ा।

परिणाम निराशाजनक रहा, औद्योगिक सामग्री से रूस की अर्थ-व्यवस्था को लाभ बहुत कम हुआ, किन्तु विघटित देश की हानि अपार हुई। अण्डा देने वाली मुर्गी को क्यों मारा जाय? क्या सोवियत यूनियन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विदेशों में बरबादी को रोकना और उत्पादन को संगठित करना अधिक बुद्धिमानी नहीं होती? विघटन के लिए निश्चित दुकानों और कारखानों का कार्य जारी रखा जा सकता था और उसका स्वामित्व एक विदेशी शक्ति के हाथ में होता। स्थानीय जनता की राष्ट्रीय भावना को उत्तेजित होने से बचाने के लिए उसे भी छिपाया जा सकता था। एक 'मिली-जुली कम्पनी' विदेशों में सोवियत आर्थिक कार्यवाहियों का सार्वभौमिक रूप बन

गई। यह कम्पनी एक औद्योगिक कारपोरेशन के रूप में थी, जिसमें ५० प्रतिशत सोवियत और ५० प्रतिशत व्यथित पिछलग्गू राष्ट्र की सरकार का हिस्सा होता (कभी-कभी ५१ और ४९ प्रतिशत)। इस मोहक 'मिली-जुली' कम्पनी का प्रयोग १९२४ और १९३५ के बीच मंचूरिया में चीनी ईस्टर्न रेलवे के मामले में किया गया, सोवियत अधिकारियों और चीनियों के बीच एक न्याय-संगत समझौते के रूप में इसे प्रस्तावित किया गया था। दोनों पार्टियों को समान अधिकार प्राप्त थे, केवल एक मामूली अन्तर था; रेलवे का जनरल मैनेजर एक सोवियत नागरिक होने वाला था। समानता में यह मामूली अन्तर ही चीनियों को सारे प्रभाव से वंचित करने के लिए पर्याप्त था।

मास्को ने 'मंचूरियन नमूने' का प्रयोग सार्वभौमिक रूप से करने का निर्णय किया। पूर्वी जर्मनी-सहित समस्त पूर्वी यूरोप में 'मिश्रित' कम्पनियाँ स्थापित की गईं। हंगरी ने अपने अल्मूनिया (Bauxite), तेल, लोहा और फौलाद, रासायनिक पदार्थ, बिजली, रेलवे, उड्डयन सभी में सोवियत यूनियन को हिस्सा दिया। रूमानिया में सात 'सोवरोम्स' (सोवियत रूमानियन कम्पनीज) वायु, जलसेना, नदी, सड़क-यातायात, बैंकिंग, लकड़ी और तेल-उद्योग पर नियन्त्रण रखती हैं। आस्ट्रिया का आधा से अधिक तेल-उत्पादन सोवियत रूस के हाथ में है और भावी सन्धि की शर्तों के अनुसार, जिसके लिए पहले ही समझौता हो चुका है, उसी के हाथ में रहेगा। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सोवियत राज्य आस्ट्रिया के अधिकांश भागों में तेल पाने का अधिकारी बना रहेगा। पोलैण्ड में, मोस्का में तैयार की गई योजनाओं के अनुसार इस्पात, रसायन और सीमेण्ट के नये कारखाने बनाये जा रहे हैं। स्लोवाकिया में मलैकी (Malacky) से लेकर आस्ट्रिया की सीमा तक के क्षेत्र में १९५० में 'नये तेल-क्षेत्रों' का पता लगाया गया। सोवियत प्रतिनिधियों ने तुरन्त एलान कर दिया कि नये तेल-क्षेत्र वास्तव में सोवियत-नियन्त्रित आस्ट्रियन तेल-क्षेत्र की शाखाएँ हैं, इसलिए सोवियत यूनियन उनसे लाभ उठाएगी। जेकोस्लोवाकिया की यूरेनियम-खान पर सोवियत

एजेंसियों ने १६४५ में ही कब्ज़ा कर लिया।

सुदूर-पूर्व में भी इसी प्रकार की घटनाएँ घट रही हैं, किन्तु वस्तु-स्थिति को ज़रा अच्छे ढंग से छिपाया जा रहा है। सरकारी तौर पर घोषणा की गई है कि सिनक्यांग प्रान्त में तेल और अ-लौह धातु-उद्योगों के संचालन के लिए दो मिली-जुली सोवियत चीनी कम्पनियाँ खोली गई हैं। यद्यपि सही आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि उत्तरी कोरिया के उद्योग का संचालन इसी आधार पर किया गया और मिश्रित कम्पनियों के सिद्धान्त का उपयोग मंचूरिया में भी किया जायगा।

आर्थिक शोषण की यह पद्धति सोवियत यूनियन को उसके पिछलग्गुओं द्वारा दी जाने वाली महान् 'भेंट' की द्योतक है। किसी ओर से आँकड़े प्रकाशित नहीं किये गए हैं और इन्हें बड़ी सतर्कता से गुप्त रखा जा रहा है, किन्तु प्रति सप्ताह पश्चिम और पूर्व के पिछलग्गू राष्ट्रों का 'अतिरिक्त मूल्य' काफी मात्रा में जहाजों और ट्रेनों में भर-भरकर सोवियत भूमि को भेजा जाता है। यह रकम वर्ष में निश्चय ही अरबों डालर तक पहुँच जाती है।

इसके अलावा सोवियत सरकार ने अनेक गुप्त इकरारनामों के जरिये मिश्रित कम्पनियों के लिए अधिकार प्राप्त कर लिये हैं, जिससे वे कर और चुंगी से भी मुक्त हो जाती हैं और जिससे उसे प्रायः अपना फैक्टरी-गार्ड रखने का भी अधिकार मिल जाता है।

सोवियत यूनियन रात-भर में ही विदेशों में भारी पूँजी की स्वामी बन गई है और यह रूसी इतिहास की एक अद्भुत स्थिति है।

पहले एक सदी तक और किसी हद तक क्रान्ति के बाद भी रूस विदेशी पूँजी-विनियोग का क्षेत्र बना हुआ था। बहुत दिन नहीं हुए कि लेनिन ने रूस में विदेशी पूँजीपतियों को आमंत्रित किया था और वह विदेशी उद्योग-पतियों द्वारा रूसी मजदूरों का शोषण स्वीकार करने और रूस की औद्योगिक क्षमता को बढ़ाने की आशा में उन उद्योगपतियों को लाभ में हिस्सा प्रदान करने के लिए तैयार था। स्तालिन लेनिन की इस नीति से पूर्णतया सहमत

था। उस समय किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि रूस भी कभी अन्य देशों में अपनी पूँजी लगाने योग्य होगा। वास्तव में १६१७–१८ में लेनिन की सरकार ने विदेशों में सभी रूसी अधिकारों और विनियोगों का परित्याग कर दिया था। यह सत्य है कि ये पूँजी-विनियोग यत्र-तत्र निकट और सुदूर-पूर्व तक ही सीमित थे। ईरान और चीन में रूसी बैंक, तेल की सुविधाएँ और हरजाने या तो सम्बन्धित देशों को लौटा दिये गए या रद्द कर दिये गए। लेनिन और उसकी पार्टी ने सोवियत राज्य के पक्ष में इन सम्पत्तियों का राष्ट्रीयकरण करने और 'प्रथम सोशलिस्ट देश' के पक्ष में विदेशी पूँजी के रूप में उनका संचालन करने का प्रयत्न नहीं किया। बाद में चीनी ईस्टर्न रेलवे इस नियम के प्रतिकूल प्रथम दृष्टान्त बनी और बहुत समय तक एक महत्त्वपूर्ण अपवाद बनी रही।

यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था, जिसकी व्यापकता को मास्को के प्रमुख लोगों ने महसूस किया। इस परिवर्तन का उन्हें कितना स्पष्ट ज्ञान था, उसका इसी बात से पता चल जाता है कि पूँजी-विनियोग-कर्त्ता के रूप में अपनी कार्यवाही को रूस ने अत्यन्त गुप्त रखा। सोवियत पत्रों ने इसका कभी जिक्र नहीं किया; एम० वी० टी०(M. V. T.) ने अपनी पत्रिका 'फारेन ट्रेड' (Foreign Trade) में इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, जब कि उसके सम्पादकों और लेखकों को अनिवार्य रूप से लेनिन के 'साम्राज्यवाद के सिद्धान्त' का अध्ययन करना पड़ा होगा। यदि वे इस सिद्धान्त को भूल गए होते कि विदेशों में उत्पादक शक्तियों पर अधिकार का अर्थ होता है विदेशी मजदूरों का शोषण और यह 'आधुनिक साम्राज्यवाद का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लक्ष्य' है, तो वे परीक्षा में कभी उत्तीर्ण न हुए होते।

विदेशी सामग्री-विनियोगों की प्राप्ति के साथ-साथ सोवियत यूनियन को औपनिवेशिक प्रशासकों के एक नये वर्ग का निर्माण-कार्य बड़ी तेजी से करना था। इन्हें चुन लिया गया और पार्टी की केन्द्रीय समिति के तत्त्वावधान में उन्हें शीघ्र तैयार किया गया। इन प्रशासकों की संख्या गुप्त रखी गई है, किन्तु यह बहुत बड़ी है और ब्रिटेन के चरमोत्कर्ष के समय भी

जितने ब्रिटिश औपनिवेशिक कर्मचारी थे, उनसे भी कहीं अधिक उनकी संख्या है। केवल लघु अल्बानिया को तीन हजार से अधिक रूसी सलाहकारों और अधिकारियों को बुलाकर रखना पड़ा था। हांगकांग के स्वतन्त्र सूत्रों के अनुमान के अनुसार मई, १९५० में चीन में सोवियत सलाहकारों की संख्या २३०००[1] थी। केवल शंघाई के फैशनेबुल क्षेत्र हुंगजाओ[2] (Hungjao) में दो हजार सलाहकार अपने परिवारों के साथ बसे हुए थे। समस्त पूर्वी यूरोप, जर्मनी और सुदूर-पूर्व में साधारण कर्मचारियों का संगठन करने, नवनिर्मित सेनाओं, पुलिस-फोर्स और खुफिया पुलिस की जांच करने सोवियत-परिधि में योजना-कमीशन वनाने, सामूहिक खेती की शिक्षा देने, राष्ट्रीया-कृत विदेश-व्यापार का निर्देशन करने, सोवियत सरकार के लिए अगणित मिश्रित कम्पनियों का संचालन करने, अधिकार के कार्य में सहायता करने तथा दूसरे अनेक कार्यों को पूरा करने के लिए एक लाख से अधिक सलाहकारों की आवश्यकता है।

अपने ही देश के अथवा जिस देश में रखे गए हैं, उसके सामाजिक स्तरों की तुलना में रूसी सलाहकार एक तरह के अभिजात-तन्त्र (Aristocracy) बन गए हैं। विदेश में रहना ही एक विशेषाधिकार है। यद्यपि सर्वव्यापी गुप्त एम० जी० बी० (M. G. B.) के एजेण्टों की उन पर कड़ी निगरानी रहती है और वे स्थानीय बाशिन्दों से मिल-जुल नही सकते, फिर भी जिस देश में वे रहते हैं, वही उनके लिए 'पश्चिम' है और वहां वे 'सोवियत उपनिवेशकर्ता' के रूप में जीवन का सुख लूटते हैं। उनके वेतन वहाँ के निवासी साथियों के वेतन से और प्रायः एक मन्त्री के वेतन से भी अधिक होते हैं। उदाहरण के तौर पर यूगोस्लावों ने रूसी मैनेजरों और इंजीनियरों को दी जाने वाली तनख्वाहों का पर्दाफाश किया है। बेलग्रेड के निकट एक पुल के निर्माण-कार्य का अधिकारी रूसी मैनेजर प्रतिमास ५० हजार दीनार पाता था; एक रूसी चीफ इंजीनियर ४५ हजार दीनार,

१. 'न्यूयार्क हेरल्ड ट्रिब्यून', ७ मई, १९५०

२. 'चाइनीज़ न्यूज़ सर्विस', ८ सितम्बर १९५०

उसका सहायक २६ हजार; सप्लाई का एक डायरेक्टर २५ हजार, एक मुख्य कारीगर २२ हजार और एक विभागीय प्रधान २२ हजार दीनार पाता था (एक यूगोस्लाव मन्त्री का मासिक वेतन १२ हजार दीनार था।) इसके अतिरिक्त रूसी अधिकारियों को रेडियो, टेलीफोन, गरमी, रोशनी, कार और नौकरों से सुसज्जित बंगले या 'फ्लैट' दिये जाते थे और प्रतिवर्ष एक महीने का वेतन बोनस दिया जाता था। १९४८ में कर्नल या जनरल के पद के सोवियत सलाहकारों को यूगोस्लाव सरकार से ३१ हजार से ४० हजार दीनार तक वेतन मिलता था, जबकि यूगोस्लाव सेना के जनरल को ९००० से ११००० दीनार तक वेतन मिलता था। बहुत कम मामलों में सोवियत खजाने से वेतन दिया जाता है; आम तौर पर 'बुलाने वाले' देश या मिश्रित कम्पनी को, जिसमें वे रखे जाते हैं, बिल चुकता करना पड़ता है। इसीलिए बड़ी-बड़ी तनख्वाहें रूस के लिए भार नहीं हैं।

युद्ध के समय से औद्योगिक कारपोरेशन सोवियत आर्थिक-विस्तार के अत्यन्त आकर्षक स्वरूप बने हुए हैं, किन्तु साथ-ही-साथ दूसरे तरीकों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है।

(१) खाद्य, पशु, रोलिंग स्टाक और कच्चे माल के अतिरिक्त 'युद्ध की लूट' को संग्रहीत करने का भी विचार और रिवाज था, जिसे कारखानों और जहाजों के उपयोग के लिए भेजा जाता था। केवल शत्रु-देशों में ही 'युद्ध में लूट' का सामान नहीं लिया जाता था, बल्कि पोलैण्ड और यूगोस्लाविया में भी लिया गया। सारी जर्मन सम्पत्ति रूस के हाथों में चली गई, न कि उसके लघु-मित्रों के हाथ में। यूरोप के सभी अधिकृत देशों से और १९४५ के पतझड़-काल में कोरिया और मंचूरिया से युद्ध की लूट का सामान ले जाने के लिए 'एम० बी० टी०' ने सेना की सहायता से मालगाड़ियों का तांता लगा दिया था। लूट के माल के कुल मूल्य के सम्बन्ध में न तो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं और न प्राक्कलन। अमेरिकन कमीशन के अनुमान के अनुसार मंचूरिया की लूट के सामान का मूल्य ८०० करोड़ डालर से अधिक था।

(२) अधिकार करने वाली सेनाओं को अधिकृत देश के खर्च पर जनता के मकानों में रखा जाता है—अधिकार का यह छठा वर्ष चल रहा है।

(३) १९४८ में सोवियत सरकार द्वारा हरजाने में कमी की घोषणा के बाद चार राष्ट्रों से (जर्मनी को छोड़कर) वसूल किया जाने वाला हरजाना कुल ६८ करोड़ ५० लाख डालर था। यह रकम सामान के रूप में किश्त में अदा होने वाली है। जर्मनी से प्राप्त होने वाले हरजाने की कुल रकम ६ अरब ८२ करोड़ ९० लाख डालर है। अधिकांश क्षति-पूर्ति-सन्धियों में १९३८ के मूल्य के आधार पर हरजाना कूतने की व्यवस्था की गई है। इस बीच कीमत प्रायः दूनी हो गई है, जिसका मतलब यह है कि हरजाना-कर्ज के हिसाब में जो माल मिलता है, उसे असली कीमत पर नहीं जमा किया जाता, बल्कि लड़ाई के पहले की कीमत पर जमा किया जाता है। उतने ही माल की खरीद के लिए आज अक्सर दूनी कीमत देने की जरूरत है। मिसाल के तौर पर रूमानिया के मामले में यह अन्दाज लगाया गया था कि सितम्बर १९४६ तक उस देश ने, जिसे ३० करोड़ डालर हरजाना देना है, पहले ही प्रत्यर्पण के लिए १७ करोड़ ४० लाख डालर, जब्ती के लिए ४३ करोड़ डालर, सोवियत सेनाओं के खर्च के लिए ३० करोड़ डालर और हरजाना-बिल के लिए किश्तों में १ करोड़ ५ लाख डालर चुकता किया है। भूतपूर्व रूमानियन प्रधान मन्त्री जनरल निकोलस राडेस्कू ने कहा था कि जुलाई, १९४८ तक रूमानिया ने हरजाने में १ अरब ७८ करोड़ ५० लाख डालर चुकता किया।

१९४७[1] के लिए सोवियत 'राजनीतिक आयात' का मूल्य, इस देश के अनुसार, धर्मशास्त्रियों द्वारा १ अरब २० करोड़ डालर आँका गया है। जर्मन अर्थशास्त्री, शायद अतिशयोक्ति हो, और भी कहीं ऊँचे आँकड़े पर पहुँचते हैं। ब्रेमेन के सेनेटर हार्म्सेन (Senator Harmssen) ने १९४८ में अनु-

1. Alexander Gerschenkron, "Russia's Trade in the post-war years." Annals of the American Academy of Political and Social Science (May, 1949).

मान लगाया था कि युद्ध के बाद तीन वर्षों में सोवियत-यूनियन का कुल जर्मन भुगतान १० अरब डालर या प्रतिवर्ष तीन अरब डालर से अधिक था।

(४) रूस और उसके पिछलग्गुओं के बीच नये व्यापारिक व्यवहार और समझौते आम तौर पर स्थिर मुद्रा के रूप में अमेरिकन डालर के आधार पर हुए हैं। स्फीत मुद्राओं को डालर में परिवर्तित करने की प्रक्रिया ने हाथ की सफाई के लिए काफ़ी मौका दिया। हंगरी में डालर का मूल्य कभी ११'६० फिलर और कभी २५.०० फिलर था और इस रक़म पर अवलम्बित रहना अधिक लाभदायक था।

(५) 'एम० वी० टी०' कभी-कभी अपने पिछलग्गू देशों से कम मूल्य पर सामान खरीदता था और अधिक मुनाफे पर उसे किसी दूसरे देश को बेच देता था। इसी आधार पर मास्को ने फिनलैण्ड को जर्मन खाद और स्वीडन को पोलिश कोयला बेचा था। रूमानिया का तेल अन्य पिछलग्गुओं को मास्को में एम० वी० टी० के साथ हुए समझौते के आधार पर दिया गया। इस तरह के तिजारती कारोबार की सबसे जबरदस्त मिसाल बलगेरियन जस्ते का जेकोस्लोवाकिया को बेचा जाना है। बलगेरिया ने खुद बिक्री के लिए बातचीत करने की कोशिश की और १४४ डालर प्रति टन के हिसाब से भाव की सूची दी थी। मास्को ने हस्तक्षेप किया और बलगेरिया से कम मूल्य पर जस्ता खरीदकर उसे चुपके-चुपके बेच दिया।

(६) नये-नये व्यापारिक समझौते किये गए। उनकी वास्तविकता पर प्रकाश डालने के लिए कुछ विवरण भी उपलब्ध हैं। जो मूल्य तय किये गए थे, वे प्रायः सोवियत यूनियन के अनुकूल और पिछलग्गुओं के प्रतिकूल थे। जैसे, पोलैण्ड रूस को कोयला बेचता था और उससे रुई खरीदता था। इन व्यवहारों में विश्व-बाजार में प्रचलित मूल्य से कोयले का भाव कम और रुई का भाव ऊँचा था। १९४८ में, जब कोयले का विश्व-मूल्य १४ से २० डालर प्रति टन था, पोलैण्ड ने सोवियत यूनियन को १०.२० डालर प्रति टन के हिसाब से ६ लाख टन कोयला बेचा और इस प्रकार इस एक ही लेन-देन में सोवियत यूनियन को लगभग १ करोड़ डालर का फ़ायदा हुआ। मास्को

ने बलगेरिया के गुलाब-तेल को १ हजार प्रतिशत लाभ पर बेचा। रूमानिया का वायुयान-तेल ७ सेण्ट प्रति गैलन के हिसाब से रूस को दिया गया। मामूली सोवियत 'जिस' ट्रकों के लिए रूमानिया ने २६०० डालर प्रति ट्रक के हिसाब से दिया। मंचूरिया और चीन से सोयाबीन, सूअर के बाल, टिन और 'टंग्स्टेन' (Tungsten) से भरी ट्रेन-की-ट्रेन रूस को भेजी जा रही थीं, जब कि पेकिंग और तीन्तसीन (Tientsin) में कुछ सोवियत मोटरें और शराब तथा 'चाकलेट' के मामूली जहाज दिखाई पड़ते थे।

(७) सोवियत ऋण पर ब्याज की दर सरकारों के बीच चलने वाली दर से प्रायः ज्यादा होती थी। जैसे, जेकोस्लोवाकिया से ऋण पर ३½ प्रतिशत ब्याज वसूल किया जाता था, जबकि एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक की दर २½ प्रतिशत थी।

(८) इस इतिहास के नवीनतम अध्याय में आर्थिक दबाव की नवीं रीति गत तीन दशकों से 'कोमिण्टर्न' की सहायता के लिए सोवियत-प्रार्थना में प्रकट है। मास्को ने बलगेरियन कम्युनिस्ट पार्टी की आर्थिक सहायता के लिए तथा रूस-स्थित उसके नेताओं की सहायता के लिए बलगेरिया से एक करोड़ डालर की माँग की है। अपना लक्ष्य तथा राज्य-सत्ता प्राप्त करने के बाद बलगेरियन कम्युनिस्ट पार्टी अपना ऋण चुकता कर देगी। यदि जर्मनी-सहित यूरोप के दूसरे पिछलग्गू राष्ट्र इसी आधार पर कर्ज दें तो रूस के प्रति उनके कोमिण्टर्न-ऋण की कुल रकम बहुत बड़ी हो सकती है। इसके अलावा सुदूर-पूर्व के नये पिछलग्गुओं के सामने भी ऐसे ही बिल पेश किये जायँगे। क्षेत्र बढ़ते ही जा रहे हैं······।

युद्ध के बाद से रूस के पुनर्निर्माण में काफी सुधार हुआ है। जब सोवियत सरकार यह दावा करती है कि रूस करीब-करीब अपने युद्ध-पूर्व के स्तर तक पहुँच चुका है, तो यह उसकी केवल कोरी डींग नहीं है। रूस में 'राजनीतिक' आयातों का कुल मूल्य सम्भवतः २० और ३० अरब (बिलियन) डालर के बीच पहुँच चुका है।

युद्धोत्तर विदेश-व्यापार की कुछ कुटिल प्रणालियों का—जैसे, बलपूर्वक

युद्ध की लूट को हड़पना—शीघ्र ही परित्याग करना होगा। हरजाने की अदायगी भी खत्म हो जायगी। रह क्या जायगा? (१) सोवियत-परिधि के अन्दर उसके न्यस्त स्वार्थ—एक बहुत बड़ी पूँजी, जिसके मूल्य का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। (२) व्यापारिक केन्द्र के रूप में मास्को का पार्ट—अपने पिछलग्गुओं के बीच एक दलाल के रूप में। (३) अपने उत्पादन का मूल्य बढ़ाने और खरीद का मूल्य घटाने के उद्देश्य से अपने पिछलग्गुओं पर राजनीतिक दबाव।

यदि साम्राज्यवाद की परिभाषा वास्तव में वही है, जो लेनिन ने की थी; यदि उसके मुख्य गुण हैं विदेशों में स्वार्थ, पूँजी-विनियोग, व्यापक पैमाने पर मुनाफाखोरी और अपने आर्थिक शोषण के लिए विदेशी राष्ट्रों का राजनीतिक नियन्त्रण, तो अपने गुट के राष्ट्रों के साथ सोवियत-सम्बन्ध का नवीनतम ढंग इसी परिभाषा के अन्तर्गत आ जाता है। उसके सिद्धान्त के निकलने के समय से गत ४० वर्षों में अन्य शक्तियों के बीच विश्व-विभाजन की प्रक्रिया बिलकुल विपरीत हुई है। जब कि पश्चिमी साम्राज्य-वाद ने अपने तीन-चौथाई से भी अधिक प्रदेशों को छोड़ दिया है, लेनिन के अर्थ में, सोवियत राज्य अब बढ़ते हुए साम्राज्य का मुख्य स्तम्भ बनने के लिए काफी विशाल और व्यापक बन गया है।

: २ :

शक्ति और सम्मान

मास्को ने एक नहीं, अनेक बार और अपने अधिकृत सिद्धान्त के विपरीत यह सिद्ध कर दिया है कि कतिपय अवस्थाओं में और एक सीमित अवधि तक शक्ति इतिहास का मुख्य साधन बन जाती है, जब कि आर्थिक चमत्कार उसी का उत्पादन और व्यतिक्रम है। प्रसिद्ध मार्क्सवादी फार्मूला उलट गया है; शक्ति 'नींव' का काम करती है और अर्थ 'विकारल ढांचे' का।

(सोवियत राज्य की बुनियाद ही शक्ति पर आधारित है।) सामाजिक परिवर्तनों के लिए नृशंस शक्ति का उपयोग किया गया और आधे यूरोप तथा एशिया के 'समाजीकरण' में शक्ति ने काम किया। मार्क्स ने एक बार कहा था कि नये समाज के जन्म के समय सत्ता 'धाय' का काम करती है। मास्को ने साबित कर दिया है कि पूर्व में शक्ति का प्रहार सामाजिक जीवन की इस प्रारम्भिक अवस्था से कहीं आगे जाता है और वह स्वयं गम्भीर महत्त्व का एक साधन है। हमारे युग का सारा इतिहास इसी प्रकार के नीचे घूम रहा है।

इस सम्बन्ध में इस युग में एक विचित्र उथल-पुथल मच गई है। जब कि हम यह तर्क पेश करते हैं कि बलकान या चीन की घोर गरीबी स्तालिन की सफलताओं की मूल स्रोत है, तब स्तालिन ने खुद अपने

पिछलग्गू देशों की सामाजिक दशाओं की परवाह नहीं की है। नये शासनों के अन्तर्गत काफी समय तक उद्योगों में अराजकता फैली रही तथा व्यापार अस्त-व्यस्त रहा। १९४६-४७ में दक्षिण-पूर्व यूरोप में गम्भीर अकाल पड़ा और १९५० में चीन की हालत और भी खराब रही। पिछलग्गू देशों में वास्तविक मजदूरी न तो बढ़ी और न बढ़ सकती है, क्योंकि 'जंगखोरों' के खिलाफ़ तैयारी में उद्योगों का सैनिकीकरण कर दिया गया है। फिर भी, स्तालिन को विश्वास था कि 'जन-लोकतन्त्रों' (People's democracies) में मेरे शक्ति-यन्त्र का प्रभुत्व रहते पिछलग्गू शासनों के लिए खतरा नहीं उत्पन्न हो सकता। उसे इस बात में भी कभी सन्देह नहीं हुआ कि मार्क्स के सिद्धान्तों के विपरीत, उसके पिछड़े हुए राज्य की अत्यन्त पिछड़ी हुई जनता भी—जैसे उत्तरी कोरियाई और सिक्यांग के निवासी—'समाज-वाद के लिए परिपक्व' नहीं है, पुलिस और सेना इस सामाजिक समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त है; उसके लिए राजनीतिक शक्ति ही सामाजिक प्रणालियों की स्रष्टा है, और कुछ नहीं।

निर्बलता या विशुद्ध सैद्धान्तिक प्रभाव से घृणा करने वाला ("पोप के रोम के पास कितनी सेना है?") और शत्रु की शक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने वाला—जैसे १९३९-४० में हिटलर के प्रति—स्तालिन से बढ़कर इतिहास में कोई राजनीतिक नेता नहीं हुआ।

शक्ति का मनोवैज्ञानिक पहलू महत्त्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिक चमत्कार के रूप में राजनीतिक शक्ति और अधिक शक्ति का सृजन करती है, अपनी क्रियाशीलता से और भी एक सीमा तक वह बढ़ती और अपने प्रभाव को बढ़ाती है—एक प्रकार की शाश्वत गति कायम रहती है। किसी सरकार का, चाहे जो भी स्वरूप, दर्शन या लक्ष्य हो, जब एक बार वह ऊँचाई पर चढ़ जाती है तो कुछ समय तक वह अपनी शक्ति-वृद्धि के बल पर ऊँचाई पर ही रहती है।

रूस की वर्तमान राजनीतिक प्रणाली को मनोवैज्ञानिक ढंग से कायम किया जा रहा है। सोवियत-कानून और व्यवस्था के मूल में एक विशाल

और अजेय राजसत्ता के प्रति सम्मान काम कर रहा है। मुट्ठी-भर लोगों में ही कम्युनिस्ट सिद्धान्त और विश्वास काम करता है और विद्वेष (Cynicism) मन की साधारण स्थिति में नहीं होता। अधिकांश लोगों के लिए सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली लोहे और फौलाद की बनी होती है; वह अत्यन्त कठोर और मजबूत होती है; उससे लड़ने से कोई लाभ नहीं। राजसत्ता की अवधि-भर लोगों को अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बनाना चाहिए। सचमुच थोड़े-से ही लोग क़ैद किये जा सकते हैं, दूसरों को शिक्षा देने की ग़रज़ से कुछ लोगों को सजाएँ दी जा सकती हैं, बाकी लोग अपने-आप झुक जायँगे और बिना विरोध या प्रतिरोध के वर्षों तक अभाव और कष्ट सहते रहेंगे।

स्तालिन को इसी सामूहिक भावना से अपना उच्च पद प्राप्त है। 'अपनी अद्वितीय शक्ति' के कारण उनका सम्मान होता है। यह सम्मान कभी भी एक प्रिय व्यक्तित्व के प्रति प्रेम के रूप में नहीं रहा है। यहाँ तक कि उनके पार्टी के सदस्य तथा उनके निकटवर्ती लोग भी उनके व्यक्तित्व के प्रति उतने आकृष्ट नहीं हैं, जितने लेनिन और बुखारिन के प्रति थे। स्तालिन कदाचित् ही जनता में प्रकट होते हैं, उनका व्यक्तिगत जीवन बिलकुल गुप्त रहता है। जनता उन्हें जानती तक नहीं, उनका व्यक्तिगत सच्चा मित्र कोई भी नहीं है। किन्तु उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है और यह विशुद्ध शक्ति की श्रद्धा है।

कई महीने पहले रूस के एक भूतपूर्व कम्युनिस्ट प्रोफेसर बेक बुलात (Bek Bulat) से मेरी मुलाकात हुई थी। वह अब जर्मनी में हैं और रूस लौटना नहीं चाहते। उन्होंने १९३० के आरम्भ में मास्को के एक कम्युनिस्ट स्कूल में अपने छात्र-जीवन के बारे में, पार्टी के मार्ग से हटकर 'दक्षिण-पन्थी' कम्युनिज्म की ओर जाने और फलस्वरूप दण्डित होने के बारे में अपना सारा किस्सा सुनाया। अपने पतन के पूर्व नवयुवक छात्र के हृदय में अपने 'प्रबल नेता' के प्रति, जिसे उसने देखा तक नहीं था, बड़ी ही सराहना की भावना थी। उसने कहा, "मैंने उनके लिए कुछ भी किया होता।

यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि मैंने उनके लिए सहर्ष प्राणोत्सर्ग भी कर दिया होता।" जब कभी स्तालिन सार्वजनिक जुलूसों में प्रकट होते हैं, (उदाहरणार्थ—अपने साथियों की शव-यात्रा में) तो उनकी रक्षा के लिए स्वामि-भक्त 'गार्डों का एक दस्ता' तैनात रहता है; उनका जीवन उसी स्वामि-भक्ति और वफादारी पर निर्भर है। चेक बुलात भी इन्हीं नौजवानों में था। "जब स्तालिन खड़े हुए और मेरी बगल से गुजरे तो मुझमें भयङ्कर उत्तेजना पैदा हुई। वह एक शब्द भी नहीं बोले, किन्तु उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण था कि हम सभी लोग भौंचक्का रह गए।" इस राजनीतिक भावना के बारे में मुझे ताल्स्ताय की अतुलनीय व्याख्या का स्मरण हो आया। 'युद्ध और शान्ति' में नौजवान लेफ्टिनेण्ट निकोलई रोस्तोव पहले-पहल एक फौजी परेड के समय जार के आमने-सामने आता है। "निकोलई ने *महसूस किया कि उस शख्स का हुक्म मिलते ही वह किसी भी संकट के* लिए, अपराध या मृत्यु के लिए अथवा बड़ी-से-बड़ी वीरता के लिए भी अपने को झोंक देगा और इसीलिए उस हुक्म के साकार रूप में उस व्यक्ति को देखते ही वह पुलकित हो काँपने लगा...। यदि रोस्तोव सम्राट् के लिए उस स्थल पर ही मर गया होता तो वह कितना प्रसन्न हुआ होता।"

शासित का भयपूर्ण सम्मान शासक की सत्ता का परिणाम होता है। प्रचण्ड शक्ति से प्रचण्ड सम्मान का आविर्भाव होता है। सोवियत जनता में इस प्रकार का भय अथवा भय द्वारा श्रद्धा करने में वर्षों लग गए। सुव्यवस्थित रूप से जनता में यह विश्वास भरा गया कि विश्व का कोई भी मनुष्य, रूस की कोई पार्टी, या विदेशी राष्ट्र या राष्ट्रों का समूह स्तालिन या उनकी यूनियन पर कभी विजय नहीं प्राप्त कर सकता। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए प्रचार के सारे साधन जुटा दिये गए; तरह-तरह के प्रमाण प्रस्तुत किये गए—स्टेप्स में कहीं एक विद्रोही गाँव के दुर्भाग्य से लेकर एडल्फ हिटलर की आत्म-हत्या तक; मृत जार से लेकर कम्युनिज्म के दुश्मन फाँसी पर लटकाये गए सोशलिस्टों तक; ट्राट्स्की से लेकर बुखारिन तक, तीस वर्ष पूर्व की घेरेबन्दी की विफलता से लेकर अपने समय में बलकान तथा चीन में

अमेरिकी नीति की विफलता तक के दृष्टान्त पेश किये गए।

अजेयता ! सोवियत सेना ने किस प्रकार अकेले ही जर्मनी को परास्त कर दिया, जापान पर भयङ्कर प्रहार किया, यूरोप और आधे पूर्व का उद्धार किया; इन विचित्र कहानियों को पढ़कर अमेरिका के लोग आम तौर पर इन्हें 'शिकारी की कहानियाँ' और कोरी डींग समझते हैं। इतना ही नहीं, इन कहानियों का राजनीतिक ढाँचे में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि सोवियत-प्रणाली की स्थिरता या अन्त इसी भावना पर, 'अजेयता' की इसी कल्पित कहानी पर, निर्भर रहेगी।

: ३ :

सोवियत यूनियन के छः युद्ध

सोवियत सरकार की इस प्रचण्ड सैनिक भावना या नम्र शब्दों में 'शक्ति' (Dynamism) का उद्भव रूसी राष्ट्र के किसी आन्तरिक गुण से नहीं हुआ है, बल्कि उसके कम्युनिस्ट शासकों की युद्धवादी और 'पैग़म्बरी' विचार-धारा से हुआ है। किसी विश्व-आन्दोलन के प्रवर्तकों को, जिसका उद्देश्य सारे विश्व में अपनी शक्ति को प्रसारित करना है, भविष्य में संकट-ही-संकट दिखाई पड़ता है, जिनमें से कम-से-कम कुछ का कारण स्वयं आन्दोलन ही होगा। महान् परिवर्तन के लिए काफी समय की—५० वर्ष या इससे भी अधिक समय की—कल्पना की जाती है, जो युद्ध और क्रान्तियों से भरा रहेगा। लेनिन के समय में क्रान्ति पर जोर दिया गया और स्तालिन के समय में युद्ध पर अधिक जोर दिया जा रहा है। जो भी हो, दोनों ही मामलों में, संक्रमण-काल में लगातार आपदाओं की कल्पना की गई है, जिसमें क्रान्ति से युद्ध और युद्ध से नई क्रान्तियों का ताँता लगा रहेगा।

सोवियत नेताओं ने शान्तिवाद का सर्वदा जोरदार शब्दों में विरोध किया है। वे इसे व्यंग्यात्मक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। प्रथम विश्व-युद्ध के समय लेनिन कहा करता था कि 'किसी भी मूल्य पर शान्ति' की बात एक 'मूर्खतापूर्ण लालसा' है। सचमुच युद्ध एक आपदा है और यह स्वीकार किया जाता है कि इसके दौरान में करोड़ों मानव नष्ट हो जाते हैं।

किन्तु लेनिन ने अपनी विशिष्ट दृढ़ता के साथ शान्ति के नारों का खण्डन किया और जब कभी उसने सोचा कि युद्ध जारी रखने से सम्भवतः वांछनीय परिणाम निकलेगा, उसने 'अपरिपक्व' शान्ति का समर्थन करने से इन्कार कर दिया।

१९०४-५ के प्रथम रूसी-जापानी युद्ध के प्रति नौजवान लेनिन का रुख दस या बीस वर्ष बाद विचित्र अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नीति होने वाला था। रूसी युद्ध बिलकुल पसन्द नहीं करते थे और सुदूर-पूर्व में रूस की लगातार पराजय रूस में क्रान्ति भड़काने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो रही थी। राजनीतिक हड़तालों, किसान-आन्दोलनों, विरोध-प्रदर्शनों और जुलूसों का ताँता लग गया और अन्त में अक्तूबर १९०५ में वैधानिक सुधारों के लिए वादे किये गए और दूसरे वर्ष प्रथम 'डूमा' का आयोजन किया गया। नम्र उदार दल और सोशलिस्ट 'किसी भी मूल्य पर शान्ति' की माँग कर रहे थे और युद्ध का अन्त करने के लिए जापान को महत्त्वपूर्ण सुविधाएँ प्रदान करने को भी तैयार थे। लेकिन लेनिन ने युद्ध और शान्ति की समस्या पर अपनी प्रथम घोषणा में उनसे अपनी असहमति व्यक्त की।

लेनिन ने तर्क पेश किया कि रूसी स्वतन्त्रता का हित और समाजवाद के लिए रूसी मजदूरों का संघर्ष बहुत हद तक राजतन्त्र की सैनिक पराजय पर निर्भर करता है। सैनिक[1] विध्वंस से इस हित को काफी लाभ पहुँचा है।

अभी कूटनीतिक शब्दों का उपयोग करने और अपने असली इरादे को छिपाने के लिए कारण न रहने पर लेनिन ने १९१६ में स्पष्ट रूप से बता दिया कि उसने निःशस्त्रीकरण के प्रस्ताव को क्यों ठुकरा दिया। निःशस्त्रीकरण-नारा (Disarmament slogan) शीर्षक लेख में उसने बताया कि क्रान्ति का अर्थ तानाशाही है और तानाशाही राज्य-शक्ति है जो प्रत्यक्ष रूप से हिंसा पर आधारित है। सामान्यतः सभ्यता के युग की भांति, २०वीं शताब्दी में हिंसा का अर्थ न तो घूंसा है और न डंडा, बल्कि सेना है। कार्यक्रम में

१. Lenin, *Collected Works* (3rd Russian ed.) IV, 165.

निःशस्त्रीकरण को रखना साधारणतया इस कहावत के समान है कि 'हम शस्त्रों के उपयोग के विरोधी हैं।' इसमें मार्क्सवाद का उतना ही अभाव है जितना हमारे इस कथन में कि 'हम हिंसा के विरोधी हैं।'[1]

स्तालिन ने इस सिद्धान्त पर अमल किया। अब जान पड़ता था कि भयङ्कर उथल-पुथल और उतार-चढ़ाव के साथ एक महान् सामाजिक-क्रान्ति का लम्बा युग आएगा। स्तालिन ने लेनिन की तरह सैनिक कार्यवाही की कभी निन्दा नहीं की। वह सभी युद्धों को 'उचित' और 'अनुचित' के रूप में विभाजित करने सम्बन्धी लेनिन के मत को पसन्द करता था। परिभाषा में सोवियत यूनियन द्वारा संचालित सभी युद्ध न्याय-संगत और प्रगतिशील थे।

१६५० में, जब सोवियत शान्ति-आन्दोलन चरम सीमा पर पहुँच चुका था, स्तालिन ने पहले-पहल १६३० में मैक्सिम गोर्की को लिखे गए अपने पत्र को प्रकाशित करना उचित समझा। उस समय सोवियत पत्रों ने यह खाका खींचा था कि पश्चिमी शक्तियाँ (इंग्लैण्ड और फ्रान्स) रूस पर आक्रमण के लिए जोरदार तैयारियाँ कर रही हैं और दूसरी ओर सोवियत सरकार ने अपने 'शान्तिप्रिय' स्वभाव और नीति पर जोर दिया। इस प्रचार के समर्थन के लिए मैक्सिम गोर्की ने एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा जो सुव्यवस्थित रूप से युद्ध की विभीषिकाओं का चित्रण करेगी, और उसने अपनी इस कल्पना के बारे में स्तालिन को लिखा। यह पत्रिका कभी प्रकाशित नहीं हुई, क्योंकि स्तालिन ने इस योजना को ठुकरा दिया और गोर्की को लिखा, "पुस्तक के बाजार में युद्ध की विभीषिकाओं का वर्णन करने वाले असंख्य प्रकाशन हैं जो जनता में न केवल साम्राज्यवादी युद्ध के प्रति, बल्कि किसी भी युद्ध के प्रति घृणा पैदा कर रहे हैं। ये 'पूँजीवादी शान्तिवादी' प्रकाशन हैं जिनका अधिक मूल्य नहीं है······।"

हम प्रत्येक युद्ध के विरुद्ध नहीं हैं। हम साम्राज्यवादी युद्ध के खिलाफ़

---

१. Lenin, *Collected Works* (3rd Russian ed.) XIX, 353.

हैं, क्योंकि वह क्रान्तिकारी-युद्ध के प्रतिकूल हैं। हम स्वतन्त्रतावादी, साम्राज्यवाद-विरोधी, क्रान्तिकारी युद्ध के समर्थक हैं, यद्यपि इस प्रकार का युद्ध, जैसा कि ज्ञात है, 'रक्तपात की विभीषिकाओं' से मुक्त नहीं है, बल्कि उसमें इनकी भी भरमार है।

सोवियत सरकार के अधिकृत शान्ति-प्रचार और उसकी विचारधारा की युद्धवादी प्रवृत्ति के बीच तथा अन्तर्राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण के उसके प्रचार और शस्त्रीकरण के लिए उसके अनुरोध के बीच का अन्तर दो सोवियत एजेंसियों—विदेश-कार्यालय और 'कोमिण्टर्न'—ने प्रस्तुत किया है। प्रथम ने 'शान्ति'-प्रचार के कूटनीतिक स्रोत का काम किया है और दूसरे ने चरित्र का विधान पेश किया है और अपने अनुयायियों को कटु सत्य बताया है।

१६३० के आरम्भ में अन्तर्राष्ट्रीय गगन में लित्विनाफ का सितारा बुलन्द हो रहा था। उस समय शान्ति और निःशस्त्रीकरण की चर्चा थी। लेनिन के विचारों और बुनियादी कम्युनिस्ट विचारधारा के विपरीत लित्विनाफ ने सोवियत यूनियन द्वारा युद्ध के प्रत्यक्ष खण्डन पर बार-बार जोर दिया। फरवरी, १६३२ में उसने निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन के सामने अपने बयान में बताया कि "सोवियत यूनियन राष्ट्रीय नीति के साधन के रूप में युद्ध को अस्वीकार करती है।"

राष्ट्रीय नीति के साधन के रूप में एक बार युद्ध का बहिष्कार कर देने पर सोवियत सरकार सेनाओं तथा अन्य सशस्त्र शक्तियों को कायम रखने की जरूरत नहीं समझती······

सोवियत यूनियन का एकमात्र उद्देश्य सोवियत यूनियन के प्रदेश पर समाजवाद का निर्माण करना है···सोवियत यूनियन को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए न तो अपना राज्य बढ़ाने की जरूरत है और न अन्य राष्ट्रों के मामलों में हस्तक्षेप की आवश्यकता है और इसीलिए वह सेना, नौसेना, वायुसेना तथा अन्य प्रकार की सशस्त्र शक्तियों के बिना अपना काम चला सकती है।

इन वक्तव्यों से यह धारणा पैदा हुई कि सोवियत रूस बिना हमला

हुए कभी युद्ध नहीं करेगा और वह सब राष्ट्रों से शान्तिप्रिय राष्ट्र है।

[1]१९२८ में हुई कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की छठी कांग्रेस के प्रस्ताव लिट्विनाफ के उपदेशों से बिलकुल भिन्न थे। स्तालिन निर्विरोध शासन और प्रभुत्व की चरम सीमा पर पहुँच चुके थे। अभी एक वर्ष पूर्व ट्राट्स्की को मध्य एशिया में निर्वासित कर दिया गया था और उसके अनुयायियों को सताया जा रहा था। जिनोवीव (Zinoviev) और कामनेव (Kamenev) का प्रभाव खत्म हो चुका था। 'कोमिण्टर्न' की नई कांग्रेस स्तालिन के विचारों का प्रतिनिधित्व करती थी, वह स्तालिन की कांग्रेस थी। उसके प्रस्तावों ने युद्ध की हालत में, जो १९३९–४५ में हुआ, कम्युनिस्टों के लिए अधिकृत हिदायतों का काम किया और वे आज भी लागू हैं। युद्धों के बारे में चाहे ये रक्षात्मक हों या आक्रमणात्मक, जो कुछ भी उनमें स्पष्ट रूप से कहा गया था, वह उस उपदेश से बिलकुल विपरीत था जो उस समय विश्व की जनता को लिट्विनाफ दे रहा था। उनके अनुसार युद्ध 'अनिवार्य', 'क्रान्तिकारी' और इसीलिए आवश्यक है।

स्थायी शान्ति की सम्भावना के सम्बन्ध में सोवियत यूनियन को कोई सन्देह नहीं है...'सर्वहारा और पूँजीवादी राज्यों के बीच युद्ध आवश्यक रूप से और अनिवार्य होकर रहेंगे।

लक्षणों से युद्ध के स्वरूप के बारे में—वह रक्षात्मक है या आक्रमणात्मक—निर्णय नहीं किया जा सकता। कम्युनिज्म को सभी लच्छेदार नारों का—जैसे "हम दूसरे युद्ध की कभी अनुमति नहीं देंगे," "अब युद्ध नहीं होगा" आदि—सामना करना है।

लेनिनवाद लड़ाई के खात्मे के बारे में सभी शान्तिवादी सिद्धान्तों का विरोध करता है......। विश्व-पूँजीवाद के विरुद्ध सर्वहारा-अधिनायकतन्त्र का युद्ध अनिवार्य और क्रान्तिकारी है।

इसलिए रूस के युद्ध में फँस जाने पर सभी कम्युनिस्ट पार्टियों से अन्य

१. Resolutions of the Sixth World Congress of Communist International (1928) P. 9.

भक्ति की आशा की जाती है। युद्ध का कारण चाहे जो भी हो, अथवा उसका सूत्रपात करने वाला कोई भी हो, समस्त विश्व के कम्युनिस्ट अपने-आप ही सोवियत सेनाओं का समर्थन करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वे पार्टी के अनुशासन को अपने देश के प्रति भक्ति या कर्त्तव्य से अधिक महत्त्व देने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हैं।

१९२० से १९४९ तक तीस वर्षों में रूस छः विदेशी युद्धों में फँसा था। इनमें से चार आक्रामक थे और दो रक्षात्मक, जिन्हें बाद में आक्रमणात्मक रूप दे दिया गया। सिर्फ एक बार युद्ध की वास्तविक घोषणा की गई थी।

१९२० में नये सोवियत राज्य को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध में भाग लेना पड़ा (जो गृह-युद्ध और हस्तक्षेप के विरुद्ध संघर्ष से बिलकुल भिन्न था।)

जोजेफ पिल्सुद्स्की (Joseph Pilsudski) के नेतृत्व में पोलैण्ड ने यूक्रेनियन नेताओं के साथ मित्रता कर ली और लेनिन के शान्ति-प्रस्ताव को ठुकराकर रूस पर हमला बोल दिया। युद्ध की इस स्थिति में सोवियत सरकार अपने विरोधी राजनीतिक नेताओं के अधिकांश गुटों की तथा पुरानी फ़ौज के जनरलों और अफसरों की प्रत्यक्ष सहायता और सहानुभूति प्राप्त करने में सफल रही। मौलिक देशभक्ति के पुनर्जन्म और आक्रमणकारी के विरुद्ध देश की रक्षा की प्रेरणा ने लेनिन के शासन की सहायता की। पहले तो विजयी पोलिश सेनाएँ यूक्रेन में बहुत दूर तक घुस गईं, किन्तु शीघ्र ही अनुभवहीन और असज्जित पोलों को सोवियत प्रत्याक्रमणों के सामने पीछे हटना पड़ा। जब लाल सेना वारसा के निकट पहुँच गई तब लायड जार्ज ने प्रस्ताव रखा कि रूस के लिए अत्यन्त अनुकूल शर्तों पर सन्धि की जाय। १९४५ से सोवियत यूनियन और पोलैण्ड के बीच जो सीमा रही है, वही दोनों की सीमा होनी चाहिए और पूर्वी पोलैण्ड का एक हिस्सा सोवियत रूस को मिलना चाहिए। गृह-युद्ध में व्यस्त और छः वर्षों के युद्ध से थकित और विनष्ट रूस के लिए यही बहुत था और लन्दन, पेरिस और वारसा से उसे इतनी आशा नहीं थी।

लेकिन लेनिन ने ब्रिटिश प्रस्ताव ठुकरा दिया और पोलैण्ड के सोवियती-करण के उद्देश्य से वारसा के लिए लड़ने और फिर पश्चिम में जर्मनी तक बढ़ने का निर्णय किया। अब सुरक्षात्मक युद्ध आक्रमणात्मक बन गया, जिसका मुख्य लक्ष्य जर्मनी था। लेनिन की प्रेरणा से शान्ति-प्रस्ताव ठुकराने का निर्णय किया गया, जिसका स्तालिन, जिनोवीव और कामनेव ने समर्थन किया। इस कार्यवाही के प्रमुख विरोधियों में ल्योन ट्राट्स्की, अलेक्सी रीकोव (Alexei Rykov) और कार्ल राडेक (Karl Radek) थे। (इनमें केवल ट्राट्स्की पोलितब्यूरो में था) जिनोवीव की अध्यक्षता में पेट्रोग्राड सोवियत ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें माँग की गई थी कि "जब तक पूंजीपतियों की शक्ति टूट नहीं जाती और सोवियत प्रजातन्त्र की घोषणा नहीं हो जाती, तब तक पोलैण्ड के साथ सन्धि नहीं हो सकती।" बाद में लेनिन ने अपना मकसद समझाया। उसने पोलैण्ड होकर जर्मनी तक जाने और पश्चिमी शक्तियों के साथ 'निर्णायक युद्ध' करने की आशा की थी।

[1]यदि पोलैण्ड सोवियत राज्य हो जाता, और यदि वारसा के मजदूरों को सोवियत रूस से वांछित सहायता मिली होती तो वार्सेई की सन्धि और सारी अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली टूक-टूक हो गई होती···लाल सेना के विजय-अभियान के कुछ ही दिनों बाद, केवल वारसा पर ही कब्जा नहीं हो गया होता—यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं था—बल्कि वार्सेई की सन्धि भी लड़खड़ा गई होती।

यहीं पर लेनिन ने आक्रामक युद्ध छेड़ने के लिए सोवियत राज्य के सैद्धान्तिक अधिकार का दावा किया। उसने उन लोगों के खिलाफ कार्य-वाही की, जिन्होंने 'सुरक्षात्मक युद्ध' और 'आक्रामक युद्ध' के बीच भेदभाव करने की कोशिश की। लेनिन ने अपने भाषण में, जिसका पहले जिक्र हो चुका है, घोषणा की—"इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं रह गया है—ये छोटे-छोटे पूँजीपतियों के शान्तिवाद के शब्द हैं···यदि हमने एक सैनिक,

१. Speech of October 2, 1920, in *Collected Works* (3rd Russian ed.) XXV, 402

सामरिक अर्थ में आक्रामक समझे जाने वाले कार्य को भी न करने की प्रतिज्ञा की तो हम न केवल मूर्ख होंगे, बल्कि अपराधी भी होंगे।"

मास्को ने पाँच प्रमुख कम्युनिस्टों की एक पोलिश सरकार कायम कर दी, जो १९४४ की 'लुबलिन कमेटी' की अग्रदूत बनी। वह लाल सेना के साथ चलती थी, उसका प्रधान कार्यालय ब्यालीस्टाक (Bialystok) में था। वारसा पर कब्जा होते ही उसका इरादा वहीं जाने का था। किन्तु वारसा का पतन नहीं हुआ। एक चमत्कार हुआ—ऐसा चमत्कार जो १९१४ के 'मोर्ने-चमत्कार' (Miracle on Marne) की तरह कभी-कभी इतिहास की दिशा बदल देता है। लाल सेना खदेड़ दी गई, मास्को को एक विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर करना पड़ा और बाद में एक प्रतिकूल शान्ति-सन्धि करनी पड़ी। इस युद्ध की विफलता के कारणों पर प्रकाश डालते हुए बाद में स्तालिन ने ल्योन ट्राट्स्की और मार्शल तुखाचेव्स्की (Marshal Tukhachevsky) के दोषपूर्ण रणकौशल को जिम्मेदार ठहराया।

पोलिश युद्ध ने एक दृष्टान्त प्रस्तुत कर दिया, जो कम्युनिस्ट दर्शन के संकलन में शामिल कर लिया गया। इसी प्रकार इस विचारधारा का अभ्युदय हुआ कि सोवियत राज्य को आक्रमण करने का अधिकार है और स्वतन्त्रता के लिए किसी सरकार द्वारा छेड़ा गया कोई युद्ध (मास्को की समझ में) स्वतः 'न्याय संगत' है।

यदि १९२० के दशक में यूरोप में सन्नाटा था तो एशिया में शान्ति नहीं थी। १९२९ में सोवियत यूनियन ने चीनी ईस्टर्न रेलवे के सम्बन्ध में बढ़ते हुए मतभेद को लेकर मंचूरिया की सीमा पर दूसरा युद्ध छेड़ दिया। च्यांगकाईशेक का समर्थन प्राप्त करके मंचूरिया के 'युवक मार्शल' चांग स्वेहल्यांग (Chang Hsuehliang) ने मंचूरियन राज्य में रूसी-चीनी रेलवे लाइन पर कब्जा कर लिया। यह कार्य चीनियों के राष्ट्रीय गर्व और स्वाभिमान के अभ्युदय का द्योतक था; युग-युग के अपमानों और अन्याय-पूर्ण सन्धियों से वह उत्तेजित हो उठा था। मनमानी कार्यवाही से रेलवे पर कब्जा कर लेने के बाद चीनियों के लिए सैनिक कार्यवाही शुरू करने

के लिए कोई कारण नहीं था। पहले गोलीबारी नहीं हुई।

मास्को के सामने अब दो ही चोर रह गए थे, या तो वह चीन को किसी अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में घसीट ले जाता, जिसमें कानूनी विलम्ब और खतरे की सम्भावना थी, या बल-प्रयोग करता। इसके थोड़े ही समय पूर्व सोवियत सरकार राष्ट्रीय नीति के साधन रूप में युद्ध को गैर-कानूनी घोषित करते हुए केलाग ब्रायण्ड (Kellogg-Briand) सन्धि से चिपक चुकी थी।

जब कई कूटनीतिक आदान-प्रदान विफल हो गए, तब सोवियत सेना ने प्रहार कर दिया। रेलवे लाइन पर चीनियों के कब्जा करने के तीन महीने बाद सोवियत सेना ने आक्रमण आरम्भ कर दिया। साथ-ही-साथ मास्को ने मध्यस्थता के सारे प्रयासों को भी ठुकरा दिया। इस युद्ध में हजारों के प्राण गये और अन्त में चीनियों ने घुटना टेक दिया। सोवियत उद्देश्य—विदेशी भूमि पर रूसी रेलवे का संचालन—और उसके लिए डाले जाने वाले दबाव से स्पष्ट हो गया था कि मास्को ने अपने लक्ष्य की पूर्ति के साधन के रूप में युद्ध का किसी भी तरह परित्याग नहीं किया है।

जर्मनी और जापान की बढ़ती हुई आक्रमणशीलता के बावजूद, लिट्विनाफ-कहानी—सोवियत सरकार के कभी युद्ध न करने की कहानी—को १९३० के दशक में जिन्दा रखा गया। १९३८-३९ में सीमा-दुर्घटनाओं के समय लाल सेना ने जापानी क्वान्तुंग सेना के विरुद्ध जो विशुद्ध सुरक्षात्मक कार्यवाही की, उससे इस कहानी की पुष्टि होती जान पड़ी। यद्यपि सीमा पर कभी-कभी संघर्ष उग्र रूप धारण कर लेता था, तथापि जापान उन्हें पूर्ण युद्ध का रूप देना नहीं चाहता था। टोकियो में रिचर्ड सोर्ज (Richerd Sorge) के नेतृत्व में जासूसी जाल की कृपा से मास्को को जापान की सारी योजनाओं और सीमित उद्देश्यों का तथा उसकी सारी सैनिक शक्ति का पता चल गया था।

१९३० के दशक में मास्को ने युद्ध और शान्ति-सम्बन्धी अपने सिद्धान्त की व्याख्या जारी रखी। स्तालिन और उसके सहायक नये-नये फार्मूले तैयार कर रहे थे। 'प्रवदा' के सम्पादक लेव मेखलिस

(Lev Mekhlis) ने १६३६ के आरम्भ में बताया कि युद्ध की स्थिति में शत्रु के प्रदेश में सैनिक कार्यवाही की जानी चाहिए, हमें अपनी अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को पूरा करना होगा और सोवियत प्रजातन्त्रों[1] की संख्या बढ़ानी होगी। इस कार्यक्रम के दो भागों की स्पष्ट रूप से व्याख्या की गई। १६४४-४७ में उनका अक्षरशः पालन किया गया।

१६३४ में १७वीं पार्टी-कांग्रेस में पेश की गई अपनी रिपोर्ट के अन्त में स्तालिन ने खुद युद्ध की सम्भावनाओं पर अपने विचार व्यक्त किये थे। उन्होंने सोवियत यूनियन से लड़ने वाली प्रत्येक पूंजीवादी सेना के पीछे बग़ावतों और क्रान्तियों की आशाएं की थीं। किन्तु उनकी यह भविष्यवाणी कभी सत्य नहीं हुई, जिस तरह कि युद्ध के दौरान में मुसोलिनी, हिटलर और तोजो की सरकारों के विरुद्ध जन-आन्दोलनों के लिए मास्को की सारी बड़ी-बड़ी आशाएँ चकनाचूर हो गईं। १६३८ में प्रकाशित अपने कम्युनिस्ट पार्टी के संक्षिप्त इतिहास में स्तालिन ने फिर जोर देकर कहा कि बोल्शेविक सभी प्रकार के युद्धों के खिलाफ नहीं हैं। वे केवल अन्यायपूर्ण युद्धों का विरोध करते हैं, वे 'स्वतन्त्रता' के उद्देश्य से छेड़े गए आक्रामक युद्धों का समर्थन और अनुमोदन करते हैं।

१६३६ के पतझड़ में सोवियत सरकार ने तीसरा युद्ध छेड़ दिया। पोलैण्ड पर जर्मनी ने पहले ही हमला कर दिया था, फिर सोवियत सेनाओं ने पोलिश सीमा पार की। व्याचिस्लाव मोलोतोव ने इस कार्यवाही को उचित बताया और असामयिक घोषणा कर दी कि पोलिश राज्य का अस्तित्व ख़त्म हो चुका है। उन्होंने कहा कि रूस का उद्देश्य पोलैण्ड में रहने वाले यूक्रेनियनों और बीलो-रूसियों (Bielorussians) का उद्धार करना है। युद्ध के द्वारा राष्ट्रीय लक्ष्य की सिद्धि का यह एक दृष्टान्त था। युद्ध कुछ ही दिनों तक जारी रहा और पूर्वी पोलैण्ड सोवियत यूनियन में मिला लिया गया।

---

1. Eighteenth Congress of Communist Party of Soviet Union, Moscow, 1939. Full report (in Russian) P. 273.

पोलैण्ड पर आक्रमण के अभी दो ही महीने हुए थे कि रूस ने फ़िनलैण्ड पर हमला करके चौथा युद्ध छेड़ दिया। मास्को ने एक बार फिर आक्रामक युद्ध का स्पष्ट दृष्टान्त पेश कर दिया, यद्यपि उसने अपनी कार्यवाही को एक दूसरे ही प्रकाश में रखने की जबरदस्त कोशिश की। उसने घोषणा की कि फिनलैण्ड की ओर से सात बार गोलियां चलाई गईं और कई रूसी सैनिक मारे गए तथा ओटो कुसीनेन (Otto Kuusinen) के अन्तर्गत बाग़ी 'फिनिश' सरकार कायम कर दी गई। सोवियत सरकार ने नियमित रूप से फिनलैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की और कहा कि वह केवल 'फिनिश' कम्युनिस्ट मित्रों को सहायता पहुँचा रही। किन्तु बहानेबाजी छिपी नहीं रही, सचाई प्रकट होकर रही। तीन महीने के बाद युद्ध का अन्त सोवियत विजय में हुआ।

फिर पाँचवां युद्ध आया, जो सोवियत यूनियन का भीषणतम युद्ध था, जिसमें अधिक-से-अधिक रक्तपात और नृशंसता प्रदर्शित की गई। जर्मनी के विरुद्ध यह रक्षात्मक युद्ध था, जो कम-से-कम तीन वर्ष तक चलता रहा।

१९४४ में इसका रूप बदल गया। जब मित्रों की सैनिक कार्यवाही ने जोर पकड़ा तो मास्को में पुराने नारों में संशोधन किये गए। युद्ध का संचालन 'शत्रु के प्रदेश में' करना होगा और सेना को 'सोवियत प्रजातन्त्रों की संख्या बढ़ाने' में मदद करनी होगी। अब इस फार्मूले को सोवियत नेताओं की 'अलौकिक दूरदर्शिता' के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया और काफी मात्रा में इसका उपयोग किया गया। युद्ध की इस अन्तिम अवस्था में रक्षात्मक युद्ध के सिद्धान्त का रूप बदल गया। केवल शब्दों में परिवर्तन करना उपयुक्त समझा गया; ये परिवर्तन 'सोवियत प्रजातन्त्र' में नहीं थे, बल्कि 'जन-लोकतन्त्र' (People's democracies) में थे।

जापान के विरुद्ध छठा युद्ध था, जो इतनी दूर लड़ा जाने वाला सोवियत यूनियन का अन्तिम युद्ध था। रूस के लिए यह द्वितीय विश्वयुद्ध का भाग नहीं था, बल्कि एक पृथक् युद्ध था। यूरोप में युद्ध मई, १९४५ के आरम्भ में समाप्त हो गया; ९ अगस्त तक रूसी सेनाओं ने सीमा पार करके

मंचुकुओं में प्रवेश किया। यह हमला विशुद्ध आक्रामक युद्ध का दृष्टान्त था, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करना था। टोकियो के आत्म-समर्पण के छः दिन बाद रूस युद्ध में शामिल हुआ और उसके पहले जापान हार चुका था। छोटी लड़ाई और सस्ती जीत।

इस बीच सोवियत सिद्धान्त, लक्ष्य और कार्यक्रम में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके थे। सोवियत इतिहास में पहले-पहल आक्रमण को उचित नहीं बताया गया। 'जापानी खतरे' का जिक्र नहीं किया गया और वास्तव में खतरा था भी नहीं और न मित्र-युद्ध में सम्मिलित होने की प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन की प्रार्थना से ही नये युद्ध के औचित्य को सिद्ध किया जा सकता था। याल्टा में स्तालिन को काफी प्रदेशों की प्राप्ति के लिए जो वादा किया गया था, वह जनता को मालूम नहीं हुआ, बल्कि जनमत का पहले ही से इतना कम महत्त्व रह गया था कि उसके लिए पूर्ण व्याख्या की जरूरत ही नहीं थी। इस क्षण रूसी देशभक्तों की क्रान्ति के पूर्व की भावना—अन्धभक्ति—की पुनः विजय हुई।

चीनी बन्दरगाहों की प्राप्ति, औद्योगिक मंत्रों का रूस को स्थानान्तरण, जापानी नागरिकों से 'बेगारी' युद्ध के वास्तविक उद्देश्य थे। गैर-रूसियों की आबादी के साथ काफी प्रदेश सोवियत यूनियन में मिला दिये गए।

वर्षों से मास्को ने इंग्लैण्ड को अपना सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय शत्रु समझा था। सोवियत प्रचार का मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद था। निकट और सुदूर-पूर्व में 'औपनिवेशिक और अर्ध-औपनिवेशिक' जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलनों से ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के छिन्न-भिन्न हो जाने की आशा की गई थी और यह समझा गया था कि ब्रिटिश साम्राज्य के विघटन और ब्रिटिश प्रभाव की निर्बलता से कम्युनिज़्मों का मार्ग प्रकाशित हो जायगा।

जब जर्मनी ने हथियार डाल दिए तो यह मालूम होता था कि लक्ष्य पूरा हो चुका है। छः वर्ष के युद्ध से इंग्लैण्ड गरीब हो चुका था, थक चुका था और सैनिक तथा राजनीतिक तौर पर क्षत-विक्षत हो चुका था।

पुराने साम्राज्य में उसे खण्ड-खण्ड कर देने वाले आन्दोलन फैल गए थे और कुछ ही वर्षों में उसके उपनिवेशों की आबादी घटकर ५० करोड़ से १० करोड़ रह गई। रूस को अपनी आशाओं की इस पूर्ति से सन्तोष हुआ।

ऐतिहासिक विरोधाभास से मुख्य 'शत्रु' की निर्बलता के साथ-साथ एक दूसरी सोवियत-विरोधी शक्ति का सहसा जन्म हुआ, जो ब्रिटिश साम्राज्य से भी अधिक प्रबल और सम्पन्न थी। ब्रिटेन ने जो जगह खाली कर दी थी, उसकी पूर्ति सोवियत यूनियन ने नहीं, बल्कि एक दूसरी एंग्लो-सेक्सन कम्युनिस्ट-विरोधी शक्ति ने की। जब कि ब्रिटेन अपने विश्व-व्यापी साधन-स्रोतों और जन-शक्ति के बावजूद अटलांटिक में एक छोटे-से द्वीप में रह गया, तब अमेरिका एक विशाल राष्ट्र था, जिसकी आबादी उसकी तिगुनी थी। ब्रिटिश उद्योग ने हर लड़ाई में अपने मित्रों को सामान सप्लाई किया था। अब अमेरिका ने यह काम अपने हाथ में लिया। उसका उद्योग गुण और मात्रा दोनों ही में ब्रिटेन से कहीं ज्यादा आगे बढ़ गया था। पहले ब्रिटिश सोने, कर्ज और सहायताओं से ब्रिटिश-नेतृत्व में अन्तर्राष्ट्रीय एकताओं और युद्ध-सम्बन्धी मित्रताओं की स्थापना में बड़ी सहायता मिलती थी; अब अमेरिकी साधन-स्रोतों के इस क्षेत्र में आ जाने से उनकी तुलना में वे फीके से जान पड़ते हैं।

शक्तियों के विभाजन में, जिसके बारे में स्तालिन और उनके प्रेस अक्सर जिक्र किया करते थे, अब सोवियत यूनियन एक छोर पर और अमेरिका दूसरे छोर पर जान पड़ता है। उनके बीच में 'मध्यस्थ तत्व' है, जैसा कि वर्ग-संघर्ष के पुराने सिद्धान्तों में छोटे-छोटे मध्यवर्ग के पूँजीपति, किसान और बुद्धिजीवी-वर्ग किसी पक्ष में नहीं होते। और पूँजीपतियों को अकेला छोड़ देने के लिए उन्हें मजदूर-वर्ग के पक्ष में लाने की कोशिश करनी पड़ती है। अब चूँकि वर्ग-संघर्ष ने विश्वव्यापी भौगोलिक रूप धारण कर लिया है, इसलिए इन मध्यस्थ तत्त्वों का प्रतिनिधित्व वे राष्ट्र और राज्य करते हैं जो राजनीतिक और भौगोलिक रूप से इन दोनों महाशक्तियों के बीच

स्थित हैं। ये गैर-सोवियत यूरोप के १६ देश और जर्मनी हैं, जो भावी विश्व-युद्ध में निर्णायक पार्ट अदा करने के लिए तो बहुत कमजोर हैं, किन्तु उनकी कुल शक्ति तराजू के किसी भी पलड़े को भारी बना सकती है। इन देशों में पूँजीवाद चूर-चूर हो चुका है, किन्तु पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुआ है, फिर भी 'सर्वहारा' अर्थात् कम्युनिज़्म को वहां स्थान नहीं मिला है। अन्तिम निर्णायक युद्ध के समय, इन्हीं राष्ट्रों में इनमें से एक-एक की आत्मा और शक्ति पर अमेरिका के साथ युद्ध अवश्य होना चाहिए, यही क्रेमलिन की कल्पना है।

आन्तरिक 'वर्ग-संघर्ष' बहिर्मुखी बन जाता है। जब कि वह सामाजिक ढांचे के विभिन्न स्तरों के बीच एक कोने से आरम्भ होता था, अब वह गोलाकार बन गया है और विश्व के अन्य देशों की ओर फैला जा रहा है। क्रान्ति के दिनों से जो-कुछ भी शक्ति शेष रह गई थी, उसे मानो एक विशाल 'जेनरेटर' में एकत्रित कर विश्व-विजय के लिए एक प्रबल शक्ति में परिवर्तित किया जा रहा है। जिस शक्ति ने एक बार श्वेत-सेनाओं को उखाड़ फेंका, एक मजदूर-सेना की स्थापना की, नये सिरे से एक नई सेना तैयार की, वह आज अपने ही लौह-आवरण के भीतर उबल रही है और बांधों को तोड़कर अपनी लाल धारा को यूरोपीय पश्चिम और एशियाई पूर्व के क्षेत्रों में प्रवाहित करना चाहती है।

: ४ :

प्राचीन और नवीन राष्ट्रवाद

हमें याद है कि जब पहले-पहल स्तालिन ने 'जारवादी' जनरलों सुवोरोव (Suvorov) और कुतुज़ोव (Kutuzov) का तथा प्राचीन रूस के गौरव का गुणगान आरम्भ किया था, उस समय ग़ैर-सोवियत रूस पर उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई थी।

मास्को और मोरचे पर के रूसियों की तरह विदेशों में लोगों ने कहा—प्रचार! सैद्धान्तिक चाल! वे लड़ाई में जीत जायँ, फिर मार्क्सवाद—लेनिनवाद—स्तालिनवाद के सामने प्राचीन रूस की ये प्रतिध्वनियाँ भूल जायँगी।

वास्तव में यह शक सही था। फिर भी युद्ध के बाद रूस में नई प्रवृत्ति का कुछ-न-कुछ अंश शेष रहा, क्योंकि स्तालिन ने केवल अपना रूप ही नहीं बदला था। 'अच्छे' और 'बुरे' राष्ट्रों के जातीय 'लेबल' (लेपपत्र) और कुछ राष्ट्रों की दूसरे राष्ट्रों पर प्रभुत्व की भावना जोर पकड़ रही थी। उन्होंने पुराने कम्युनिस्ट सिद्धान्तों और उपदेशों को एकदम नहीं छोड़ दिया, बल्कि उन्हीं के साथ समन्वित कर रूसी जनता की 'मसीहाई' का एक विचित्र सिद्धान्त बना दिया। रूस विशेष अधिकारों का प्रादेशिक, राजनीतिक और आर्थिक हकदार है, जो सोवियत यूनियन के अन्य सदस्य-राष्ट्रों तथा ग़ैर-सोवियत संसार को नहीं मिलने चाहिएँ।

क्रान्ति के पूर्व रूस के पिछड़ा राष्ट्र होने की कल्पना लेनिन के लिए बिलकुल सत्य थी, क्योंकि सभी बुद्धिजीवी रूसियों के दिमाग में बिना किसी दलगत भेदभाव के यह बात साफ थी। लेनिन ने अपने शिक्षकों और मित्रों के साथ इस विचारधारा को सार्वभौमिक, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन के रूप में प्रतिपादित किया। 'प्रगतिशील राष्ट्र' उसके लिए 'पूँजीवादी राष्ट्र' के पर्यायवाची थे, जो बड़ी तेजी से नई सामाजिक व्यवस्था के लिए परिपक्व हो रहे थे। रूस उनमें नहीं था। 'पूँजीवादी अवस्था' इस नई व्यवस्था के लिए आवश्यक समझी गई, क्योंकि पूँजीवाद के पहले सामन्ती और राजतन्त्रीय अवस्थाओं में उद्योग और औद्योगिक मजदूर-वर्ग का सफल विकास नहीं हो सकता था।

दूसरी ओर ट्राट्स्की ने अपने ढंग पर क्षेत्र तैयार करने की कोशिश की। उसे आशा थी कि पिछड़े रूस में आसन्न क्रान्ति पश्चिम के प्रगतिशील देशों में क्रान्तियों की ज्वाला प्रज्वलित कर देगी। इन क्रान्तियों की सफलता का अर्थ होगा विश्व की आर्थिक व्यवस्था के अधिकांश भाग का समाजवादी पुनर्निर्माण। फिर, प्रगतिशील पश्चिमी समाजवाद की सहायता से रूस अपनी आर्थिक प्रणाली के पश्चिमी अर्थात् समाजवादी स्वरूप का पुनर्निर्माण करने और उसे सुदृढ़ बनाने की स्थिति में हो जायगा।

स्तालिन ने रूसी क्रान्ति का चित्रण करते हुए बताया कि इससे सीधे समाजवाद की स्थापना होगी। इस मामले में वह लेनिन और ट्राट्स्की दोनों से मतभेद रखता था।

स्तालिन ने रूसी सोशलिस्ट शिशु और माता 'पश्चिम' के बीच नार काट दिया। उसने कहा कि दूसरों का अनुसरण करके नहीं, बल्कि अकेले ही अपने बल पर रूसी राष्ट्र अपने सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन करेगा। 'एक देश में समाजवाद' की उसकी यही कल्पना थी। जब स्तालिन ने इन शब्दों पर अमल करना शुरू किया, उस समय लेनिन इस संसार से उठ चुका था और ट्राट्स्की का देशनिकाला हो चुका था। नया राष्ट्रीय गर्व उचित समझा गया और हर तरह से इस नई भावना को पुष्ट करने का प्रयत्न

किया गया।

बाद के दस वर्षों में सामाजिक क्रान्ति पूरी हुई; सरमायेदारी का खात्मा कर दिया गया। उद्योग, व्यापार और खेती के व्यापक क्षेत्र में निजी सम्पत्ति का अन्त कर दिया गया। अब स्तालिन ने दावा किया कि जनता ने, जो पहले विरोधी वर्गों में विभाजित थी, एक वर्गहीन समाज की स्थापना कर ली है। रूसी इतिहास में पहले-पहल राष्ट्रीय एकता कायम हुई। रूसी पत्रों ने धीरे-धीरे 'वर्ग-संघर्ष' शब्द का उपयोग करना बन्द कर दिया और 'मजदूर' और 'किसान' शब्दों की जगह एकतासूचक शब्द 'मेहनतकश जनता' का उपयोग होने लगा। आज तो 'वर्ग-संघर्ष' का शायद ही प्रयोग होता है, यहाँ तक कि साहित्य और सार्वजनिक भाषणों में 'वर्ग' शब्द नहीं पाया जाता। समस्त राष्ट्र एक समान और संगठित समूह समझा जाता है।

सरकारी विचारधारा के अनुसार वर्ग-भेद ज्यों-ज्यों मिटता जा रहा था, त्यों-त्यों राष्ट्र-भेद सामने आ रहा था। पहले मजदूर अच्छे थे, कुलक बुरे थे और पूँजीपति सबसे बुरे थे। अब राष्ट्र अच्छे, बुरे और बहुत बुरे हो गए। वोल्गा-जर्मन प्रदेश के जर्मनों को हटाकर पूर्व और उत्तर की ओर भेज दिया गया। बाद में पाँच अन्य जातियों को (तातार, चेचेन्स, इन्गुश, काल्मीक्स, काराचेरियन्स) भी यही दुर्दिन देखने पड़े। १६२० के दशक में और १६३० के दशक के आरम्भ में सोवियत अधिकारी, प्रचार और सिद्धान्त के कारणों से ही सही, 'औद्योगिक मजदूरों' और 'पूँजीपति तथा कुलक' के बीच भेद-भाव करते थे; पहले को ईमानदार और विश्वसनीय समझा जाता था और दूसरे को दण्डनीय। उस समय जहाँ कहीं भी ताजीरी कार्यवाही की जाती थी, जमींदारों, पूँजीपतियों और कुलकों का देशनिकाला होता था और गरीब किसानों तथा मजदूरों को छोड़ दिया जाता था—कम-से-कम प्रचार के अनुसार। अब इस तरह का भेदभाव नहीं किया जाता था।

दूसरी ओर एक रूसी सब गुणों का अवतार था, कम्युनिज्म का विधाता था। स्तालिन ने युद्ध के बाद एक विजय-समारोह में अपने जनरलों को समझाते हुए इस नये दर्शन की स्पष्ट शब्दों में घोषणा की। सभी प्राचीन

परम्पराओं को भंग करते हुए उन्होंने एक 'रूसी' के सारे गुणों को शेष सोवियत जनता से भिन्न बताया। उन्होंने "अपनी सोवियत जनता के स्वास्थ्य के लिए और सबसे पहले रूसी जनता के स्वास्थ्य" के लिए ग्लास उठाई। (यहाँ काफी समय तक जोरदार हर्षध्वनि होती रही और 'हुर्रा' 'हुर्रा'[1] के नारे लगाये गए।) उन्होंने कहा, "सबसे पहले मैं रूसी जनता के स्वास्थ्य के लिए जीता हूँ, क्योंकि वह सोवियत यूनियन को बनाने वाली सभी जातियों से महत्त्वपूर्ण जाति है।"

मैं रूसी जनता के स्वास्थ्य के लिए 'टोस्ट' उठाता हूँ, क्योंकि वह हमारे देश की सब जातियों में सोवियत यूनियन की प्रमुख शक्ति है··· उसमें स्पष्ट विचार, सुदृढ़ चरित्र और धैर्य है।

सोवियत सरकार में रूसी जनता का विश्वास निर्णायक-शक्ति सिद्ध हुआ है, जिससे मानवता के शत्रु फासिस्टवाद पर ऐतिहासिक विजय निश्चित हुई।

सोवियत यूनियन की अन्य जातियों में रूसी जनता के 'प्रमुख' कार्य का जिक्र एक नई चीज थी। यह तो क्रान्ति के पूर्व रूस में बसने वाली जातियों पर रूसी नेतृत्व के विचार की पुनरावृत्ति थी; यह लेनिन की सलाह के खिलाफ था, जिसमें उसने विनम्र और बुद्धिमान होने तथा अन्य जातियों पर कभी प्रभुत्व का दावा न करने के लिए कहा था। स्तालिन ने जो-कुछ कहा, वह एक नये जातीय सिद्धान्त का अंश था, जिसके अनुसार रूसी सोवियत आबादी का आधा होते हुए भी सर्वोच्च जाति हैं।

दिसम्बर, १९४३ में जो नया सोवियत गाना जारी किया गया, वह परम्परागत 'इण्टरनेशनल' द्वारा भी अब गाया जाता है। २६ वर्ष के बाद पहले-पहल इस राष्ट्रीय गाने में 'रूस' शब्द फिर से रखा गया है और उससे भी बढ़कर महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'रूसी जनता' का सोवियत भूमि की अन्य जातियों से श्रेष्ठ होने के नाते तथा उसके नेता का राज्य और साम्राज्य-निर्माता के नाते स्वागत किया गया है।

---

१. Information Bulletin of the soviet Embassy in Washington (1945) N. 55.

प्रकाशित होने के पहले राष्ट्रीय गान के एक-एक शब्द को तौला, जाँचा और छानाबीना गया है। वह इस प्रकार शुरू होता है, "महान् रूस ने स्वतन्त्र प्रजातन्त्रों की अजेय यूनियन को सर्वदा के लिए सुदृढ़ बना दिया है।" नये और पुराने शब्दों को बड़ी कुशलता से एक ही में मिला दिया गया है। 'स्वतन्त्र प्रजातन्त्रों' अर्थात् राष्ट्रीय प्रजातन्त्रों की कल्पना सोवियत ढाँचे से की गई है, किन्तु 'महान् रूस' सोवियत गान में एक नया शब्द है। क्रान्ति के पूर्व 'महान् रूस' और 'महान रूसी' शब्दों का प्रयोग इसी अर्थ में होता था जिस अर्थ में आज इनका प्रयोग यूक्रेनियनों और श्वेत रूसियों (Bielorussian) के साथ इनके भेदभाव के लिए होता है।

पार्टी की केन्द्रीय समिति ने रूसी सफलताओं की प्रशंसा का पुल बाँधने और जनता के सामने उन्हें खूब बढ़ा-चढ़ाकर रखने के लिए एक आन्दोलन चलाया। आलोचकों और विरोधियों के अभाव में यह अभियान खुले-आम शीघ्र ही चरम सीमा तक पहुँच गया। अभी तक जितने भी अनुसन्धान और अन्वेषण पश्चिम के लोगों द्वारा हुए, माने जाते थे; उन सभी के लिए रूसियों को श्रेय प्रदान करने की कोशिश की गई और शायद ही किसी सोवियत गैर-रूसी को अन्वेषकों और अनुसन्धानकर्त्ताओं की सूची में रखा गया। जाजियनों, पोलों, यूक्रेनियनों और यहूदियों का शायद ही कभी नामोल्लेख किया गया। आम तौर पर सिर्फ़ रूसी नामों का जिक्र किया गया—जैसे चेर्नोव (इस्पात), लाडीजीन (इलेक्ट्रिक बल्ब), पोपोव (रेडियो टेलीग्राफ), डोलिवो-डोब्रोवोल्स्की और पेट्रोव (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग), चेरेपानोव (इंजिन), पोल्जुनोव (थर्मोटेकनिक्स), या ब्लोखोव, लोमोनोसोव।

पश्चिम और पूर्व के सभी पिछलग्गू देशों में रूसी भाषा के अध्ययन का हुक्म जारी किया गया। मंगोलिया में देशी लिपि के बजाय रूसी लिपि चालू की गई। रूसी किसानों को पश्चिम की नई सीमाओं पर लाकर बसाया गया, जैसे लिथुआनिया में, और वहाँ के निवासियों को काफी संख्या में निर्वासित कर दिया गया।

अभी हाल ही में एक उच्च सरकारी प्रकाशन-गृह (Gosizdat) ने एक

'महान् रूसी जाति' (The Great Russian People) नामक रचना प्रकाशित की है, जिसकी रचयिता कुमारी ए० पंक्रातोवा (Pankratova) हैं, जो हुक्म के मुताबिक काफी किताबें लिखती हैं। इस रचना में सोवियत यूनियन के अन्य सदस्य-राष्ट्रों से भिन्न रूसियों के गुणों और सफलताओं का वर्णन है। इस पुस्तक के १६० पृष्ठों में कोई सनसनीपूर्ण चीज नहीं है। इसमें औद्योगीकरण, सामूहिकीकरण, पंचवर्षीय योजना, अन्य राष्ट्रों को सहायता तथा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध का विवरण है, लेकिन अब सबका श्रेय रूसियों को दिया जा रहा है। १९४८ में राज्य-प्रकाशन-गृह (State Publishing House) द्वारा इस तरह की पुस्तक की माँग और एक लाख के संस्करण में उसका प्रकाशन नई स्थिति का द्योतक है।

अपनी मृत्यु के पहले के दो वर्षों में लेनिन ने कई बार अपने उन साथियों को खूब फटकारा, जिन्हें वह 'महान् रूसी अन्धदेशभक्त' कहता था। दिसम्बर, १९२२ में उसने लिखा, "एक कम्युनिस्ट को मिटा दो तो आपको एक महान् रूसी अन्धदेशभक्त दिखाई पड़ेगा।"

लेनिन को क्रान्ति के पूर्व की रूस की दशा याद थी। उसने अनुरोध किया कि अल्पसंख्यकों की भावनाओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए। उसने कहा, "महान् रूसियों-जैसे राष्ट्र के लिए, जिसने अपने प्रति अन्य जातियों की घोर घृणा को उत्तेजित किया है, सतर्कता आवश्यक है। इतना ही नहीं, हममें से बहुतों में 'महान् रूसी अन्धदेशभक्त' का वास है और उसका हमें सामना करना होगा।"[1]

इसमें कोई शक नहीं कि गैर-कम्युनिस्टों द्वारा शासित होने पर लेनिन को स्वतन्त्र जार्जिया, यूक्रेन या पोलैंड पर हमला करने में कोई संकोच नहीं होता; इस माने में वह सच्चा 'लेनिनवादी' था। लेकिन ज्योंही छोटे-छोटे राष्ट्र सोवियत राज्य में विलीन हो जाते और उनकी सरकारें कम्युनिस्ट हो,

---

१. See Lenin, Collected Works (3rd Russian ed.) XXIV-155; Socialist Courier (Berlin) December, 1923, for this and following quotations.

जातीं, तब वह महसूस करता कि रूसी बहुमत को बुद्धिमानी से आगे बढ़ना चाहिए।

उसने स्तालिन, डीजेर्जिन्स्की (Dgershinsky) और ओर्डजोनिकिद्जे (Ordzhonikidse) पर काकेशियन कम्युनिस्टों के प्रति उनके व्यवहार के लिए तीव्र प्रहार किया। क्रोध में आकर उसने उन्हें 'असली रूसी नृशंस और मूर्ख पुलिसमैन' (true-Russian derzhimordas) बनाया। उसने यहाँ तक कहा कि "ये तीनों कम्युनिस्ट नेता खुद तो गैर-रूसी हैं, लेकिन एक गैर-रूसी रूसी, सच्चे रूसी के आवेश में सर्वदा सीमा पार कर जाता है।"

लेनिन ने लिखा, "स्तालिन की जल्दबाजी, उसका सैनिक रोष, कुख्यात 'सामाजिक अन्धभक्ति' के विरुद्ध उसका क्रोध, सर्वदा अशुभ सिद्ध हुए हैं। स्तालिन की ओर संकेत करते हुए लेनिन ने लिखा—"दूसरों पर सामाजिक अन्धभक्ति का आरोप लगाने वाला एक जार्जियन (जब कि वह स्वयं न सिर्फ सामाजिक अन्धभक्त है, बल्कि एक जालिम बेवकूफ पुलिसमैन के समान भी है) वास्तव में सर्वहारा वर्ग की एकता के हितों का उल्लंघन करता है।" लेनिन को सबसे अधिक डर इस बात का था कि "कहीं ऐसी स्थिति न पैदा हो जाय कि जिसमें ऐसा मालूम हो कि हम उत्पीड़ित जातियों के प्रति एक तरह का साम्राज्यवादी रुख अपना रहे हैं।"

अभी हाल के वर्षों से एक दोहरी राष्ट्रीयता का विकास हो रहा है; अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में सम्पूर्ण सोवियत यूनियन ने एक बहु-राष्ट्रीय इकाई के रूप में काफी प्रगति की है, भूमि और क्षेत्र प्राप्त किये हैं और नये-नये दावों के लिए दबाव डाले हैं। घरेलू मामलों में सोवियत यूनियन के रूसी तत्वों को बढ़ावा दिया गया है और उनकी सराहना की गई है। साम्राज्यवादी और राष्ट्रीय दोनों ही अवस्थाओं में, रूस की १९१७ से पूर्व की विचारधाराओं की ओर लौटने की नई प्रवृत्ति का संकेत मिलता है।

फिर भी पुराने कम्युनिस्ट-सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीयतावाद को एकदम उलट नहीं दिया गया। उसे स्तालिनवाद के नये सैद्धान्तिक समन्वय में स्थान दिया गया। चूँकि रूस कम्युनिज़्म का निर्माता, महान् ज्योति का वाहक

और प्रत्येक गुण का अवतार है, इसलिए रूसी हितों की सेवा करना सर्वश्रेष्ठ अन्तर्राष्ट्रीयतावाद है। रूस का हित-साधन करना हर राष्ट्र, हर गुट और हर व्यक्ति के लिए सर्वोच्च नियम है। (Salus Russian Supreme lex) जब कभी बाहर के दूसरे राष्ट्र, कम्युनिस्ट-पार्टियाँ या व्यक्ति इस असमंजस में पड़ जाते हैं कि अपने देश के कतिपय हितों को सोवियत यूनियन के हितों के लिए कुरबान किया जाय या नहीं, उस समय मास्को उन्हें कुरबानी के लिए हुक्म देता है। अन्तर्राष्ट्रीयता की नई कल्पना के अनुसार सोवियत यूनियन के लिए असमंजस की कोई बात नहीं है; सोवियत यूनियन से कुरबानी के लिए नहीं कहा जा सकता। सोवियत यूनियन को तो केवल लेना, लाभ उठाना, मुनाफ़ा कमाना और विजय प्राप्त करना है।

यहीं पर सिद्धान्तों और आदर्शों का अन्त हो जाता है। जो दूसरे राष्ट्रों के लिए वर्जित है, वही सोवियत यूनियन के लिए मान्य है। विदेशी प्रदेश के जिस अधिकार की एक बार लेनिन और स्तालिन ने घोर निन्दा की थी, वही आज सोवियत यूनियन के लिए प्रगति का सूचक बन गया है। जिस 'हित के क्षेत्रों' की पहले गला फाड़-फाड़कर निन्दा की जाती थी, वही अब वांछनीय हैं, बशर्ते उनसे सोवियत शासन के उद्देश्य की पूर्ति हो।

इन घटनाओं का एक रूप तो आमतौर पर दिखाई पड़ता है, किन्तु दूसरा रूप अभी प्रच्छन्न है। आज सारा ध्यान सोवियत सिद्धान्तों और नीतियों की नई प्रवृत्तियों के जागतिक रूप पर ही केन्द्रित है और आन्तरिक मामलों पर उनके प्रभाव की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। सच पूछा जाय तो विदेशी नीति के रूप में ही विशाल कम्युनिस्ट राष्ट्रवाद तेजी से फलाफूला और बढ़ा है और आज वह सबसे भयंकर समस्या बन गया है। रूस के विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों में यह प्रक्रिया धीमी, शान्त और प्रच्छन्न-सी रही है। यह पुष्प अभी तक पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ है, उसकी कुछ पंखड़ियाँ अभी भी अविकसित हैं।

फिर भी रास्ता खुल गया है और दिशा स्पष्ट हो गई है।

: ५ :

सामाजिक क्रान्ति सम्पन्न

नये राष्ट्रवाद के अभ्युदय के साथ-साथ युद्ध के बाद के वर्षों में सामाजिक प्रणाली की स्थिरता और दूसरी पीढ़ी की तेज प्रगति रूस की विशेषता रही है।

मौजूदा सामाजिक ढाँचे के बारे में कोई नई बात नहीं है। समाज के विभिन्न स्तर—उच्च और निम्न वर्ग के बीच के सम्बन्ध, उनके जीवन का स्तर, सामाजिक स्तर, एक-दूसरे के प्रति भावना सभी-कुछ मूलतः युद्ध के पूर्व जैसे हैं। कोई आमूल परिवर्तन नहीं हुआ है। नवीनता केवल इस प्रणाली की स्थिरता ही है।

ऊँचे तबकों के लोगों को यह विश्वास-सा हो गया था कि एक के बाद दूसरी युद्धोत्तर व्यवस्था में वे पूर्ण रूप से अपनी पूर्व स्थिति में पहुँच जायँगे। कुछ तो यह भी आशा करने लगे कि कौल्खोज-प्रणाली (Kolkhoz System) ढीली कर दी जायगी और देहाती अर्थ-व्यवस्था में कुछ-न-कुछ 'निजत्व' की अनुमति दी जायगी। बहुतों ने यह उम्मीद की कि हर किसान-परिवार को एक घोड़ा रखने की इजाजत दी जायगी। दूसरों को यह विश्वास था कि वह सख्त कानून खत्म कर दिया जायगा, जिसके अनुसार मजदूरों और कर्मचारियों को इच्छानुसार अपना काम बदलने का अधिकार नहीं रह गया है। बाहरी देशों के लोगों की तरह रूस में भी बहुत-

से लोग यह सोचने लगे थे कि अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के नये आदेश का स्वाभाविक अर्थ है कि सेना, शस्त्रीकरण और नौकरशाही की शक्ति में कमी की जायगी और लाखों पोलित-कमिस्सारों, प्रचारकों, एम० वी० डी० कर्मचारियों और सैनिक अफ़सरों को उनके विशेष पदों से वंचित किया जायगा। लेकिन इस तरह की कोई चीज़ नहीं हुई; सामाजिक-प्रणाली की दृढ़ता और स्थिरता के साथ 'कम्युनिज़्म' का महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक विकास पूरा हो गया।

कम्युनिस्ट-विश्वास की गहराई में भक्ति और शक्ति के स्रोत-स्वरूप दो महान् नैतिक-सामाजिक सिद्धान्त निहित हैं। प्रथम अमीर और गरीब के बीच उग्रभेद और अधिकांश मानव का दीन-दुखी होना नैतिक रूप से ज़ुल्म है। द्वितीय दूसरे इन्सानों को भाड़े का टट्टू बनाने, उनकी मेहनत खरीदने और उससे फायदा उठाने के लिए भौतिक साधनों—'उत्पादन के साधनों'—पर कब्जा करना अनैतिकता है।

१६१७ के पहले रूस में क्रान्तिकारी आन्दोलन को सबसे अधिक बल इस आशा और आश्वासन से मिलता था कि रूसी जनता के अविश्वसनीय निम्न जीवन-स्तर को राजनीतिक क्रान्ति के द्वारा ऊँचा उठाया जा सकता है और उठाया जायगा। जान पड़ता था कि सड़ी-गली शासन-प्रणाली सड़ी-गली अर्थ-व्यवस्था और शोषण, कर और शिक्षा की जर्जरित प्रणाली का उद्गम और उत्पादन दोनों होती है। खास तौर पर यह उम्मीद की गई थी कि जमींदारों की जमींदारियों के बटवारे से किसानों की दिक्कतें और परेशानियाँ दूर हो जायँगी। रूसी ट्रेड यूनियनें उन्नति और विकास की स्वतन्त्रता के कारण मजदूरों की मजदूरी के स्तर को और ऊँचा उठाने में समर्थ होंगी। क्रान्ति के समय किसानों और औद्योगिक मजदूरों की संख्या लगभग १५ करोड़ थी, जो रूस की कुल आबादी का लगभग ८५ प्रतिशत होती है। इस सम्बन्ध में रूस के क्रान्तिकारी आन्दोलन के विभिन्न सैद्धान्तिक दलों के बीच मतभेद थे। पापुलिस्टों (Narodniki) के लिए भावी परिवर्तन का मुख्य उद्देश्य किसानों का भाग्य सुधारना था। मार्क्सवादी, जिनमें लेनिन भी था, अपने को ही मजदूरों का आन्दोलन समझते थे; उन्हें आशा

थी कि क्रान्ति के बाद किसानों और मजदूरों का जीवन-स्तर ऊँचा होगा।

यदि कोई यह आवाज उठाता कि भावी क्रान्ति से केवल मुट्ठी-भर लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण सुधार होगा और केवल ५·८ प्रतिशत लोगों को पुराने उच्च वर्ग के उत्तराधिकारी के रूप में लाभ पहुँचेगा, तो उसकी बात का बड़े रोष के साथ खण्डन किया जाता। १६१८-२५ की क्रान्ति समानतावाद और पूँजीवाद के विरुद्ध अपने सिद्धान्त के लिए प्रसिद्ध थी। निजी उद्योग और भूमि का राष्ट्रीयकरण किया गया, जिसका उद्देश्य जीवन-स्तर को समान बनाना था। इस सम्बन्ध में सैकड़ों आदेश और निर्देश दिये गए। तेजी से मकसद पूरा करने के लिए काफी खून बहाया गया। यदि 'समानतावाद' के मामले में कहीं अपवाद करना पड़ा तो उसे शरमनाक समझा जाता था और उसे गुप्त रखा जाता था।

क्रान्ति के इस रास्ते पर चलते हुए रूस में जो पहला कमजोर और अनिश्चित कदम उठाया गया, वह मुझे अच्छी तरह याद है। १६१८ में रेलवे सर्विस में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया गया। अमीरों के लिए पहले और दूसरे दर्जे के डब्बों और गरीबों के लिए तीसरे दर्जे और 'बाक्सकार' के डब्बों के बीच का पुराना भेदभाव मिटा दिया गया और एक ही भाड़ा चालू किया गया। कुछ ही सप्ताहों में बिना किसी अग्रिम सूचना के प्रत्येक ट्रेन में एक डब्बा ऐसा रहता, जिस पर 'प्रतिनिधियों के लिए' चिह्न लगा रहता। यह डब्बा कुछ ज्यादा आरामदेह होता जो जनता द्वारा चुने गए स्त्री और पुरुष प्रतिनिधियों के लिए रिजर्व रहता। ये प्रतिनिधि सम्मेलनों या सभाओं के लिए यात्रा करते, जिनकी क्रान्ति के बाद धूम मची हुई थी; या ये डब्बे ऐसे व्यक्तियों के लिए होते, जो सरकारी या पार्टी के काम से प्रान्तीय सोवियतों या मास्को को जाते। तर्क यह था कि जनता द्वारा चुने गए और जनता का विश्वास प्राप्त करने वाले प्रतिनिधियों को यात्रा के समय कुछ आराम करने का हक है। फिर तो हर एक कर्मचारी, चाहे चुना हो या नहीं, प्रतिनिधि के रूप में सफर करने लगा। १६१८-२१ के अगणित प्रतिनिधियों का यह विश्वास था कि उन्होंने पहले जो-कुछ कष्ट

और संकट भोगे थे, उसी के पुरस्कार-स्वरूप ऐतिहासिक न्याय ने उनके लिए ये अधिकार प्राप्त किये हैं। पहले-पहल समानता के वेष में 'अधिकार' प्रकट हुआ।

मुझे वह भी समय स्मरण है जब कि उच्चतम राज्य-अधिकारियों को कुछ मामूली आराम दिया जाने लगा, उनके काम के लिए प्राइवेट कमरा और कार। उन्होंने महसूस किया कि ये आराम उनकी आत्मा और उनके अनुयाइयों की इच्छा के अनुकूल हैं। लेनिन कभी भी साफ-सुथरा कपड़ा नहीं पहनता था। उसके कूटनीतिज्ञों ने बड़े गर्व के साथ ब्रेस्ट-लिटोव्स्क शान्ति-सम्मेलन में मजदूरों की पोशाकों और फटे-पुराने जूतों में परेड की। खर्चीली दावतों और स्वागत-समारोहों को खत्म कर दिया गया। ट्राट्स्की ने अपनी ही ट्रेन में अपने गार्डों और सैनिकों के साथ यात्रा करके जबरदस्त कटुता पैदा कर दी। आज प्रान्तीय कमेटी का प्रत्येक पार्टी-सेक्रेटरी ट्राट्स्की के उस सुख से सौगुना सुख भोग रहा है जिसके लिए ट्राट्स्की की इतनी भर्त्सना की गई थी।

१६२१ के 'नेप' (NEP) से पहले-पहल समानता के सिद्धान्त की उपेक्षा की गई; इससे मुक्त व्यापार की स्थापना हुई और रूस में विदेशी पूँजीपतियों को कुछ मौका मिला। फिर भी, इससे बुनियादी सिद्धान्तों से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हुआ। 'नेप' सोवियत सिद्धान्त के विकास के रूप में नहीं, बल्कि एक साधन, प्राचीन विश्व-प्रथाओं में कूटनीतिक सहूलियत, एक अस्थायी दावघात के रूप में प्रकट हुआ।

बाद में दो प्रवृत्तियों का संघर्ष शुरू हुआ। निजी व्यवसाय और निजी-सम्पत्ति की मनाही हुई, प्रतिबन्ध बढ़ने लगे। १६२० के दशकान्त तक निजी व्यवसाय गैर-कानूनी करार दे दिया गया; अब कोई बैंक नहीं रहा, न कोई औद्योगिक कम्पनी या महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति रह गई।

लेकिन साथ-ही-साथ नये समाज के स्तर धीरे-धीरे तैयार हो रहे थे, समान जनता में से अमीर और गरीब का सामाजिक स्तर विकसित हो रहा था। शीघ्र ही इस प्रक्रिया को सरकारी समर्थन ही नहीं, प्रोत्साहन भी

मिला; अधिक उपार्जन की सम्भावना को एक शक्तिशाली आर्थिक प्रेरक समझा गया। अब समाज में घोर अमीरी और घोर गरीबी के स्तर-निर्माण की ओर से 'कम्युनिज़्म' ने आँखें मूँद लीं; यही था विडम्बनापूर्ण परिणाम तीन दशकों के विकास का।

जब कम्युनिस्ट नेताओं ने देखा कि परिवर्तन के परिणामस्वरूप, 'प्रथम' 'अन्तिम' बन गया और 'अन्तिम' 'प्रथम' नहीं बना, तब उन्हें ज़रा भी चिन्ता नहीं हुई। केवल थोड़े से लोग आगे बढ़ने में समर्थ हुए। भोली-भाली, आज्ञाकारी और मूक जनता के लिए क्रान्ति ने अनेक परिवर्तन किए, किन्तु शायद ही किसी से उसकी स्थिति सुधरी। समानता के नाम पर एक प्राचीन, जर्जरित वर्ग के स्थान पर नये वर्ग की स्थापना हुई। "मानव समाज की समानता और शोषण का अन्त" के नारे नये थे, किन्तु परिवर्तन का वास्तविक अर्थ पहले ही जैसा था—"यहाँ से हट जाओ, ताकि मैं तुम्हारा स्थान ले सकूँ।" पुराने वर्गों का उन्मूलन न्याय-संगत, किन्तु असामयिक था। नये उच्च वर्ग की स्थापना का ढंग सुन्दर नहीं था। छिपाने के लिए लौह-आवरण (Iron curtain) की जरूरत थी।

आज कम्युनिस्ट-पार्टी की केन्द्रीय समिति के सैनिक-अधिकारियों का प्रबल शासन सुव्यवस्थित रूप से नये प्रभु-वर्ग का निर्माण कर रहा है। वर्षों से स्तालिन एकमात्र प्रभु बना हुआ है; नये 'कमाण्डिंग स्टाफ' के निर्माता के रूप में उसने जो कार्य किया उससे उसे असीम अधिकार और जनता की अगाध श्रद्धा प्राप्त हुई। लेनिन के ज़माने से ही स्तालिन को व्यक्तियों के मामले में नियुक्ति और बरखास्तगी का अधिकार प्राप्त है। उसने कुछ को अधिकार और गौरव से विभूषित किया, कुछ को इनसे वंचित किया और कुछ दूसरों को मौत के हवाले किया; जो बचे हैं, वे अपने जीवन के लिए स्तालिन के कृतज्ञ हैं; जो मर गए, वह तो मर ही गए।

जासूसी, निन्दा, गिरफ्तारियाँ, शुद्धि, जेल और फाँसी की याद बराबर लोगों में बनी रहती है। कोई डरता है तो कोई हुक्म मानता है; हुक्म मानता है, लेकिन परिवर्तन चाहता है। कोई अपनी ही इच्छा को भी ठीक-

ठीक नहीं जानता, लेकिन सर्वोपरि सुरक्षा और अपेक्षाकृत अधिक मानव अधिकार है।

पिछलग्गू देशों में युद्ध के बाद नये-नये कम्युनिस्टों के हाथ में सत्ता आई और उन्होंने साधारण आन्दोलन के द्वारा एक विचित्र नई अवस्था पैदा की। उन्होंने समानता, शीलता और संयम के कँटीले मार्ग पर चलने की कोशिश नहीं की। एक बार सत्ता में आ जाने पर उनकी पार्टियाँ समानता का दावा नहीं करतीं।

अपनी ही जनता और विदेशी प्रेक्षकों की आँखों के सामने वे नौकरों के झुण्ड के साथ भोगविलासमय महलों में रहते, निजी रेलवे डिब्बे और वायुयान प्राप्त करते और बड़ी-बड़ी दावतों का इन्तजाम करते।

पूर्व जर्मनी के साधारण कम्युनिस्टों ने जब सुना कि किस तरह नये कम्युनिस्ट-नेता युद्धोत्तर जर्मनी की दीन-हीन दशा में अपना निजी जीवन बिता रहे हैं और किस तरह अच्छी-से-अच्छी 'राष्ट्रीय कृत सम्पत्ति', जो अब 'जनता की सम्पत्ति' बन चुकी है, जर्मन भूमि के स्तालिन के नक्कालों को दी जा रही है, तो उन्हें बड़ा धक्का लगा। शीघ्र ही नये प्रेसिडेण्ट विल्हेल्म पीक (Wilhelm Pieck) विल्हेल्म तृतीय के नाम से बदनाम हो गए और उनकी जमींदारी 'पीकिस्तान' के नाम से पुकारी जाने लगी।

हाल लेहमान (Hal Lehrman) ने 'लाइफ' नामक पत्रिका में रूमानिया के उच्च कोटि के नेता आना पौकर के जीवन-स्तर का स्पष्ट रूप से चित्रण किया है :

निवास-स्थान के मामले में 'पौकरों' को बड़ा गर्व है। उनके हाथ में ४७ कमरों का एक राजप्रासाद, स्नागोव (Snagov) में झील के तट पर एक बंगला और नगर के तीन मकान हैं, जिनमें से एक में बिजली से चलने वाले दरवाजे और २४ सीटों का भोजनालय है, दूसरा एक वैभवशाली 'विला' है जिसे बादशाह केरोल ने एक बार मागडा लुपेस्कू को दिया था, तीसरा औषधि के एक बहुत बड़े व्यापारी की सम्पत्ति थी, जिसमें 'नग्न-दीवारों' के साथ रोमन ढंग का एक विशाल स्नान-गृह है। उसका मालिक

स्थायी रूप से पेरिस में रहता है। अपने मौजूदा घृणा के पात्र, मार्शल टिटो की तरह, आना ने एक अल्साटियन पुलिस-कुत्ती पाल रखी है जो उनकी विभिन्न सम्पत्तियों की रक्षा के लिए तैनात सैनिक टुकड़ियों की मदद करती है।

रूस से लौटते ही श्रीमती पौकर राजधानी के सबसे बड़े और सबसे मँहगे गोदाम में घुसीं और अपने लिए मँहगे कपड़े, जूते और हैण्डबेग ढेर-से खरीद लिए। बेचने वाली युवती की डबडबाई आँखें देखकर वह गुर्रा पड़ीं, "क्या तुम समझती हो कि एक कम्युनिस्ट चीथड़ा पहनकर रहेगा ?" आज वह रूमानिया के सुन्दर वस्त्र धारण करने वालों में हैं—यह ऐसा विषय है जिस पर कोई वफादार भी खुलकर प्रसन्न नहीं हो सकता। कोई उनकी रुचि की टीका नहीं करता, वह खरचीली हैं किन्तु दबी हुई हैं। उनका दुर्भाग्य यही है कि वह खूब तड़क-भड़क के साथ नहीं रह सकतीं, फिर भी, नये-नये फैशनों से अपने को खूब सुसज्जित रखने का प्रयत्न तो करती ही हैं। वह प्रायः नियमित रूप से बाजार जातीं और बूखारेस्ट के सुन्दरतम वस्त्र-गृह वीसर (Wieser) और पश्मीना की सर्वोत्तम दुकान राइख (Reich) से सामान खरीदती हैं। विमान से पेरिस की खास-खास चीजें मँगाई जाती हैं।[१]

सभी पिछलग्गू देशों में कम्युनिस्ट-पार्टी ने समाज के पुराने चुने-चुनाए लोगों को हटा दिया। फिर अपना राजनीतिक कार्य पूरा करने के लिए उसने अपने सदस्यों के लिए विशेषाधिकारों की व्यवस्था की; अन्त में नई व्यवस्था सुदृढ़ होने लगी, जिस तरह ज्वालामुखी के विस्फोट के बाद 'लावा' जमने लगता है। नया चुनाव हुआ। वर्ग अपने लिए न्यस्त-स्वार्थ प्राप्त करने लगा और नई आदतें डालने लगा।

सामाजिक वर्ग कायम रहे; उनके मौलिक गठन में परिवर्तन हुआ; उच्च वर्ग के पुराने लोगों में नया खून आने लगा; पूर्वी यूरोप और सुदूर-पूर्व में क्रान्ति का यही मुख्य प्रभाव पड़ रहा है।

१. Life, January 3, 1949.

सरकारी कथन के विपरीत, पूर्व में 'साधारण जनता के हित' के आस-पास नहीं, बल्कि 'मुट्ठी-भर लोगों के हित' के आसपास सामाजिक क्रान्ति हो रही है। युग-युग की भुखमरी और घोर गरीबी का अन्त करने के लिए, जिसका पश्चिम में नाम नहीं है, यदि अस्थायी तौर पर स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाना पड़े और आतंकवाद का भी सहारा लेना पड़े, तो एक राष्ट्र उसे क्षमा कर सकता है। लेकिन सच पूछा जाय तो पिछलग्गू राज्यों और रूस में भी स्थिति ज्यों-की-त्यों कायम है। आर्थिक व्यवस्था बदल गई है, राजनीतिक प्रणाली को उलट दिया गया है, किन्तु राष्ट्रों के मुख्य स्तम्भ कोटि-कोटि जनता के लिए तो आज भी पहले की तरह वही अकाल, वही कर-भार और अच्छे मकानों तथा मामूली-से-मामूली जरूरतों की पूर्ति का वही सवाल अब भी कायम है।

: ६ :

सोवियत नेता और दूसरी पीढ़ी

इन पृष्ठों में कतिपय रिपोर्टें हैं, जो नये सोवियत नेताओं के जीवन-स्तरों और रीति-रिवाजों पर विस्तृत प्रकाश डालती हैं। इस विषय से सम्बन्धित मौखिक और लिखित विवरणों से इन्हें अत्यन्त विश्वसनीय समझकर चुना गया है।

सामाजीकृत औषधि का सोवियत विवरण

२० वर्ष के अनुभवी रूसी डॉक्टर जार्जी अलेक्जेण्ड्रोव (Georgii Alexandrov) ने कहा है, "मैंने जर्मनी, फ्रान्स और अमेरिका में अच्छे और सुन्दर अस्पताल देखे हैं, किन्तु क्रेमलिन-अस्पताल-जैसा सुसज्जित और वैभवशाली अस्पताल कहीं भी नहीं देखा। वह डॉक्टरों और व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता, प्राइवेट नौकरों की नियुक्ति और भोजन के गुण और प्रकार की दृष्टि से देश के किसी अस्पताल से कहीं अच्छा है और मेडिकल सामग्री तथा दवाओं की दृष्टि से दुनिया के किसी अस्पताल से खराब नहीं है।"

सोवियत स्वास्थ्य-मन्त्रालय के पास काफी स्थानीय और जिला स्वास्थ्य-एजेंसियाँ हैं; स्थानीय क्रेमलिन-अस्पताल मन्त्रालय से बिलकुल मुक्त है; इसका एक पृथक् और महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उस पर सोवियत नेताओं की स्वास्थ्य-रक्षा की जिम्मेदारी है। १९२० के दशकान्त के बाद से व्यास प्रवृत्तियों के अनुसार क्रेमलिन में काम करने वाले राज्य-कर्मचारियों को कई

वर्गों में बाँट दिया गया है—प्रथम श्रेणी में तीस-चालीस उच्चतम कोटि के सोवियत पदाधिकारी हैं; द्वितीय श्रेणी में कम्युनिस्ट-पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य, सोवियत यूनियन के मन्त्री (राष्ट्रीय प्रजातन्त्रों के नहीं), कुछ जन-कलाकार (People's artists) और उच्चकोटि के लेखक हैं। सभी जन-साधारण से कहीं अधिक अधिकारों का उपभोग करते हैं। जबरदस्त रोब-दाब कायम है और मन्त्रि-परिषद् के आदेशों के अनुसार व्यक्तिगत परिवारों का वर्गीकरण किया जाता है।

प्रथम कोटि के प्रत्येक अधिकारी के पास अपना डॉक्टर होता है, जिसे अपने मरीज और उसके परिवार की देखभाल के अलावा, न तो दूसरे मरीजों को देखना पड़ता है और न उस पर कोई दूसरी मेडिकल जिम्मेदारी होती है। देखभाल का मतलब होता है रोगी की दिनचर्या में रुचि याने उसकी रहन-सहन की दशा, उसकी धूम्रपान की आदत, उसकी यात्रा की व्यवस्था, उसका मनोरंजन, समय-समय पर सभी तरह के परीक्षणों और विश्लेषणों द्वारा उसके स्वास्थ्य की जाँच, जरूरत पर उच्चतम चिकित्सा-अधिकारियों से, जिनमें विदेशी डाक्टर भी हैं, परामर्श आदि में दिलचस्पी। डॉक्टर को अपने रोगी के साथ उसके सेक्रेटरी और 'एम० वी० डी०' के अंगरक्षक के साथ यात्रा पर भी जाना पड़ता है। क्रेमलिन के डॉक्टरों को शपथ लेनी पड़ती है कि डॉक्टर के रूप में वे क्रेमलिन में जो-कुछ भी जानेंगे, उसे प्रकट नहीं करेंगे।

दूसरी श्रेणी के क्रेमलिन-नेताओं के डॉक्टर को दूसरों की भी सेवा करनी होती है, यहां एक डॉक्टर को पाँच या छः परिवारों की सेवा करनी होती है। तीसरी श्रेणी में एक डॉक्टर को १५ से २० परिवारों की देखभाल करनी होती है। अस्पताल में भरती होने की जरूरत पड़ने पर क्रेमलिन-अस्पताल में केवल प्रथम कोटि के नेता पहुँच सकते हैं। दूसरों को या तो स्टारोपंस्कैया (Staropanskaia) स्ट्रीट के अस्पताल में जाना पड़ता है या अरबाट (Arbat) के अस्पताल में। ये दोनों ही अस्पताल मास्को की जनता के लिए नहीं हैं।

मुख्य क्रेमलिन-अस्पताल और चिकित्सालय क्रेमलिन के निकट कोमिण्टर्न स्ट्रीट में है। इनके कब्जे में कई इमारतें हैं, यद्यपि अस्पताल में १००-१२० मरीजों के लिए ही स्थान है। कालीनों, चित्रों और दर्पणों से सुसज्जित कमरों में बहुत से प्राइवेट नौकर काम करते हैं। उन्हें पुष्प देने के लिए दो माली सर्वदा व्यस्त रहते हैं। पाकशाला अच्छे और स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था करती है और अगर डॉक्टर को आपत्ति न हो तो उसे रोगी की सभी इच्छाओं को तृप्त करना पड़ता है। जाड़े में इन 'मरीजों' के लिए काकेशस से ताजी बेरी, फल और शाकभाजी मंगाई जाती हैं, जो रूस में अकल्पित भोग-विलास की चीजें मानी जाती हैं। क्रेमलिन-अस्पताल की अन्य आकर्षक वस्तुओं में उसके मेडिकल यन्त्र और दवाओं के ढेर हैं। साधारण सोवियत-अस्पतालों में सीमित मात्रा में देशी दवाएँ एकत्र की गई हैं, किन्तु क्रेमलिन-अस्पताल के दवाखाने में 'सुल्फा', पेन्सिलिन, 'स्ट्रेप्टोमीसीन' आदि विदेशी दवाएँ भी भरी हुई हैं।

क्रेमलिन की प्रणाली में स्वास्थ्य-लाभ के लिए तथा आराम करने वालों के लिए भी स्थान निश्चित किये गए हैं। ये स्थान दक्षिण में हैं—क्राइमिया (फोरोस) में और काकेशस (सोची, किस्लोवोड्स्क, गाग्री, तीशाखलतूबा (Tskhakhaltuba) में। फोरोस के सेनेटोरियम में, जहां जार का महल था, 'ए' और 'बी' दो हिस्से हैं। १९३६ में 'ए' हिस्से में मरीज का रोजाना खर्च ३५ रूबल था और 'बी' हिस्से में २२ रूबल (शराब छोड़कर) था। इसे समझने के लिए यह जान लेना जरूरी है कि उस समय फोरोस में सफाई करने वाली महिला का मासिक वेतन ९० रूबल था। सेनेटोरियम का क्षेत्र बाहरी दुनिया से बिलकुल कटा हुआ है और बिना विशेष परमिट के वहां किसी की भरती नहीं हो सकती। फाटकों पर सादी पोशाक में बहुतेरे पुलिस के एजेण्ट घूमते रहते हैं और दूसरे पहरा देते रहते हैं।

सेनेटोरियम में दोपहर के भोजन के समय ७ या ८ तरह को व्यंजन बनते हैं। बावर्ची को भोजन की विविधता के लिए सावधानी बरतनी पड़ती

है और 'पेतुख' (Petukh)-जैसा दुर्लभ भोजन, जो कभी-कभी ज़ार के दस्तरख्वान पर दिखाई पड़ता था, और 'कविग़र' (Caviar) से भारी 'पट्टियां' (Patties) तैयार करनी पड़ती हैं। भूख जाग्रत करने के लिए पुराने तहखानों में अच्छी-से-अच्छी शराब काफी मात्रा में जमा रहती है। आसपास के पार्क इतने सुन्दर और मनोहर हैं कि ज़ार के जमाने में ऐसे कभी नहीं थे। सरोवरों मे हंस मस्ती से चहक रहे हैं, वृक्षों की टहनियों से दुर्लभ पक्षियों के घोंसले लटक रहे हैं। मेहमानों की खातिर कसे हुए घोड़े और यूरोपियन कारें, जिनमें ब्रिटिश रोल्स-राइस भी हैं, हर वक्त मौजूद रहती हैं।

मरीज़ के एक-एक वहम को तृप्त करना पड़ता है। एक सोवियत अधिकारी की युवती पत्नी ने अपने डॉक्टर से कहा कि वह फ्रेंच 'प्रुन्स' के अलावा किसी दूसरी दस्तावर दवा का इस्तेमाल नहीं कर सकती। सेनेटोरियम में फ्रेंच 'प्रुन्स' न होने पर तुरन्त मास्को से मंगाने का हुक्म दिया गया और दूसरे दिन सुबह होते-होते विमान द्वारा दवा पहुँच गई। कुछ ही सप्ताह बाद एक दूसरे पदाधिकारी की पत्नी के पेट के मांसल पर सुबह कसरत करते समय बल पड़ गया और उसे देखने के लिए मास्को से विमान द्वारा एक सर्जन तथा एक नारी-विज्ञान-वेत्ता भेजे गए। अभी एक ही वर्ष पूर्व वह महिला एक 'टाइपिस्ट' का काम करती थी और एक वर्ष बाद वह फिर 'टाइपिस्ट' बनी। उसका पति स्पेनिश गृह-युद्ध में कुछ गलतियों के कारण, जिसमें उसका भी हाथ था, सोवियत अधिकारियों द्वारा निकाल दिया गया और फाँसी पर लटका दिया गया।

इसी तरह सशस्त्र-सेना-मन्त्रालय के अपने डॉक्टर, अपने अस्पताल और अपने सेनेटोरियम हैं और उसका मुख्य अस्पताल ज़्नेमेन्का स्ट्रीट (Znamenka street) में है। सुरक्षा-विभाग में भी नागरिक-विभाग की तरह दवा की व्यवस्था अधिकारियों के पदों के अनुसार होती है। एम० वी० डी० (M. V. D.) की देश-भर में अलग ही चिकित्सा-व्यवस्था है और उसका मुख्य अस्पताल मास्को में वरसानोफीव्स्की (Varsanofievsky) में है।

साधारण जनता के लिए चिकित्सा की व्यवस्था क्रेमलिन सुरक्षा-मन्त्रालय और 'एम० वी० डी०' की पृथक् व्यवस्था से बिलकुल भिन्न है। सोवियत सार्वजनिक स्वास्थ्य-व्यवस्था में एक डिस्ट्रिक्ट की आबादी के पीछे (मास्को में दो हजार, तीन हजार जनता पर) एक अस्पताल है, जिसमें साधारणतया एक डॉक्टर और एक नर्स होती है। इन अस्पतालों के डॉक्टर तीन घण्टे में तीस या इससे भी अधिक मरीज देख सकते हैं; वे अपने आफिसों में इससे अधिक समय नहीं लगा सकते, क्योंकि उन्हें जरूरत पर घर-घर भी जाना पड़ता है। इस तरह एक मरीज पर औसतन ६-७ मिनट लगते हैं, जिसमें से आधा समय तो 'बुलेटिन' नामक एक 'फार्म' भरने में चला जाता है। इसी 'फार्म' से एक मजदूर को अपनी बीमारी के समय कार्यमुक्त रहने का अधिकार मिलता है। इसके बिना उसे गैरहाजिरी की सजा भोगनी पड़ती है। डॉक्टर को आफिस में इतना तेज काम करने की जरूरत होती है कि मरीज की सावधानीपूर्वक जांच-पड़ताल प्रायः असम्भव हो जाती है।

यही बात घर-घर जाकर दवा करने की भी है। अपना 'ओवरकोट' पहने ही डॉक्टर कुछ प्रश्न करता है, मरीज की परीक्षा करता है, 'बुलेटिन' भरता है, तुरन्त ऑर्डर देता है और फिर दूसरे घर के लिए रवाना हो जाता है।

साधारण जनता में से इने-गिने लोग ही प्राइवेट तौर पर डॉक्टरों से इलाज करा सकते हैं, क्योंकि अस्पतालों की संख्या और इस तरह की घर-घर की व्यवस्था पर्याप्त है।

आम दवाखानों में बहुतेरी दवाओं की कमी रहती है। वास्तव में साधारण जनता के लिए विदेशी दवाएँ दुर्लभ हैं। थोड़े से लोगों को चोर-बाजार में विदेशी दवाएँ मिल जाती हैं, लेकिन बहुत मँहगी मिलती हैं। जिस समय युद्ध छिड़ने ही वाला था, उस समय एक ग्राम 'सल्फोडीन' की कीमत १०००रूबल थी।

क्राइमिया और काकेशस में साधारण रूसियों के लिए स्वास्थ्य-लाभ-गृह बने हुए हैं। इनकी देखभाल की जिम्मेदारी मुख्यतः ट्रेड यूनियनों के

हाथ में और कुछ स्वास्थ्य-मन्त्रालय के हाथ में है। रूसी नेताओं के लिए बने सेनेटोरियम से वे इतने ही भिन्न हैं जितने साधारण अस्पताल क्रेमलिन अस्पताल से भिन्न हैं। साधारण स्वास्थ्य-गृहों में सामानों की कमी, खाने के बरतनों और शीशे के बरतनों की कमी होती है, 'लिनेन' आम तौर पर रहता है; बिजली के बल्ब भी काफी नहीं हैं। भोजन मामूली या खराब होता है।

क्रान्ति के समय से सोवियत दवाओं की मात्रा बहुत बढ़ी है। डॉक्टरों की संख्या चौगुनी हो गई है। जिन क्षेत्रों में पहले दवा की कोई व्यवस्था नहीं थी, वहाँ अब चिकित्सा की व्यवस्था है। लेकिन गुण की दृष्टि से, जहाँ तक साधारण जनता का सम्बन्ध है, सोवियत दवाओं में घोर पतन हुआ है। विशेषकर १९३० के सुधार के समय से डॉक्टरों की शिक्षा और 'ट्रेनिंग' के सम्बन्ध में और भी पतन हुआ है।

नगरों में चिकित्सा की व्यवस्था अत्यन्त भयंकर है। १९२० के दशक के बाद से रूसी नगरों में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है। फिर औद्योगिक कारखानों की अपेक्षा अस्पतालों को कम महत्त्व दिया जाता है और इधर-उधर फैले हुए नगरों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए धन की व्यवस्था अपर्याप्त है। अस्पतालों में भीड़ लगी रहती है और सख्त बीमार मरीजों को भी भरती के लिए तीन-तीन, चार-चार दिन तक इन्तजार करना पड़ता है; अक्सर मरीज इस बीच मर भी जाते हैं। 'टी० बी०' के सेनेटोरियमों में इतनी भीड़ होती है कि एक मरीज साधारणतया केवल दो महीने तक रह सकता है। कभी-कभी यह अवधि चार महीने तक हो सकती है, लेकिन इससे अधिक नहीं बढ़ सकती।

यह कैसी विडम्बना है कि जिस सामाजीकृत औषधि-प्रणाली के बारे में यह सोचा गया था कि इससे स्वास्थ्य-रक्षा के मामले में अमीर और गरीब के बीच की खाई पट जायगी, वह इस सामाजिक खाई को और चौड़ी बनाने में सहायक सिद्ध हुई है। यों तो सर्वत्र मुफ्त चिकित्सा उपलब्ध है, किन्तु सानूप्र (Sanitary Department) का क्रेमलिन अस्पताल तथा

साधारण जनता के लिए चिकित्सा की व्यवस्था क्रेमलिन सुरक्षा-मन्त्रालय और 'एम० वी० डी०' की पृथक् व्यवस्था से बिलकुल भिन्न है। सोवियत सार्वजनिक स्वास्थ्य-व्यवस्था में एक डिस्ट्रिक्ट की आबादी के पीछे, (मास्को में दो हजार, तीन हजार जनता पर) एक अस्पताल है, जिसमें साधारणतया एक डॉक्टर और एक नर्स होती है। इन अस्पतालों के डॉक्टर तीन घण्टे में तीस या इससे भी अधिक मरीज देख सकते हैं; वे अपने आफिसों में इससे अधिक समय नहीं लगा सकते, क्योंकि उन्हें जरूरत पर घर-घर भी जाना पड़ता है। इस तरह एक मरीज पर औसतन ६-७ मिनट लगते हैं, जिसमें से आधा समय तो 'बुलेटिन' नामक एक 'फार्म' भरने में चला जाता है। इसी 'फार्म' से एक मजदूर को अपनी बीमारी के समय कार्यमुक्त रहने का अधिकार मिलता है। इसके बिना उसे गैरहाजिरी की सजा भोगनी पड़ती है। डॉक्टर को आफिस में इतना तेज काम करने की जरूरत होती है कि मरीज की सावधानीपूर्वक जांच-पड़ताल प्रायः असम्भव हो जाती है।

यही बात घर-घर जाकर दवा करने की भी है। अपना 'ओवरकोट' पहने ही डॉक्टर कुछ प्रश्न करता है, मरीज की परीक्षा करता है, 'बुलेटिन' भरता है, तुरन्त ऑर्डर देता है और फिर दूसरे घर के लिए रवाना हो जाता है।

साधारण जनता में से इने-गिने लोग ही प्राइवेट तौर पर डॉक्टरों से इलाज करा सकते हैं, क्योंकि अस्पतालों की संख्या और इस तरह की घर-घर की व्यवस्था पर्याप्त है।

आम दवाखानों में बहुतेरी दवाओं की कमी रहती है। वास्तव में साधारण जनता के लिए विदेशी दवाएँ दुर्लभ हैं। थोड़े से लोगों को चोर-बाजार में विदेशी दवाएँ मिल जाती हैं, लेकिन बहुत मँहगी मिलती हैं। जिस समय युद्ध छिड़ने ही वाला था, उस समय एक ग्राम 'सल्फोडीन' की कीमत १००० रूबल थी।

क्राइमिया और काकेशस में साधारण रूसियों के लिए स्वास्थ्य-लाभ-गृह बने हुए हैं। इनकी देखभाल की जिम्मेदारी मुख्यतः ट्रेड यूनियनों के

हाथ में और कुछ स्वास्थ्य-मन्त्रालय के हाथ में है। रूसी नेताओं के लिए बने सेनेटोरियम से वे इतने ही भिन्न हैं जितने साधारण अस्पताल के मलिन अस्पताल से भिन्न हैं। साधारण स्वास्थ्य-गृहों में सामानों की कमी, खाने के बरतनों और शीशे के बरतनों की कमी होती है, 'लिनेन' आम तौर पर रहता है; बिजली के बल्ब भी काफी नहीं हैं। भोजन मामूली या खराब होता है।

क्रान्ति के समय से सोवियत दवाओं की मात्रा बहुत बढ़ी है। डॉक्टरों की संख्या चौगुनी हो गई है। जिन क्षेत्रों में पहले दवा की कोई व्यवस्था नहीं थी, वहाँ अब चिकित्सा की व्यवस्था है। लेकिन गुण की दृष्टि से, जहाँ तक साधारण जनता का सम्बन्ध है, सोवियत दवाओं में घोर पतन हुआ है। विशेषकर १९३० के सुधार के समय से डॉक्टरों की शिक्षा और 'ट्रेनिंग' के सम्बन्ध में और भी पतन हुआ है।

नगरों में चिकित्सा की व्यवस्था अत्यन्त भयंकर है। १९२० के दशक के बाद से रूसी नगरों में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है। फिर औद्योगिक कारखानों की अपेक्षा अस्पतालों को कम महत्त्व दिया जाता है और इधर-उधर फैले हुए नगरों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए धन की व्यवस्था अपर्याप्त है। अस्पतालों में भीड़ लगी रहती है और सख्त बीमार मरीजों को भी भरती के लिए तीन-तीन, चार-चार दिन तक इन्तजार करना पड़ता है; अक्सर मरीज इस बीच मर भी जाते हैं। 'टी० बी०' के सेनेटोरियमों में इतनी भीड़ होती है कि एक मरीज साधारणतया केवल दो महीने तक रह सकता है। कभी-कभी यह अवधि चार महीने तक हो सकती है, लेकिन इससे अधिक नहीं बढ़ सकती।

यह कैसी विडम्बना है कि जिस सामाजीकृत औषधि-प्रणाली के बारे में यह सोचा गया था कि इससे स्वास्थ्य-रक्षा के मामले में अमीर और गरीब के बीच की खाई पट जायगी, वह इस सामाजिक खाई को और चौड़ी बनाने में सहायक सिद्ध हुई है। यों तो सर्वत्र मुफ्त चिकित्सा उपलब्ध है, किन्तु सानूप्र (Sanitary Department) का के मलिन अस्पताल तथा

इसी तरह के दूसरे थोड़े से अस्पताल सोवियत नागरिकों के एक विशेष वर्ग और उसके परिवारों को विशेष सुविधाएँ प्रदान करने में अपार खर्च कर रहे हैं। स्पष्ट कारणों से सोवियत बजट के इन मदों को कभी खुले आम बताया नहीं गया। वे वास्तव मे समाज के उच्चतम वर्गों की आय में वास्तविक वृद्धि के अंग हैं।

डॉ० अलेक्जण्ड्रोव (Alexandrov) ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि किसी भी पूँजीवादी देश में अमीर और गरीब के बीच खाई इतनी चौड़ी नहीं है, जितनी सोवियत यूनियन में; उसकी सार्वजनिक स्वास्थ्य-प्रणाली से यही स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है।

[1]एनरिक कैस्ट्रो डेल्गाडो ने रूस में अपने युद्ध के वर्षों-सम्बन्धी अपनी पुस्तक में यूराल्स के अन्तर्गत यूफा (Ufa) नगर के दो अस्पतालों का जिक्र किया है। कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के 'प्रेसीडियम' के सदस्य की हैसियत से डेल्गाडो को १९४१ के अन्त में 'कोमिण्टर्न के स्टाफ के साथ यूफा भेजा था। वहाँ उन पर 'प्लूरिसी' (Pleurisy) का हमला हुआ और अपने उच्च पद के कारण उन्हें उस ठसाठस भरे अस्पताल में भी तुरन्त ही एक बिस्तर (Bed) मिल गया। फिर भी, मरीजों के लिए इलाज, भोजन और निवास की ऐसी व्यवस्था थी कि उन्होंने थोड़े ही समय बाद घर जाने की माँग की। हैरान और परेशान होकर उनके स्पेनिश दोस्तों ने उसी शहर के 'एन० के० वी० डी०' (N.K V D.) अस्पताल में उनके तबादले का इन्तजाम किया। लड़ाई तथा भोजन और आदमियों के साधारण अभाव के बावजूद इस अस्पताल की हालत बहुत अच्छी थी। डेल्गाडो को जरूरी दवाएं दी गईं— ऐसी दवाएँ जो १९४२ में भोगविलास की चीजें मानी जाती थीं, जैसे दूध के साथ कॉफी और सिगरेट मनमानी दी जाती थीं; 'नर्सिंग' की उदार और सुयोग्य व्यवस्था थी; फर्श और दीवारें साफ-सुथरी थीं। डेल्गाडो अच्छे हो गए। किन्तु दोनों अस्पतालों के अनुभव से उन्हें जबरदस्त शिक्षा मिली और

१. J'ai perdu la foi a Moscou (Paris, 1950) P. 177.

बाद में उन्होंने इसीलिए पार्टी भी छोड़ दी। उन्होंने कहा है कि "'कोमिण्टन' में तीन श्रेणियाँ हैं—अ, ब, स। लक्स होटल में, जहाँ कम्युनिस्ट-प्रवासियों के चुने-चुनाए नेता रहते थे, तीन श्रेणियाँ थीं—अ, ब, स; अस्पतालों में भी तीन श्रेणियाँ हैं—अ, ब, स। फिर इसे वर्गहीन समाज क्यों कहा जाता है?"

: ७ :

देहाती मकान

किसी वर्ग की विशेषता और भेद प्रकट करने के लिए उसके मकानों और उसके सदस्यों के छुट्टी बिताने के तरीकों से बढ़कर कोई चीज नहीं होती। 'व्यक्तिगत देहाती मकान' एक नई सोवियत शब्दावली है, जिसका उद्देश्य 'बंगला' (villa) शब्द से बचना है, जो होशियार कम्युनिस्टों के लिए अमीरी या सरमायेदारी का परिचायक है।

मार्शल वोरोशिलोव और बुडेन्नी निकिता खुशखोव (Voroshilov and Budenny, Nikita Khrushchov) तथा उच्च कोटि के कुछ दूसरे नेता अपनी छुट्टियाँ काकेशस में क्रसनाया पोलियाना (Krasnaia poliana) में स्वर्गीय जार के ग्रीष्मकालीन महलों में बिताते हैं। हवाखोरी के इन स्थानों तक चट्टानें काट-काटकर और गहरी खन्दकों के किनारे-किनारे पाँच मील से भी लम्बी सड़क बनाई गई है। ये भवन एक विशाल सुरक्षित स्थान के बीच बनाये गए हैं, जहाँ उच्च अधिकारी 'रीछ के शिकार' का अभ्यास करते हैं, जो जार निकोलस द्वितीय की तरह उनके प्रिय विनोद का साधन हैं। स्तालिन का निजी 'देहाती मकान' 'विला नादेजदा' (जो उनकी दूसरी स्त्री के नाम पर बनाया गया है) सोची और एडलर के बीच कालासागर के तट पर स्थित है। यह मकान १६३२ में प्रसिद्ध सोवियत वास्तुशास्त्री योफान (Yofan) की योजना से बनाया गया। यह काकेशस की रमणीक उपत्यका

के बीच स्तालिन स्काईय के पास है। इसके आनन्द अकथनीय हैं और यह पूर्ण रूप से सुरक्षित है।

मास्को से अत्यन्त दूर होने के कारण ये भवन केवल लम्बी छुट्टियों के लिए उपयोगी हैं। स्तालिन अपनी साप्ताहिक छुट्टियाँ अपने दूसरे देहाती मकान परखुशकोवो (Perkhushkovo) में बिताते हैं, जो मास्को से २० मील दूर बीलोरशियन-बाल्टिक रेलरोड पर स्थित है। उसके पास ही मोलोतोव और पोलितब्यूरो के कुछ दूसरे सदस्यों के भी भवन हैं। एक छोटे-से जंगल के बीच एक पहाड़ी टीले पर ये भवन बने हुए हैं।

स्तालिन के उपनगरीय भवन में १७ कमरे हैं। युद्ध के पहले रूस का यह अधिनायक अपना साप्ताहिक अवकाश यहीं अपनी तीसरी स्त्री रोजा के साथ व्यतीत करता था। रोजा लाजार कागनोविच की बहन की, उसका मकान भी पास ही में था। एक बृहद् और हवादार प्रवेश-हॉल से दूसरी मंजिल तक बलूत की मोटी घनी सीढ़ियाँ लगी हुई हैं। सभी कमरों के फर्श कीमती अखरोट (Walnut) और महोगनी के बने हुए हैं जिनमें बीच-बीच में आबनूस की काली लकड़ी जड़ी हुई है। कुछ दीवारों में 'प्लेनवुड' (Planewood) और कुछ में केरलिन 'बर्च' (Karelian birch) जड़ी हुई है। गोबलिन टैपस्ट्रीज और सिल्क के पर्दे, दरवाजों के बीच-बीच उभरे हुए स्थानों में विशेष डिजाइन के पीतल के 'डिलसे' बने हुए हैं। सर्वत्र भीतर-ही-भीतर बिजली की व्यवस्था है। फर्शों और प्रायः दीवारों पर कीमती तुर्किस्तानी, ईरानी और चीनी कालीन लगे हुए हैं।

नेताओं के निजी मकानों की अन्दरूनी सजधज और ठाठबाट में कोई 'क्रान्तिकारी' चीज नहीं दिखाई पड़ती। न तो मार्क्स की ऊर्ध्वकाय मूर्ति (Bust) और न लेनिन का चित्र; गृह-युद्ध के ग्रेकोव (Grekov) के सामरिक दृश्य भी नहीं हैं। आद्योपान्त सारी चीजें पूँजीवादी ढंग की हैं—गरम मकान, गमलों में सुगन्धित फूल (Orchid), कलफ किये वस्त्रों में नौकरानियाँ और सफेद दस्तानों तथा जाकेटों में नौकर, दिसम्बर मास में भोजन के लिए उच्चतम पात्र, कीमती-से-कीमती 'कैवियर' और स्ट्राबेरीज।

स्तालिन की सम्पत्ति पर २४ घण्टे पहरा रहता है। वह क्षेत्रीय, बाहरी और अन्दरूनी तीन हिस्सों में बटी हुई है। क्षेत्रीय गार्ड पर ६ मील के अन्दर सुरक्षा का भार होता है। क्षेत्रीय गार्ड के लिए एक विशेष 'नेता-गार्ड-कोर' जिम्मेदार होता है। यहाँ पर तैनात सेनाएँ 'ओस्नाज' (Osnaz) से मँगाई जाती हैं जो एम० वी० डी० का विशेष कार्य के लिए डिवीजन है। यह भवन के आसपास तैनात रहती हैं—जंगलों में, सड़कों पर, कुछ जाहिरा और कुछ छिपी हुई। हर पोस्ट पर एक पुलिस-कुत्ता होता है। नियन्त्रण के विशेष स्थानों में टेलीफोन की व्यवस्था है। फिर, सारा जंगल 'बैंक वाल' की तरह बिजली के सूत्रों में बंधा हुआ है। बिजली का एक सजीव तार जरा-सा छू जाने पर सारा जंगल जगमगा उठता है और खतरे की घण्टियाँ बज उठती हैं।

फिर, 'बाहरी' क्षेत्र का नम्बर आता है, जहाँ गार्डों का जाल बिछा रहता है। यह भवन से बिलकुल लगा हुआ है और इसमें भी उसी तरह के बिजली के तार लगे हैं और पोस्टरों पर लिखा हुआ है—"आगे बढ़ने की सख्त मनाही है।" सारी 'स्टेट' के चारों ओर दीवार है जिससे अन्दर देखना असम्भव है। दीवार पर 'एम० वी० डी०' के गश्ती दस्तों और कुत्तों का पहरा है। दीवार से लगभग आधा मील पर और लगभग छः छः सौ गज की दूरी पर पाँच उच्च नेताओं के 'ग्रामीण भवन' हैं।

तीसरे अन्दरूनी हिस्से के गार्ड दीवारों के अन्दर तैनात रहते हैं। इसमें 'एम० वी० डी०' की नियमित सेनाएँ, बावर्ची, माली, नौकर, ड्राइवर और घर की नौकरानियाँ सभी आ जाती हैं; इन सभी लोगों को एक-दूसरे पर निगरानी रखने का हुक्म होता है। 'स्टेट' के भीतर जरा-सी भी गैर-वफादारी के लिए वे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से जिम्मेदार होते हैं। 'एम० वी० डी०' हर कर्मचारी के अतीत से पूर्णतया परिचित होता है और खुफिया पुलिस उनकी कार्यवाहियों और सम्पर्कों पर कड़ी निगरानी रखती है।

जब किसी प्रमुख सोवियत अधिकारी के लिए एक नया 'ग्रामीण मकान"

बनाने का निर्णय हो जाता है, तब सुप्रीम सोवियत का वित्तीय प्रशासन-विभाग योजनाओं के लिए वास्तु-शास्त्रियों की प्रतियोगिता के लिए आदेश देता है। स्कुसेव (Shchusev), रुदनेव (Rudnev), अलाबियन (Alabian), स्कूको (Shchuko) और योफान (Yofan) जैसे विख्यात सोवियत वास्तु-शास्त्री आम तौर पर इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। प्रत्येक प्रतियोगी को उसकी योजनाओं के लिए उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया जाता है। तदनन्तर सारी योजनाएँ सम्पत्ति (Estate) के भावी स्वामी को उसके अन्तिम चुनाव के लिए पेश की जाती हैं और चुनाव के बाद यह कार्य 'एम० वी० डी०' (M.V.D.) को सुपुर्द कर दिया जाता है।

किसी दिन 'एम० वी० डी०' का निर्माण-विभाग मास्को में फुर्कासोवा स्ट्रीट (Furkasova street) में स्थित अपने आफिस में विजेता वास्तु-शास्त्री को बुलाता है। दूसरे मामलों में 'एम० वी० डी०' के दफ्तर में बुलाए जाने का अर्थ 'जीवन' का ही अन्त समझा जाता है, किन्तु इस मामले में वास्तु-शास्त्री को अपनी योजनाओं के अनुसार 'ग्रामीण भवन' के निर्माण-कार्य की देखरेख के लिए उसे खुश कर देने वाला उपहार मिलता है। इस कार्य के लिए उसे सचमुच अच्छा वेतन मिलता है। किन्तु कार्य में भी बड़े खतरनाक दोष होते हैं। वास्तु-शास्त्री को यह भी ज्ञान नहीं होता कि वह किसके लिए भवन बना रहा है और साथ-ही-साथ 'एम० वी० डी०' का उसे आदेश होता है कि सारी योजना गुप्त रखी जाय और उसके निर्माण के बारे में बाहरी दुनिया को जरा भी पता न चले। रहस्य खुल जाने पर उसे कठोर दण्ड का भागी होना पड़ता है और वह भी दण्ड अदालती कार्यवाही से बिलकुल बाहर दिया जाता है।

वास्तु-शास्त्री समझता है कि जरा-सी गलती पर उसे वर्षों के लिए बन्दी-शिविर की हवा खानी पड़ सकती है। किन्तु प्रस्ताव को ठुकरा देने का मतलब नेता और शासन के प्रति गद्दारी करना होता है। फिर भी निर्माण की अवधि में उसका उदार वेतन और सुख-वैभव से भरा जीवन बड़ा ही मोहक होता है।

व्यक्तिगत भवन (Villa) की योजनाएँ सर्वदा विस्तृत और जटिल होती हैं। उनके अन्दर भवन-निर्माण का ही प्रश्न नहीं होता बल्कि फव्वारे, कृत्रिम उद्यान, टेनिस कोर्ट, तैरने के लिए चश्मे (Swimming Pools) और गरम कमरे के निर्माण के भी प्रश्न होते हैं। इसके लिए आन्तरिक सजधज, स्नानागार, फव्वारे का कमरा (Shower room), बिजली की पाठशालाएँ (Electric Kitchens), साज व सामान, आलंकारिक सामग्री, पुस्तकें, कालीन, आदि एकत्र करना भी होता है। वास्तु-शास्त्री को सम्पत्ति (Estate) को उसके स्वामी को रहने की पूर्ण व्यवस्था के साथ सुपुर्द करना पड़ता है।

जब एक बार काम आरम्भ हो जाता है तो वास्तु-शास्त्री और उसके सहायकों (जिन्हें 'स्टेट' की सारी योजना और नक्शा देखने की अनुमति नहीं मिलती) को 'एम० वी० डी०' के निर्माण-विभाग के अन्तर्गत बड़ी कड़ी निगरानी के अन्दर काम करना होता है।

जब सारी तफसील तैयार हो जाती है और उसके लिए भावी स्वामी की स्वीकृति मिल जाती है, तब मुख्य वास्तु-शास्त्री और उसके घनिष्ट सहायकों को गृह-निर्माण के स्थान पर भेजा जाता है। वहाँ पर 'एम० वी० डी०' इनके रहने के लिए विशेष रूप से कोई मकान ले लेता है या बनवाता है। इसके बाद उन्हें मनचाही चीजें मिलती हैं। 'एम० वी० डी०' की ओर से उन्हें अच्छा-से-अच्छा भोजन मिलता है। एक बार इसी तरह का भवन बनाते समय 'एम० वी० डी०' के मुख्य एजेण्ट ने एक वास्तु-शास्त्री से कहा, "ताजा 'केवियर' आप इच्छा-भर ले सकते हैं, हमारे पास सिर्फ चिड़िया का दूध नहीं है।"

वास्तु-शास्त्री को अच्छे-से-अच्छे किस्म का कपड़ा मिलता है। उसे 'पोर्टेबल' सिनेमा-चित्र की सारी सामग्री मिलती है और वह कोई भी सिनेमा देख सकता है। उसे उसकी इच्छानुकूल सारी पुस्तकें दी जाती हैं। उसकी चिन्ता दूर करने के लिए 'एम० वी० डी०' के स्वयंसेवक उसके मनोनुकूल किसी भी संख्या में औरतों की व्यवस्था कर सकते हैं। 'एम० वी० डी०'

का प्रधान उससे कहता है, "किसी तरह की और किसी भी संख्या में, आप पत्र लिखने के लिए स्वतन्त्र हैं," लेकिन, वास्तव में पत्र-व्यवहार सेंसर होता है। दूसरी ओर उसे किसी बाहरी व्यक्ति से मिलने नहीं दिया जाता और वह सर्वदा 'खुफिया पुलिस' के पहरे में रहता है।

सबसे अधिक चिन्ता का क्षण उस समय आता है जब मालिक को सुपुर्द करने के लिए भवन तैयार हो जाता है। पहले 'टेक्निकल' जाँच की व्यवस्था होती है। विशेषज्ञ इंजीनियरों की एक विशेष टोली हरएक चीज की तफसील-वार जांच के लिए बुलाई जाती है। वे अपने ज्ञान के अनुसार खूब जांच-पड़ताल करते हैं, क्योंकि अगर भविष्य में कोई कमी दिखाई पड़ेगी तो वे ही जिम्मेदार ठहराए जायँगे। इस छानबीन की सूक्ष्मता बेहूदगी की सीमा तक भी पहुँच जाती है। एक-एक तख्ते की जांच की जाती है, ताकि कहीं कोई बम न रखा हो। यदि इस बात को ध्यान में रखा जाय कि न केवल वास्तु-शास्त्री और मजदूर, बल्कि 'एम० वी० डी०' के निरीक्षक भी किसी भी 'ग़लतफहमी' के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होते हैं, तो इस पूर्णता का अर्थ समझ में आ सकता है। जब मुख्य वास्तु-शास्त्री को अन्तिम क्षण में यह ज्ञात हुआ कि 'विला नादेज्दा' (Villa Nadezhda) का भवन स्वयं स्तालिन के लिए बनाया गया है, तो उसके होश उड़ गए। स्नानागार में घुसने पर जब संयोग से उसे पता चला कि फव्वारे (Shower) के 'मिक्सचर' में कोई गड़बड़ी है और पाइप से केवल गरम पानी आता है तो वह पत्ती की तरह कांपने लगा। यदि स्तालिन या उसके दल के किसी व्यक्ति ने यन्त्र (Gadget) की परीक्षा की होती तो न जाने क्या होता······।

सबके बाद भवन का भावी मालिक खुद छानबीन करता है। उसकी सभी मन-तरंगों को शान्त करना होगा। जब किसान-अध्यक्ष स्वर्गीय माइकेल कालिनिन ने सोची के समीप अपने नये मकान का निरीक्षण किया तो वह खिड़की के परदों को देखकर बड़ा असन्तुष्ट हुआ। उसने महसूस करते हुए घोषणा की—"एक अध्यक्ष के लिए तुम्हें सचमुच अच्छा परदा लाना चाहिए था।"

: ८ :

"ब्लू-एक्सप्रेस"

रूस में एक हजार से अधिक अधिकारियों के पास प्राइवेट रेलवे डिब्बे हैं या कम-से-कम युद्ध के पहले थे। आज शायद उनकी संख्या बढ़ गई है और इनमें कुछ नये सैनिक अधिकारी भी हैं। 'ब्लू-एक्सप्रेस' नामक ट्रेन में कई हजार परिवारों को यात्रा करने का अधिकार है।[१]

पोलितब्यूरो के सभी सदस्यों, रूसी सरकार के सभी सदस्यों (५० से अधिक मन्त्री होते हैं।), उच्चतम पार्टी और सरकारी संस्थाओं के अधिकांश सदस्यों, रीजनल पार्टी-कमेटियों के कतिपय सदस्यों, मिलिटरी डिस्ट्रिक्ट के कमाण्डरों, रेलरोड के प्रधानों तथा अनेक पार्टी नौकरशाहों को कारें दी जाती हैं।

फिर भी १६२० में सोवियत नेता बड़े सीधे-सादे ढंग से सफर करते थे। स्तालिन और पोलितब्यूरो के सदस्यों के पास अपनी कारें थीं। बाकी छोटे-छोटे नेता साधारण 'पुलमैनों (Pullmans) के डिब्बों में ही सफर करते थे। फिर सरकारी उपयोग के लिए एक स्पेशल ट्रेन बनाने का निर्णय किया गया। इसका नाम 'लक्स ब्लू एक्सप्रेस' पड़ा। गर्मी-भर उसे दो विहारों (Resorts) किस्लोवोस्क (Kislovodsk) और सोची (Sochi)

१. The following account of the Blue Express is given mainly as told by its former chief, Vladimir Tregubov.

के बीच और मौके-मौके पर मास्को तक भी जाना पड़ता था। १ मई १९३३ को वह पहली बार चालू हुई और प्रति वर्ष वह मई के आरम्भ से नवम्बर के अन्त तक चलती थी। पतझड़ में वह बन्द कर दी जाती और जाड़े में उसकी मरम्मत होती। रूस में साधारण डिब्बों की मरम्मत और ओवरहालिंग हर ६ वर्ष पर होती थी। 'ब्ल्यू-एक्सप्रेस' के डिब्बे का सारा सामान हर साल बदल दिया जाता और उसे पुनः सुगठित और सुसज्जित करने में ५ लाख रूबल से अधिक खर्च हो जाता। ट्रेन को दस लाख रूबल वार्षिक हानि उठानी पड़ती थी।

पुराने जार के गार्डों की तरह ट्रेन के आदमी लम्बे और खूबसूरत लोगों में से चुने जाते थे। ट्रेन के प्रधान के चुनाव में विशेष सावधानी बरती जाती थी। पार्टी-कमेटियों और जी० पी० यू० (G. P. U.) से लगातार कई मुलाकातों के बाद काम के लिए अन्तिम स्वीकृति मिलती थी।

प्रारम्भ में ट्रेगुबोव (Tregubov) को ट्रेन के निर्माण का कार्य देखना पड़ा। उसने विभिन्न लाइनों से १० अच्छे-से-अच्छे डिब्बों को चुन लिया। पहली शर्त यह थी कि डिब्बों में पहियों की आवाज सुनाई न पड़े और वे खूब आराम और आसानी से चलें। इसके लिए हर डिब्बे के फर्श पर शीशे की मोटी तह जमाई जाती। फिर उस पर 'फेल्ट' (felt) की तह, कोर्क (cork) की तह, फिर 'फेल्ट' की तह, लकड़ी की तह और उस पर 'फेल्ट' की एक दूसरी तह जमाई जाती थी। इन सब पर 'लिनोलियम' (Linoleum) बिछाया जाता और सबके ऊपर एक नरम कालीन (Rug) बिछाया जाता। इस तरह डिब्बे का फर्श 'पर के बिछौने' जैसा हो जाता। 'लांजकारों' (Lounge cars) में जो कालीन लगाए जाते, उसकी कीमत मास्को के एक विशेष गोदाम में ५ हजार रूबल होती है। खुले बाजार में वह ५० हजार रूबल से कम में नहीं मिलती। किसी कार की परीक्षा के लिए उसके एक कम्पार्टमेण्ट में एक टेबल पर शीशे के गिलास में पानी भरकर रख दिया जाता। परीक्षा के समय एक बूँद भी पानी नहीं गिरना चाहिए।

कारों के बाहरी हिस्सों पर गहरा नीला रंग चढ़ाया जाता और छतों में आसमानी रंग। इस रंग पर भी 'लेकर' (Lacquer) की वार्निश और 'पोलिश' होती, जिससे एक भी खुरदरी जगह या दाग दिखाई न पड़े। कारों के भीतर धातु के बने सभी हिस्से या तो गिलट के बने होते या चमकते फौलाद के। खिड़कियाँ 'प्लेट ग्लास' की बनी होती थीं। कारों के बीच के रास्ते इस ढंग से बने होते हैं कि यात्री को पता नहीं चलता कि वह एक कार छोड़कर दूसरी में जा रहा है।

कारें 'पुलमैन्स' होती हैं और २३ मीटर लम्बी होती हैं। मामूली 'पुलमैनों' में ६४ सीटें या ३८ 'बर्थ' होते हैं। 'ब्ल्यू एक्सप्रेस' की प्रत्येक कार में केवल १६ व्यक्तियों के लिए स्थान होता है।

इस ट्रेन के लिए टिकट नहीं बिकता है, बल्कि विभिन्न सरकारी कर्मचारियों में बाँटा जाता है। टिकट भी तीन तरह के होते हैं और उनमें मुख्य अन्तर 'रेस्टरां' की सेवा का होता है। पहली श्रेणी के यात्री 'डाइनिंग कार' में अपनी इच्छानुकूल कुछ भी और किसी भी यात्रा में माँग सकते हैं। दूसरी और तीसरी श्रेणियों के यात्रियों को विशेष ढंग का खाना-पीना मुफ्त दिया जाता है, किन्तु अतिरिक्त सेवा के लिए उन्हें पैसा देना होता है। 'डाइनिंग कार' में नाना प्रकार की स्वादिष्ट वस्तुओं, तरह-तरह के फल-फूल और अच्छी-से-अच्छी शराबों की व्यवस्था होती है।

हर यात्रा के पहले कण्डक्टर इत्र (Eau de cologne) छिड़कते और टेबलों पर फूल रखते हुए एक डब्बे से दूसरे डब्बे में जाता है। यात्रा-भर वह फल-फूल, मिठाई (Candy) और सर्वोत्तम सिगरेट लेकर घूमता रहता है। जनरलों, मार्शलों, कमीसरों, रीजनल पार्टी कमेटियों के सेक्रेटरियों की मँहगी-से-मँहगी इच्छाओं को भी तृप्त करना पड़ता है।

पोलितब्यूरो के प्रत्येक सदस्य की अपनी निजी कार होती है, जो 'ब्ल्यू एक्सप्रेस' के पीछे जुड़ी रहती है। देखने में तो ये कारें ट्रेन की अन्य कारों से भिन्न नहीं जान पड़तीं। यह नेताओं का भेद छिपाने के लिए होता है। लेकिन उसके अन्दर सुख और भोगविलास की अपार सामग्री भरी होती है

जो 'एक्सप्रेस' से भी कहीं अधिक होती है। इस तरह की कार के अन्दरूनी साज व सामान की योजना के लिए उसमें रहने वाले व्यक्ति की स्वीकृति लेनी पड़ती है। खर्च की परवाह नहीं की जाती; स्टेट बैंक इसके लिए असीम धन की व्यवस्था करता है।

स्तालिन की कार में दो शयन-कक्ष, एक उठने-बैठने का कमरा, उसके सेक्रेटरी के लिए एक दफ्तर, साथ के आदमियों के लिए एक कम्पार्टमेण्ट, एक स्नानागार और एक रसोईघर होते हैं। दीवारें और कुरसी-मेज वगैरह 'महोगनी' (Mabogany) के बने होते हैं। दूसरे नेताओं की कारें भी इसी ढंग की बनी होती हैं; किन्तु हर कार का फर्श, बनावट (Paneling) और 'फरनीचर' भिन्न-भिन्न ढंग और सामग्रियों के होते हैं। जैसे कागनोविच (Kagenovich) की कार करेलियन बर्च (Karelian birch) की बनी होती है जब कि मोलोतोव की कार ठीक स्तालिन की कार जैसी होती है।

छोटे-छोटे सोवियत नौकरशाहों ने भी बड़े-बड़े नेताओं का मुकाबला करने की कोशिश की और अपनी-अपनी कारों को सजाने में सरकारी रुपये की जरा भी परवाह न की। दृष्टान्त के तौर पर, १६३६ में रेलवे कर्मचारियों को अनेक पुरस्कार दिये गए और 'नदर्न काकेशस रेलरोड' के प्रधान मैवस्की (Maievsky) को उस ट्रेन से 'कार' नं०१ पुरस्कार में दी गई जो कभी जार की थी। त्रेगुबोव (Tregubov) को इस कार को लाने के लिए मास्को भेजा गया। जार की ट्रेन अक्तूबर रेलवे स्टेशन की साइडिंग में पड़ी हुई थी। उसकी सारी चीजें हू-बहू उसी हालत में थीं, जिस हालत में वे जार के जमाने में थीं, यहाँ तक कि चाइना और बेडलिनेन (Bedlinen) भी उसी हालत में थे। जब वह व्लाडीकावकाज (Vladikavkag) लाई गई तो मैवस्की (Maievsky) स्पष्ट रूप से निराश हुआ और उसकी मरम्मत और पुनर्गठन के लिए हुक्म दिया। उसकी सारी बनावट और फर्श को उखाड़ दिया गया। उसके परिवर्तन में लाखों रूबल खर्च किये गए। कार पर तीन महीने तक काम हुआ जिसका परिणाम आँखों को चकाचौंध कर देने वाला था। मैवस्की सोवियत यूनियन की २४ रेलरोडों में से केवल एक का प्रधान था।

हजारों छोटे-बड़े सोवियत नौकरशाहों के प्राइवेट कारों, भवनों, विहारों, सेनेटोरियम, पुण्य-स्थानों (Sanctuaries), विशेष गोदामों, होटलों, निजी सिनेमा-गृहों, सामूहिक संगीतों और दावतों पर देश और जनता के धन के इस खर्च को देखकर दिमाग बिगड़ जाता है।

जब कभी स्तालिन, मोलोतोव, ज़ाद्नोव (Zhdanov) या अन्य कोई बड़ा नेता किसी विहार-स्थली को जाता, तब उसकी कार किसी 'एक्सप्रेस' के पीछे जोड़ दी जाती। ऐसे हर सफर के पहले ट्रेन के प्रधान को रेलरोड इंचार्ज 'एन० के० वी० डी०' आफिस में बुलाया जाता, प्रमुख यात्री से परिचय कराया जाता, भेद छिपाने के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कराया जाता और सभी आवश्यक सतर्कतामूलक कार्यवाही के लिए आदेश दिया जाता।

खुदा न करे, स्तालिन की ट्रेन में कहीं विलम्ब हो जाय! इस तरह की एक घटना १९३६ में एक दिन रात को घटी। ट्रेन के पहले एक दूसरी गाड़ी छूट चुकी थी, जिसमें गैसोलिन (Gasoline) से भरी टैंक कारें लगी हुई थीं। एक स्टेशन पर तैनात कर्मचारी ने टैंक-ट्रेन को आगे बढ़ जाने दिया, क्योंकि उसका ख्याल था कि 'एक्सप्रेस' पहुँचने के पहले ही उक्त ट्रेन अगले स्टेशन पर पहुँच जायगी। यदि उसे पता होता कि 'एक्सप्रेस' में स्तालिन भी हैं तो उसने कभी भी ऐसा नहीं किया होता। दुर्भाग्य से रेलवे लाइन के अगले जोड़ में एक गहरा अन्तर पड़ गया था। टैंक ट्रेन का इंजिन उसी में आकर उलझ गया और रुक गया। जब स्तालिन की ट्रेन स्टेशन के पास पहुँची, तब फाटक बन्द था और गाड़ी रोक देनी पड़ी। सभी गार्ड कारों से कूद पड़े और उन्होंने ट्रेन को घेर लिया। रेलवे के 'एन० के० वी० डी०' विभाग का प्रधान दौड़ता हुआ पहुँचा और चिल्लाकर पूछा, "फाटक क्यों बन्द है?" सिर्फ तीन मिनट की देर हुई और ट्रेन आगे बढ़ी। लेकिन स्टेशन-अधिकारी तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया, यहाँ तक कि स्टेशन मास्टर भी, जो घर पर सोया हुआ था और जिसे इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं था, गिरफ्तार कर लिया गया। इन तमाम हलचलों के बीच स्तालिन अपनी कार में आराम के

साथ सोया हुआ था।

ट्रेन के साधारण यात्री—पीपुल्स कमीसर, रीजनल पार्टी कमेटियों के मन्त्रिगण और दूसरे 'छोटे-छोटे' नेता और उनकी स्त्रियां—इन हवाखोरी की जगहों में स्वास्थ्य-लाभ के लिए नहीं, बल्कि 'मनोरंजन' के लिए जाते हैं। उनके लिए मनोरंजन का अर्थ था सुरा-सुन्दरी से प्रेम। सोची और किस्लोवास्क में जिस हद तक यह 'मनोरंजन' होता था, वैसा अन्य किसी स्थान में नहीं होता था। मास्को में लोग रोज-रोज की नीरस जिन्दगी से ऊब जाते और बे-मौत मरते हैं, यहाँ तक कि बड़े-से-बड़े अधिकारी भी घोड़ों की तरह काम करते और हर समय अपनी जिन्दगी के लिए डरते रहते हैं। अगुबोव के कथनानुसार, इन विहार-स्थलियों में वे बिलकुल उन्मत्त-से हो जाते हैं। सोवियत भाषा में इसे 'जीवन का स्वाद लेना' कहते हैं। मद्य-पान की चोंचलेबाजियां और प्रणय-लीलाएं ट्रेन के यात्रियों में आम चर्चा की विषय बन गई थीं।

'ब्ल्यू एक्सप्रेस' के प्रधान का कार्य बड़ा ही लाभदायक था। अगुबोव को बड़े-से-बड़े कारखाने के उच्चतम इंजीनियरों के बराबर तनख्वाह मिलती थी। वर्ष में दो बार उसे नये 'यूनिफार्म' मिलते थे और बहुत से भत्ते भी मिलते थे। ट्रेन में सामानों की इतनी भरमार थी कि कोई उनका हिसाब नहीं रखता था। इन यात्राओं से लोग 'केवियर' की पेटियां, डिब्बों में भरे सामान, शराब और सिगरेट घर लाते थे। अगुबोव एक उच्च सोवियत पदाधिकारी की तरह रहता था, किन्तु उसे अपनी गिरफ्तारी का सर्वदा भय बना रहता था। 'एन० के० वी० डी०' (N. K. V. D.) और विभिन्न पार्टी-कमीशनों के सामने वह हमेशा सवाल के लिए बुलाया जाता। उसका भय भी निराधार नहीं था। अन्त में वह गिरफ्तार कर लिया गया और कागनोविच की हत्या के षड्यन्त्र के आरोप में उसे गोली से उड़ा देने की सजा दी गई, किन्तु किसी कारणवश उसकी जान नहीं ली गई। सजा बदल दी गई और बाद में लड़ाई के दौरान में उसे रूस छोड़ने का मौका मिल गया।

यद्यपि अभी तक के विवरण में मुख्यतः युद्ध के पहले की स्थिति का

वर्णन किया गया है, तथापि इसमें युद्धोत्तर-युग की प्रवृत्तियों और प्रवाहों का भी आभास मिलता है। जो भी हो, १६४१ के पहले काफी मात्रा में ये बीज बो दिये गए थे और भीषण अराजकता के समय वे स्पष्टतः नष्ट-प्राय प्रतीत होते थे, किन्तु उनकी जड़ जम चुकी थी और रूस में सामान्य-स्थिति के विकास के साथ उनसे प्रबल अंकुर निकलने लगे थे।

इन वृत्तान्तों में सारी चीजें विशेष ढंग की और महत्वपूर्ण हैं। जीवन के प्रति सामाजिक धुरन्धरों की विचित्र प्रवृत्ति थी—स्त्री-पुरुषों के आदि-कालीन ढंग के आनन्द-विनोद, आफिस में उनका कठिन परिश्रम और बाहर मनोविनोद की उत्कट लालसा। शील-संकोच और लज्जा की भावना का अभाव भी विचित्र था, तत्काल भोग-विलास की अभिलाषा (जार से भी बढ़कर) और उसके लिए राज्य की ओर से व्यवस्था का विश्वास। नेतृ-वर्ग के भक्त सदस्य को जीवन के सुख-भोग के लिए अनुमति और प्रोत्साहन देने और अभक्त सदस्य को उसके पद और पदवी से, उसके 'ब्ल्यू-एक्सप्रेस' टिकट से, उसके भवन और प्रमुख डॉक्टरों से और अन्त में उसकी स्वतन्त्रता से भी वंचित करने में कितना विचित्र विरोधाभास है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के पहले सामाजिक नेताओं में क्रान्ति की प्रथम पीढ़ी का प्रभुत्व था। युद्ध के बाद से दूसरी पीढ़ी बड़ी तेजी से उनका स्थान ले रही है। सोवियत शासन-तन्त्र के प्रमुख पदों पर आज अनेक नये नये तत्वों का दिखाई पड़ना उल्लेखनीय घटना है; अपने पूर्वाधिकारियों से भिन्न वे उस राज्य के बच्चे हैं।

दूसरी पीढ़ी का सत्ता और प्रभाव में आना युद्धोत्तर-युग की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है। इस पीढ़ी के लोगों का बचपन उनके माता-पिता के जीवन से अधिक सुखमय था। उनकी आदतों में सुधार हुआ है और उनके तौर-तरीकों में काफी फर्क पड़ गया है। शासनारूढ़ होते ही उनके पिताओं की यही प्रबल आकांक्षा थी कि उनकी सन्तानों का जीवन उनकी अपेक्षा अधिक सुखमय हो और वे फिर कभी भी उन 'मजदूरों और किसानों' की दीन-हीन श्रेणी में न जायँ, जिनको इतना 'गौरवान्वित' किया गया है।

लड़के और लड़कियाँ कालेज और यूनिवर्सिटियों में गये, जहाँ उन्होंने लेनिनवाद-स्तालिनवाद के अलावा और भी कुछ सीखा। उन्होंने विश्व-साहित्य के ग्रन्थों का अध्ययन किया, सिनेमा-गृहों (picture galleries) और अजायबघरों का निरीक्षण किया और प्रयोगशालाओं में अध्ययन किया। द्वितीय और तृतीय दशक में भी नये और पुराने बुद्धिजीवियों में जमीन-आसमान का अन्तर था। पुराने बुद्धिजीवी ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में उनसे कहीं ऊँचे थे, किन्तु राजनीतिक दृष्टिकोण से कम विश्वसनीय थे। अब दोनों वर्गों की सन्तानों के बीच भेद मिट रहा है और शीघ्र ही बिलकुल मिट जायगा। पुराने और नये तत्वों का समन्वय चल रहा है।

सामाजिक नेतृत्व की दूसरी पीढ़ी के लिए सोवियत राष्ट्र कोई सनसनीपूर्ण सफलता नहीं जान पड़ता। वह पीने के जल अथवा सूर्य और चाँद के सदृश है—अथवा ऐसी चीज के समान है, जो तीव्र भावुकता या सच्चे गर्व को जाग्रत नहीं कर सकती। बहुमत सोवियत शासन का वफ़ादार है, लेकिन वफादारी और भक्ति में बहुत अन्तर है। पहली पीढ़ी में भक्ति की भावना भरी हुई है और दूसरी में वफादारी की। जब तक सब-कुछ ठीक चल रहा है, मशीन चालू है, गाड़ी चल रही है, जनता आज्ञाकारी है, तब तक नेता का सितारा चमकता रहता है और कोई सवाल नहीं करता। सब-कुछ ठीक रखने के लिए वफादारी ही काफी है। किन्तु संकट अनिवार्य होता है, कदाचित् आसन्न रहता है।

व्यक्तिगत मित्रता की भांति राजनीतिक भक्ति की परीक्षा भी आपत्काल में ही होती है। ज्यों ही विश्व की विपरीत घटनाएँ सोवियत-नेतृत्व को उसके इस 'अमोघ अस्त्र' से वंचित करेंगी, त्यों ही उसकी कृत्रिम एकता भंग हो जायगी। जिसे पहले अनिवार्य रूप में स्वीकार किया गया है—खुफिया पुलिस, गिरफ्तारियाँ, बेगारी, पुनरस्त्रीकरण, पाँचवाँ दस्ता—उस पर जोरदार बहसें होंगी और शासन की नीतियों पर सन्देह किया जायगा। राजनीतिक और आर्थिक विफलताओं के बाद मतभेद अनिवार्य होता है। फूट 'साधारण जनता' की निम्न श्रेणी तक ही सीमित नहीं रहेगी। पहले

उच्चतम श्रेणी में दिखाई पड़ने वाली राजनीतिक एकता भंग हो सकती है।

ज्यों-ज्यों एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी आती है, त्यों-त्यों उच्च सामाजिक वर्गों की विश्वसनीयता की परीक्षा होती है। यह सत्य है कि उनका अधिकांश भाग कम्युनिस्ट-पार्टी से सम्बन्ध रखता है और अनुशासन और आज्ञापालन के लिए वचनबद्ध होता है। जो भी हो, आज तो कम्युनिस्ट पार्टी ही नया रूप धारण कर रही है।

: ९ :

युद्ध के बाद कम्युनिस्ट पार्टी

१६३६ में, जबकि युद्ध छिड़ने ही वाला था, सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट-पार्टी की सदस्य-संख्या लगभग २५ लाख थी और १६४१ में जर्मन हमले के पहले कुल ३७ लाख थी। आज लगभग ७० लाख सदस्य हैं। लगभग ७५ प्रतिशत नई भरती है, जिसमें अधिकतर नौजवान स्त्री-पुरुष हैं। इसी दशक में कम्युनिस्ट युवक-संघ की सदस्य-संख्या ४० लाख से एक करोड़ हो गई है, जबकि उसकी इकाइयों (पहले इन्हें 'सेल्स' कहते थे) की संख्या २०१००० से ४५०००० हो गई है।[१]

पार्टी के साधारण सदस्यों में अस्थिरता की स्थिति के बावजूद गत १२ वर्षों में नेतृवर्ग ने अपने को स्थिर बना दिया है। इस लम्बी और घटनापूर्ण अवधि में पोलितब्यूरो के केवल एक सदस्य निकोलई वोजनेसेन्स्की (Nikolai Voznesensky) का उन्मूलन किया गया। वोजनेसेन्स्की महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में नहीं था और किसी सैद्धान्तिक या राजनीतिक प्रवृत्ति के साथ उसका नाम भी कभी नहीं आया। एक बार हटा देने के बाद वह सर्वदा के लिए विलीन हो गया।

पोलितब्यूरो के अन्य सदस्यों ने अपनी कुशलता और निपुणता का परिचय दिया है। स्तालिन ने बड़ी सावधानी से उन्हें चुना और उन्होंने

१. Partiynaia Zhizn, Novembr 1947, Pravda March 30,1949.

उसकी आशाओं की पूर्ति की। इनमें से किसी का भी थोड़े समय के लिए भी पार्टी के अन्दर किसी गैर-स्तालिनवादी गुट अथवा किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी से सम्बन्ध नहीं था। सभी अपने उत्थान के लिए स्तालिन के ऋणी हैं और उनका राजनीतिक भाग्य उसी की अनुकूलता पर अवलम्बित है। उनकी औसत उम्र ५८ साल है और इस तरह सोवियत शासन की बागडोर विश्व की किसी भी सरकार की अपेक्षा अधिक वृद्ध लोगों के हाथ में है।

जाने या अनजाने सोवियत नेता तौर-तरीके, बातचीत और पोशाक में भी स्तालिन की नकल करते हैं। इस सादृश्य का बाहरी रूपों तक ही अन्त नहीं हो जाता। खुद तानाशाह की तरह किसी में प्रकाण्ड बुद्धि या व्यक्तित्व नहीं है। पोलितब्यूरो में मूल विचारकों, प्रतिभाशाली आदर्शवादियों और सुयोग्य लेखकों का नाम नहीं है। अन्तिम आकर्षक व्यक्ति आन्द्रेई ज़ादनोव (Andrei Zhdanov) था, जिसकी १९४८ में मृत्यु हो गई। स्तालिन अपनी अन्दरूनी कौंसिलों में ऐसे व्यक्ति को बरदास्त नहीं कर सकता, जो उससे अधिक बौद्धिक क्षमता रखता हो और लोगों के आकर्षण और प्रशंसा का केन्द्र बन सकता हो। उसके सभी प्रमुख सहायक (Chief Lieutenants) साधारण बुद्धि के होते हुए भी कर्मठ, परिश्रमी, अच्छे संगठनकर्ता और प्रशासक तथा क्रूर निरीक्षक (Taskmaster) होते हैं। संसार को उनमें से एक—व्याचिस्लाव मोलोतोव—को नजदीक से देखने का मौका मिला है। मोलोतोव के अनेक गुण—कल्पनाओं का अभाव, राजनीतिक व्यवहारों में दुराग्रह, नृशंसता, थकावटहीनता—सोवियट यूनियन के समकालीन नेतृत्व का निरालापन हैं।

'पोलितब्यूरो' के तीन सदस्य अभी हाल ही में मरे हैं—मिखैल कालिनिन (Mikhail Kalinin) जो रूस का प्रेसिडेण्ट था, आन्द्रेई ज़ादनोव और अलेक्जेण्डर स्केरबाकोव (Alexander Shcherbakov)। पहले से चुने हुए उत्तराधिकारियों ने उनका स्थान ग्रहण किया है। इस बीच नये-नये व्यक्ति उच्चतम परिषदों में पहुँच गए हैं या पहुँचने के लिए चुन लिये

गए हैं। इनमें हैं पार्टी-कण्ट्रोल-कमीशन के एम० शिकरियातोव (Shkiriatov) जो स्तालिन के पुराने विश्वासपात्र हैं; 'प्रवदा' के सम्पादक पोस्पेलोव (Pospelov); पी० पोनोमारेन्को (P. Ponomarenko) जो अभी हाल ही में अपने पुराने पद से हटाकर श्वेतरूस (Biele russia) के प्रशासक बनाये गए हैं; जी० पोपोव और एम० सुस्लोव।

ये पाँचों व्यक्ति व्यावहारिक रूप से पहले ही से शासन के अंग बन चुके हैं; पोलितब्यूरो के १२ सदस्यों और 'उम्मेदवारों' के साथ वे सोवियत यूनियन की सारी सत्ता पर अपना अधिकार जमाये हुए हैं। उनके पद और प्रभाव में काफी अन्तर है। 'पोलितब्यूरो के अधिकांश सदस्यों के कार्य उनके अपने विशेष क्षेत्रों तक सीमित हैं; वास्तविक नीति के निर्माण में स्तालिन के चुने हुए मुट्ठी-भर लोगों का हाथ रहता है। युद्ध के दौरान में एक बार राज्य-सुरक्षा-समिति के निर्माण के साथ इस आन्तरिक अधिकार (Inner directorate) की खुले आम घोषणा की गई थी। सुरक्षा-समिति में स्तालिन, मोलोतोव, बेरिया, मलेन्कोव और वोरोशिलोव थे। वास्तव में अन्दरूनी अधिकार युद्ध के पहले था और आज भी मौजूद है; इस गैर-सरकारी किन्तु सर्वशक्तिमान संस्था के सदस्यों के पास क्रेमलिन में स्तालिन के अध्ययन-कक्ष से सटे हुए अपने निजी दफ्तर हैं। यह लिखते समय लवरेन्ती बेरिया (Lavrentii Beria), जार्जी मलेन्कोव और व्यश्त्रिस्लाव मोलोतोव स्तालिन के घनिष्ट सलाहकार हैं, जो एक प्रकार से 'सर्वोच्च सरकार' निर्माण करते हैं।

प्रत्येक 'छाया सरकार' (Shadow Government) का इतिहास व्यक्तिगत संघर्षों से भरा हुआ है, जो राजनीतिक स्वरूप और राजनीतिक मतभेदों का रूप धारण कर लेते हैं और जिनका व्यक्तिगत सम्बन्धों पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। ये झगड़े पोलितब्यूरो जैसे लोगों के छोटे से गृह में विशेष कटुता पैदा करते हैं। पोलितब्यूरो का प्रत्येक सदस्य अपने को सबसे योग्य उत्तराधिकारी समझता है और अपने ही को अपने पुराने डिक्टेटर की पोशाक धारण करने योग्य समझता है। पश्चिम भ्रान्त और असहाय होकर

स्तालिन की मृत्यु में ही अपने उद्धार का मार्ग देखता है, किन्तु स्तालिन के आसपास काम करने वाले उच्च अधिकारी और भी अधिक उत्सुकता से उसके जीवन का अन्त देखना चाहते हैं। इन शक्तिशाली और महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों में से प्रत्येक ने उस दिन की बड़ी सावधानी से तैयारी कर रखी है। जब 'प्रियनेता' 'रंगमंच' से विलीन हो जायगा।

उच्च सोवियत नेताओं के आन्तरिक झगड़ों का कुछ पता नहीं है। सबसे ताजा मामला अपने कई अत्यन्त प्रभावशाली साथियों के विरुद्ध मलेन्कोव का संघर्ष था, जिसने विरोधी गुटों के युद्ध का रूप धारण कर लिया। मलेन्कोव के सबसे भयङ्कर विरोधी जाद्नोव का १६४८ की गर्मी में इस गुप्त संघर्ष के बीच देहान्त हो गया। कुछ ही महीनों बाद उसके दूसरे मुख्य विरोधी मोलोतोव को, बार्लिन की घेरेबन्दी की विफलता के समय, अवनत कर दिया गया। फलस्वरूप मलेन्कोव को सबसे ऊँचा स्थान मिल गया है। सुनने में सनसनीपूर्ण होते हुए भी इन झगड़ों, कुचक्रों और संघर्षों की महत्ता को बढ़ा-चढ़ाकर कहना उचित न होगा। सोवियत यूनियन में 'मोलोतोव नीति' या 'मलेन्कोव नीति' नहीं है और न कभी 'जाद्नोव नीति' थी, केवल स्तालिन की ही नीति चलती है। स्तालिन को 'पोलित-ब्यूरो का बन्दी' कहना बेहूदापन है और यह विश्वास करना भी वाहियात है कि उसकी कार्यवाहियों का विरोध करने के लिए इस उच्चतम स्तर पर संगठित गुट मौजूद हैं। वह विरोध सहन नहीं करता और उसके अधिकार असीम हैं।

नेता पहले से तो कुछ निर्णय कर लेता है, उनकी स्वीकृति और क्रियान्वय के लिए ही प्रायः पोलितब्यूरो की बैठक बुलाई जाती है। जब नई समस्याएँ खड़ी होती हैं, तब पोलितब्यूरो के अन्दर मतभेद जरूर होते हैं और स्तालिन, जो एक अच्छा श्रोता भी है, अपने साथियों को अपना-अपना विचार व्यक्त करने की अनुमति देता है। किन्तु ज्यों ही समस्या स्पष्ट मालूम होती है, वह बोलता है और उसी का विचार मान्य होता है।

स्तालिन की विशेष स्थिति का पता उस समिति (Agency) से लग जाता

हैं जिसके वे स्वयं अध्यक्ष हैं—याने कम्युनिस्ट पार्टी की सेण्ट्रल कमेटी के विशेष विभाग (Special sector) से, जिसमें अपनी वफादारी के लिए सावधानी से चुने गए चार सौ से अधिक कर्मचारी हैं। यह संस्था स्तालिन की व्यक्तिगत कमान के अन्दर है, जो व्यक्तिगत सरकारी यन्त्र का काम करती है। यह 'स्पेशल सेक्टर' विभिन्न भागों और विभागों में विभक्त है, जो विदेशी मामलों, उद्योग, कृषि, विदेश-व्यापार, सैनिक मामलों, सुरक्षा के मामलों आदि पर अलग-अलग विचार करते हैं। इनमें स्तालिन का व्यक्तिगत 'एम० वी० डी०' 'सुरक्षा-विभाग' भी है, जो सर्वशक्तिमान लवेरन्ती बेरिया के बजाय सीधे तानाशाह के आदेशों पर चलता है। बेरिया मुख्य सोवियत आन्तरिक पुलिस और सुरक्षा सेना 'एम० जी० बी०' और 'एम० वी० डी०' का अध्यक्ष है।

बेरिया का डिवीजन १ (जो नेता के सुरक्षा-डिवीजन के नाम से भी प्रसिद्ध है) पोलितब्यूरो के सदस्यों की रक्षा के लिए जिम्मेदार होता है, चाहे वे राजधानी में हों, या यात्रा में हों, या सभाओं और प्रदर्शनों आदि में हों। क्रेमलिन के बाहर का गार्ड भी इसी के अधिकार-क्षेत्र के अन्दर होता है, जो आने-जाने वाले व्यक्तियों की जाँच करता और आगन्तुकों को पास जारी करता है। क्रेमलिन की दीवारों के भीतर के व्यक्तिगत भवन भी 'डिवीजन १' की रक्षा में होते हैं। केवल स्तालिन के व्यक्तिगत भवन और कार्यालय अपवाद होते हैं; इनकी रक्षा के लिए उसके घनिष्ठ मित्र बेरिया पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता। क्रेमलिन की इस आन्तरिक 'पुण्य-शाला' पर 'स्पेशल सेक्टर' की पुलिस का पहरा रहता है जो इस उद्देश्य के लिए 'सशस्त्र सेना' का एक दस्ता रखती है। सर्वोच्च नेता के ये अंग-रक्षक ही खुफिया पुलिस के प्रमुख अधिकारी होते हैं, क्योंकि स्तालिन का जीवन उसी की वफादारी और सुरक्षता पर निर्भर करता है। विशेष अधिकारियों का यह दल बेरिया के क्रेमलिन गार्डों पर भी नियन्त्रण रखता है।

मास्को शब्दशः कम्युनिज्म की राजधानी है। इस समय काम में लगे

३० लाख स्त्री-पुरुषों में से, जिनमें नगर की प्रायः सभी वालिग जनता आ जाती है, ४,०७,००० (बालिग आबादी का १३ प्रतिशत) कम्युनिस्ट-पार्टी के सदस्य हैं[१] और ४,८०,००० (१६ प्रतिशत) कम्युनिस्ट यूथ-लीग के सदस्य हैं। मास्को प्रान्त में, जहाँ की आबादी लगभग ६० लाख है, केवल एक लाख ६५ हजार कम्युनिस्ट है, अर्थात् कुल आबादी का केवल २ प्रतिशत।[२]

लेनिनग्राद से केवल दो लाख पार्टी सदस्य[३] है; युद्धकाल में इस तीस लाख की आबादी वाले नगर को भारी जन-हानि उठानी पडी थी। कुछ अन्य राष्ट्रीय प्रजातन्त्रों के आँकडे इस प्रकार है!

यूक्रेन की आबादी लगभग ४ करोड है; यहाँ ६,८४,००० कम्युनिस्ट सदस्य है। १९४० से केवल ३१ प्रतिशत वृद्धि के साथ यह संख्या कुल आवादी की दो-फी सदी से भी कम है। श्वेत रूस (Bielorussia) की आबादी १ करोड है जिसमें १,१०,००० कम्युनिस्ट है, याने लगभग १·१ प्रतिशत।

कजाक प्रजातन्त्र की आबादी ६० लाख से अधिक है, जिसमें २,२९,००० पार्टी-सदस्य है—लगभग ४ प्रतिशत।

जार्जिया की आबादी लगभग ३५ लाख है, जिसमें १६६,००० कम्युनिस्ट है—लगभग ५ प्रतिशत। किर्गीज (Kirghiz) की जन-सख्या १५ लाख है, कम्युनिस्ट ४६ हजार या ३ प्रतिशत है।

लिथुआनिया की आबादी ३० लाख है; कम्युनिस्ट सदस्य केवल २४ हजार अर्थात् ०·८ प्रतिशत है।

लटेविया में ३१२०० कम्युनिस्ट सदस्य है, जिनमें से केवल ५० प्रतिशत अर्थात् कुल आबादी का १·५ प्रतिशत लटेवियन[४] है।

१. Latest data available are for 1949.

२. Bolshevik. February 28, 1949.

३. Pravada, May 1, 1950,

४. Sotsialistichesky Vestnik (1950), No 7.

समस्त सोवियत-यूनियन में पार्टी की सदस्य-संख्या कुल आबादी की ३.७ प्रतिशत है।

सोवियत-संघ के विभिन्न प्रजातन्त्रों में भिन्नताएँ कम्युनिज्म के प्रति जन-वृत्ति के किसी भेद की सूचक नहीं हैं वह दिन लद गये जब रूस में यह बात सत्य थी। ये उक्त क्षेत्रों में अधिकारी-वर्ग की संख्यात्मक शक्ति की द्योतक हैं। लिथुआनिया, पश्चिमी यूक्रेन और पश्चिमी श्वेत रूस-जैसे नव गठित प्रान्तों में पार्टी स्थानीय संस्थाओं को सामान्य राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में सफल नहीं हुई है।

स्पष्ट कारणों से पार्टी ने अधिक समय से अपनी पूर्ण सदस्यता के आँकड़ों को प्रकाशित करना बन्द कर दिया है, जो बड़े ही दिलचस्प होते थे। इसलिए सदस्यों की सामाजिक स्थिति, राष्ट्रीयता और उम्र का ठीक-ठीक अन्दाजा लगाना असम्भव है। पत्रों में प्रकाशित फुटकर और अपूर्ण सूचनाओं से यह प्रकट है कि आज के अधिकांश पार्टी के सदस्य युद्ध-काल में और युद्ध के बाद सदस्य बने हैं और न केवल क्रान्ति के पूर्व के पुराने बोल्शेविकों की, बल्कि १६२० के राजनीतिक अनुभव-प्राप्त कम्युनिस्टों की संख्या भी धीरे-धीरे घट रही है। हर महीने ये वयोवृद्ध कम्युनिस्ट नये-नये कम्युनिस्टों को स्थान देकर पीछे हटते जा रहे हैं। बहुमत पहले ही से उन स्त्री-पुरुषों का है या शीघ्र ही होने वाला है, जो युद्ध के समय नौजवान थे और किसी वीरतापूर्ण कार्य या धारा-प्रवाह भाषण के लिए पुरस्कार के तौर पर पार्टी में भरती किये गए।

बोल्शेविकों की प्रथम पीढ़ी ने जारशाही और सरमायेदारी के खिलाफ जंग किया था और उसे सामाजिक क्रान्ति के आदर्श से प्रेरणा मिली थी। पार्टी-रंगरूटों को सोवियत शासन के प्रथम दशक में ट्राट्स्की, स्तालिन और बुखारिन में से किसी को चुनना पड़ता था; रूस में समाजवाद की स्थापना के स्वप्न ने उनमें उत्साह का संचार किया। नये-नये रंगरूटों ने नाजी-सेना का सामना किया; उनकी प्रारम्भिक राजनीतिक शिक्षा में विदेशी आक्रमण, 'जर्मन पशुओं', सोवियत पितृभूमि, और क्रान्तिकारी नेता के बजाय राष्ट्रीय-

नेता के रूप में स्तालिन की शिक्षा दी जाती थी। दूसरे शब्दों में पार्टी के इन नवागन्तुकों की प्रथम राजनीतिक धारणा में 'कम्युनिज्म' का समावेश नहीं होता था और युवावस्था की धारणाएँ मन पर ऐसी छाप छोड़ जाती हैं जो जीवन-पर्यन्त अमिट रहती है।

गणना में आधिक्य का अर्थ नियन्त्रण नहीं होता और वह भी विशेष कर सोवियत-यूनियन की 'कम्युनिस्ट-पार्टी-जैसी संस्था में। वास्तविक सत्ता नेता और उसके मुट्ठी-भर सहायकों के हाथ से कभी बाहर नहीं गई है। जब कम्युनिस्ट पथ से विमुख कोई नई प्रवृत्ति प्रकट होती है तब स्तालिन या तो उसे दबा देता है या अपने काबू में कर लेता है। दूसरी अवस्था में वह उसे वैध बना देता है और अपने विचारों के अनुसार उसे सुधारते हुए अपने कार्य में मिला देता है। छल-कपट की यह महान् योग्यता ही लगभग ३० वर्ष से स्तालिन की सफलता का आधार रही है।

जब से पार्टी के नेतृत्व में सुरक्षा की भावना आई और निर्वाचन या क्रान्ति के द्वारा उलट-फेर का भय नहीं रह गया, तभी से उसने पार्टी की सदस्यता को एक नियन्त्रक-संस्था के बजाय नीति के सम्भाव्य साधन के रूप में देखना शुरू कर दिया। तो फिर, हजारों योग्य किन्तु राजनीतिक तौर पर उदासीन नागरिकों को भी पार्टी में क्यों नहीं भरती कर लिया जाय?

अब रूस के हर प्रमुख व्यक्ति को विभिन्न कम्युनिस्ट-संस्थाओं में आत्मसात् कर लेना ही लक्ष्य बन गया है। जो स्त्री या पुरुष किसी खास विषय में सब से आगे बढ़ जाता है, वह दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है और इस प्रकार एक शक्तिशाली नेता का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए प्रत्येक सफल 'बी कीपर' (Beekeeper), कृषि-शास्त्री, सिने-अभिनेता, मार्क्समैन (Marksman) या 'स्टारगेजर' (Stargazer) को पार्टी का सदस्य हो ही जाना चाहिए। यदि उसने कोई 'विशेषता' (Distinction) प्राप्त की है, तो उस पर दबाव डाला जाता है और अन्त में वह आम तौर पर पार्टी में शामिल हो ही जाता है। साधारणतया पार्टी-सदस्यों को दिये गए अधिकार अधिकांश सन्देहों को दूर करने के लिए पर्याप्त हैं। पार्टी का

उद्देश्य राष्ट्र के सभी प्रमुख स्तरों का आलिंगन करना है। इस नेतृ-वर्ग को 'नेता' के आदेश पर चलना होता है और 'नेतृ-वर्ग' को इसके बदले साधारण जनता का मार्ग-दर्शन करना होता है।

स्तालिन के विचारों के अनुसार एक समाजवादी समाज की रचना श्रमजीवी-वर्ग से होती है, जिसका कार्य-संचालन उसके बड़ों द्वारा अर्थात् कम्युनिस्ट-पार्टी द्वारा होता है।

जब युद्ध का हाहाकार शान्त हो गया और अराजकता के गर्भ-से विशाल नये-नये कार्यों की रूप-रेखाएँ प्रकट होने लगीं; तब वफादार सरकारी-कर्मचारियों के नये-नये जत्थों की जबरदस्त जरूरत पड़ी। उदाहरणार्थ, शान्तिकाल से सेना की संख्या दूनी या तिगुनी हो चुकी थी। भावी युद्ध की विशाल सेना के ढांचे के रूप में उसे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों में १० लाख कम्युनिस्टों को भाग्य-निर्णायक दिन के लिए तैनात रखना था। नागरिक प्रशासन और अधिकृत क्षेत्रों के आर्थिक-शोषण के लिए काफी मात्रा में अनुशासित पार्टी-सदस्यों की जरूरत थी। नव-प्राप्त सोवियत प्रदेश के स्थानीय कम्युनिस्ट बहुत थोड़े और अविश्वसनीय थे; पार्टी-सदस्यों की सारी-की-सारी सेनाओं को नये क्षेत्रों में प्रशासन और संगठन के कार्यों को सम्भालने, भाषण देने और समाचार-पत्र प्रकाशित करने के लिए भेजना था। 'एम० जी० बी०'—'एम० बी० डी०' को अपनी विशेष सेनाओं और विदेशों में अपार नये कार्यों के साथ लाखों कम्युनिस्टों की आवश्यकता थी। रूस के भीतर कम्युनिस्ट-यूनिट किसानों में छिटपुट फैले हुए थे और अधिकांश क्षेत्रों में 'सेलों' का नाम भी नहीं था, यह स्थिति सोवियत-शासन के लिए सर्वदा चिन्ता का कारण बनी हुई थी। अब सैनिक घर लौट रहे थे, इसलिए देश में पार्टी-जाल को सुदृढ़ बनाने का अच्छा मौका था।

अतएव पार्टी के लाखों नये सदस्यों को ठुकरा देना मूर्खता ही होती। पार्टी एक अत्यन्त अनुशासित संस्था है जिसमें असन्दिग्ध भक्ति के लोग हैं जो अपनी उच्च भक्ति के लिए पुरस्कृत हो चुके हैं। अब वह दिन नहीं रहा जब पार्टी के सिद्धान्त में सदस्यों को उसकी नीतियों पर विचार और

निर्णय करने का अधिकार था। आज के नये पार्टी-सदस्य में यह भावना कभी नहीं आएगी कि पार्टी के संचालन में भी वह भाग ले सकता है। पार्टी-कांग्रेस का कोई महत्त्व नहीं रह गया है; आखिरी कांग्रेस १२ वर्ष पहले हुई थी और अब यह सवाल नहीं उठाया जाता कि इससे हर तीसरे वर्ष कांग्रेस बुलाने के पार्टी-नियम का उल्लंघन होता है। सरकारी नीतियों पर इस प्रकार की रोक-थाम के अभाव को अब पूर्णतया स्वाभाविक माना जाता है।

नवयुवकों को भरती करने के साथ-साथ पार्टी ने उन्हें कम्युनिज़्म की व्यापक शिक्षा देने का निर्णय किया। पार्टी की सेण्ट्रल कमेटी ने इन नवजवानों के पाक-साफ दिल व दिमाग में स्तालिनवाद का सिद्धान्त ठूंसने के लिए एक जबरदस्त कार्यक्रम तैयार किया और उस पर अमल करने के लिए उन्हें स्थानीय पार्टी-संस्थाओं के पास भेजा। यह योजना आज तक इस युद्धोत्तर युग में पार्टी के प्रमुख कार्य-क्षेत्र का अंग बनी हुई है। ज़्यादातर यह कामयाब रही है लेकिन कुछ महत्त्वपूर्ण बातों में नाकामयाब भी रही।

युद्ध के समय से बहुतेरे विशेष स्कूल और यूनिवर्सिटियां खोली गई हैं या ज़्यादातर बढ़ाई गई हैं। आज वे सामाजिक विज्ञान के स्कूल बन गये हैं जिन पर कम्युनिस्ट-पार्टी की सेण्ट्रल कमेटी का नियन्त्रण है, एक 'प्रगतिशील पार्टी स्कूल' (Advanced party school) है, वह भी सेण्ट्रल कमेटी के नियन्त्रण में है, विभिन्न पार्टी-कमेटियों के अन्तर्गत बहुतेरे क्षेत्रीय (Regional) और स्थानीय स्कूल हैं। १९४६-४७ में पार्टी-यन्त्र के अन्तर्गत ११२००० 'प्रचारक' थे, १९४९ तक उनकी संख्या २५०००० हो गई। इनके अलावा ८० हजार ट्रेनिंग में थे। प्रचार-विभाग के प्रधान के अनुसार लेनिनग्राड में लगभग १७०००० पार्टी-सदस्य, जो वहां की कुल सदस्यता के लगभग ८५ प्रतिशत थे, स्कूलों में, अध्ययन-मण्डलों में और व्यक्तिगत रूप से मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन कर रहे थे, १५ हजार कम्युनिस्ट नियमित रूप से व्याख्यानमालाओं में सम्मिलित हो रहे थे,

७ हजार परामर्शदाता घरों पर या पुस्तकालयों में अध्ययन करने वाले 'कामरेडों' को सक्रिय रूप से सहायता कर रहे थे।

१९४९-५० में यूक्रेन में ६६८४ 'राजनीतिक स्कूल' थे, १४८६० मण्डल लेनिन और स्तालिन की जीवनियां पढ़ रहे थे, १३३९६ मण्डल स्तालिन का 'कम्युनिस्ट-पार्टी का इतिहास' पढ़ रहे थे; और ६७८ 'रात्रि-कालीन पार्टी-स्कूल' थे। यूक्रेन के बड़े-बड़े नगरों में १६ 'रात्रि-विश्व-विद्यालय' थे जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन में संलग्न थे, १९४८ में ६००० विशेष स्कूल थे, जिनमें ४० हजार से अधिक 'लेक्चरर' काम करते थे और कुल ८६ हजार व्याख्यान दिये गए। इन शैक्षणिक-संस्थाओं में ९६ प्रतिशत पार्टी सदस्य थे। अजरबैजान प्रजातन्त्र में, जिसकी आबादी केवल ३२ लाख थी, पार्टी-संस्थाओं ने १६ हजार व्याख्यानों की व्यवस्था की। बाल्टिक प्रजातन्त्रों में, जो अभी तक पूर्ण रूप से विलीन नहीं हुए थे, बहुत बड़े पैमाने पर सैद्धान्तिक प्रचार-कार्य चल रहा था। १९४९ में लघु लिथुआनिया में, उदाहरणार्थ, कम्युनिस्ट रात्रि-विश्वविद्यालयों में २९१५ स्त्री-पुरुष अध्ययन कर रहे थे।

सोवियत-पत्रों में इस प्रकार के आँकड़े नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं; इससे सैद्धान्तिक प्रचार के उत्कट प्रयासों का आभास मिलता है। न तो युद्धपूर्व के सोवियत यूनियन के इतिहास में और न हिटलर के जर्मनी के इतिहास में, जहाँ व्यापक पैमाने पर नाज़ी अधिकारियों की शिक्षा चल रही थी, इस तरह की चीज पाई जा सकती है।

इस शिक्षा-कार्यक्रम के दो उद्देश्य रहे हैं—(१) 'कम्युनिज़्म' की स्तालिन-वादी प्रणाली को समझना और पार्टी-नेतृत्व के प्रति वफादारी की गहरी भावना भरना; (२) कुशल और प्रतिभाशाली अधिकारियों को, जो अपने कार्य की और विशेषकर आर्थिक-क्षेत्र के अपने कार्य की महानता से परि-चित हैं, ट्रेनिंग देना। राजनीतिक चेतना उत्पादन-वृद्धि की कुंजी समझी जाती है। अच्छे कम्युनिस्टों के प्रशिक्षण का अर्थ आर्थिक उन्नति है। इस तरह शिक्षा से अधिक वफादारी और अधिक अच्छे कार्य की आशा की

जाती है।

जो भी हो, नये कम्युनिस्टों में कम्युनिज़्म के प्रति दृढ़ विश्वास भरने और पश्चिमी संसार के प्रति घृणा पैदा करने में अपार सफलता नहीं मिली। एक अधिकारी बोल्शेविक का स्पष्ट शब्दों में उद्देश्य इस प्रकार था—"सोवियत यूनियन की सम्पन्न अर्थ-प्रणाली और संस्कृति तथा जन-लोकतन्त्र से पूँजीवादी देशों की पतनशील अर्थ-व्यवस्था और संस्कृति की तुलना करना; युद्ध के बाद एंग्लो-अमेरिकन जंगखोरों की लूट की योजनाओं का जोरदार और रोषपूर्ण शब्दों में भण्डा-फोड़ करना; सोवियत नागरिकों की सतर्कता को बढ़ाना और उन्हें महान सोशलिस्ट पितृभूमि के प्रति गर्व का अनुभव करने की शिक्षा देना।[1]

पार्टी सदस्यों ने सिद्धान्त-प्रचार के इस आन्दोलन में नगण्य रुचि प्रदर्शित की है। आज्ञाकारी और परिश्रमी होते हुए भी उन्होंने इसे पेशेवर या श्रमजीवी व्यक्ति के लिए एक विकट भार समझा है। पार्टी अपने आदेश का पालन करने के लिए विवश कर सकती है, किन्तु वह जबरदस्ती उत्साह नहीं पैदा कर सकती। 'प्रवदा' ने पार्टी-स्कूलों में 'कम अनुपस्थिति' के बारे में प्रायः शिकायत की है। उसने रिपोर्ट की कि जहाँ तक 'व्यक्तिगत अध्ययन' के कार्य का सम्बन्ध है, जिन लोगों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल सिद्धान्तों के व्यक्तिगत अध्ययन के लिए नाम लिखाए हैं, वे वास्तव में बहुत ही कम काम करते हैं और अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति में भी असफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त अत्यन्त योग्य और कुशल व्यक्ति भी व्याख्यान और शिक्षण-कार्य को अपने छात्रों की तरह भार समझकर उनसे बचने की कोशिश करते हैं।

परिणाम यह होता है कि नये ढंग के कम्युनिस्ट पार्टी-सदस्य के लाखों प्रतिनिधियों का जन्म होता है। वह सामान्य सोवियत नागरिक की अपेक्षा अधिक युवक, शक्तिशाली और महत्वांक्षी होता है और अधिकारियों का आज्ञाकारी होता है। किन्तु कम्युनिस्ट दर्शन और कार्य के अधिकांश नियमों

१. Bolshevik (1949), N-17.

के प्रति उदासीन रहता है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूलभूत सिद्धान्तों का उसके लिए प्रायः वही मूल्य है जो उसके पिता के लिए प्रार्थनाओं का मूल्य था। मशीन की तरह किसी काम को बिना उसका अर्थ समझे करते जाना है।

ये कम्युनिस्ट रूस में प्रचलित पश्चिम-विरोधी आन्दोलन को तो और भी कम समझते हैं। आज रूस में राष्ट्रीय पिछड़ेपन की भावना उतनी ही व्यापक है, जितनी एक शताब्दी से रही है। वास्तव में युद्ध-काल में इस भावना को और भी उग्र बनाया गया, जब कि लाखों रूसियों ने, जिनमें अधिकांशपार्टी के नये सदस्य थे, अपनी आँखों से पश्चिम को देखा—किसानों के जीवनस्तरों, मजदूरों के क्वार्टरों और सफाई की हालत को देखा—एक शब्द में पश्चिम की 'संस्कृति' को देखा। क्रान्ति के समय से रूस में 'संस्कृति' शब्द ने नया अर्थ ग्रहण कर लिया है; इसका अर्थ है, अच्छी चाल-चलन, विनम्रता और सफाई। मास्को और अन्य नगरों में 'संस्कृति' और 'आराम' के लिए पार्क हैं। फर्श पर थूकना असभ्यता का द्योतक है, खिड़की पर परदा लगाना संस्कृति का लक्षण है। इस अर्थ में 'संस्कृति' शब्द जन-मन में सर्वदा 'पश्चिम' के साथ जुड़ा रहता है। रूस में संस्कृति के वादविवाद के समय 'पश्चिम' को सर्वदा किसी-न-किसी तरह जरूर लपेट लिया जाता है। अमेरिकी-पत्रों के साधारण पाठक 'पश्चिम को नतमस्तक' (Kowtowing to the west) के विरुद्ध सोवियत आदेशों-निर्देशों से परिचित हैं। जो बात साधारण तौर पर ज्ञात नहीं है, वह यह है कि जिस पटुता और कठोरता से अधिकारियों ने यह आन्दोलन चलाया, उसका परिणाम निराशाजनक ही रहा। यह आन्दोलन युद्ध के ठीक पहले जर्मनी में चलने वाले आन्दोलन से भी अधिक भयानक और हिंसात्मक था। इसके वर्णन की आवश्यकता इसलिए है कि इसे मुख्यतः जनता की उदासीनता का ही सामना करना पड़ा।

कम्युनिज़्म के विरुद्ध संघर्ष में एक भूतपूर्व कम्युनिस्ट एक बड़ी समस्या होता है और इसीलिए उस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती

है। गुजरते हुए हर साल के साथ साहित्य और राजनीति में उस 'भूत-पूर्व' का कार्य बढ़ता जाता है और वह अधिकाधिक सुपरिचित व्यक्ति बन जाता है।

भूतपूर्व कम्युनिस्ट और अपना विचार बदलने वाले किसी दूसरे राजनीतिक व्यक्ति के बीच महान् अन्तर होता है। रिपब्लिकन डेमोक्रेट हो सकता है और डेमोक्रेट रिपब्लिकन, किन्तु इस प्रकार के परिवर्तन के पीछे सम्बन्धित व्यक्तियों के सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में कोई बड़ी कटुता नहीं उत्पन्न होती और न कोई उथल-पुथल मचती है। सम्पादक और सीनेटर भ्रम मिट जाने पर या ऊबकर चुपके-से सार्वजनिक जीवन से बाहर निकल आते हैं मानो वे किसी आकस्मिक मनोरंजन (Hobby) का परित्याग कर रहे हैं।

जो लोग कम्युनिस्ट रथ से बँधे हुए हैं, उनका सम्बन्ध-विच्छेद कोई मामूली बात नहीं है। इसके पीछे एक व्यक्तिगत संकट, निराशा और तीव्र भावुकता का जन्म होता है और व्यक्तिगत जीवन में अतीत और वर्तमान के बीच भेद की एक मोटी रेखा पड़ जाती है। सम्बन्ध-विच्छेद के बाद भूतपूर्व कम्युनिस्ट अपने साधारण दैनिक-कार्य में नहीं लग जाता। वह चैन से बैठ नहीं सकता। वह पार्टी का भयानक शत्रु बन जाता है।

पार्टी में सम्मिलित होने का उसका निर्णय—कम-से-कम गैर-कम्युनिस्ट पश्चिम में—नैतिक, राजनीतिक और सामाजिक भावनाओं का परिणाम था जिस पर व्यक्तिगत लाभ की आशा का कोई प्रभाव नहीं था। अधिकतर मामलों में उसने पार्टी में कोई उच्च वैतनिक पद नहीं ग्रहण किया, अतएव वह ऊँची आय से भ्रष्ट नहीं था। किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी के सुयोग्य सदस्य के रूप में उसने जिस तरह का जीवन-पथ ग्रहण किया था, वह कम्युनिस्ट होने पर शायद ही उसे मोअस्सर हो। उसके भाग्य में तीव्र संघर्ष, क्रान्तिकारी कार्य और सम्भवतः विदेशी शक्ति की सेवा करना बदा होता है।

भूतपूर्व कम्युनिस्ट में एक लम्बे अर्से से कुरबानी की भावना भरी होती

है। पार्टी-सदस्य की हैसियत से उसने अपनी सारी विशिष्ट दक्षता और अपना सारा बाकी समय पार्टी के हित के लिए दे दिया। सभाओं, अध्ययन-मण्डलों और स्कूलों में; जहाँ उसने स्तालिनवाद के कल्पित विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की थी, उसकी उपस्थिति अनिवार्य थी, पार्टी-पत्र पढ़ना कर्तव्य था।

कुछ समय बाद वह नेता और शिक्षक बन गया। उसे पता चला कि कम्युनिस्ट कार्यों में भाग लेने से निरन्तर नैतिक और मानसिक दबाव पड़ता है। कम्युनिस्ट-पार्टी की नैतिकता युद्ध-क्षेत्र की नैतिकता है; सभी साधन उचित हैं, झूठ और दग़ाबाजी जायज हैं, सच्चाई को छिपाना आवश्यक है। सैनिक-युद्ध के विपरीत यह संघर्ष वर्षों और दशकों तक चलता रहता है। पार्टी की पैंतरेबाजी रोज का काम हो जाता है और मिथ्यावादिता जड़ पकड़ लेती है। जो चीज युद्ध-क्षेत्र के क्षणिक दबाव में सह्य होती है, वही मानसिक-स्थिति के लिए असह्य बन जाती है। रूस में आतंक और दासता के अस्तित्व के सरकारी खण्डन से और मजदूरों की भयानक दशा के बावजूद उस देश के 'मजदूरों के स्वर्ग' के रूप में चित्रण से अनेक कम्युनिस्टों की आत्मा पर विशेष आघात पहुँचा है।

जब सम्बन्ध-विच्छेद होता है तो आतंक, उन्माद और घृणा, सामाजिक चेतना और सुन्दर-जीवन प्रणाली प्राप्त करने की प्रेरणाएँ काफ़ूर नहीं हो जातीं। वे उल्टे इंजिन की तरह क्रियाशील बनी रहती हैं। समर्थन की हिंसा विरोध की हिंसा बन जाती है। आग बरफ हो जाती है और धन ऋण बन जाता है, लेकिन शून्य नहीं बनता। भूतपूर्व कम्युनिस्ट रूस और कम्युनिज़्म को अपने दिमाग से नहीं निकाल सकता; उदासीनता का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

पश्चिमी एवं रूसी कम्युनिज़्म के काल्पनिक और सैद्धान्तिक विघटन ने आज आलोचनात्मक महत्त्व ग्रहण कर लिया है। मध्य शताब्दी तक कम्युनिज़्म ने इतने अनुयायी प्राप्त कर लिए हैं और वह इतने दिल व दिमागों में घुस चुका है कि बाहर से इस प्रवृत्ति की पराजय अधिकाधिक असम्भव

होती जा रही है। इसकी पराजय के पहले आन्तरिक संकट उत्पन्न हो सकता है, महत्त्वपूर्ण व्यक्ति और गुट-के-गुट पार्टी से अलग हो सकते हैं और स्तालिनवाद के कट्टर समर्थक उसका खण्डन कर सकते हैं। यह प्रक्रिया, जैसा कि ऊपर कहा गया है, आरम्भ हो गई है, किन्तु अभी शैशवावस्था में है। इसका जो रूप हम शीघ्र ही देखेंगे, वह निश्चय ही कहीं अधिक भयङ्कर रूप धारण कर लेगा।

: १० :

हिज़ मजेस्टी 'ब्लाट' (ब्लाट देव की कृपा)

सोवियत राष्ट्रीय-योजना का अद्भुत यन्त्र घड़ी की तरह नियमित रूप से स्वतः काम करता रहता है। विशाल सोवियत यूनियन की अर्थ-प्रणाली फ़िनलैण्ड के जंगलों से मंचूरिया की पहाड़ियों तक एक भीमकाय यन्त्र की तरह काम करती है और बटन दबाते ही चलने लगती है। सप्ताह में प्रति काम के दिन सुबह ठीक ८ बजे इस यन्त्र के असंख्य छोटे-छोटे पहिये, लीवर्स और चर्खियाँ घूमने, चलने, दौड़ने, चक्र लगाने, पैदा करने और काटने लगती हैं और सायं ५ या ६ बजे, जब पूर्वायोजित और अनुमानित अपार गतिविधियाँ पूरी हो जाती हैं तब अरबों रूबल का सामान और सेवाएँ तैयार हो जाती हैं २० करोड़ रूसी जनता में वितरित करने के लिए। इस 'योजना' को वास्तव में बड़े अक्षरों में लिखना चाहिए।

इस आकर्षक बाह्य दीवार के पीछे स्वतन्त्र व्यापार और स्वतन्त्र मूल्यों की एक-दूसरी दुनिया है जिसे लाखों के षड्यन्त्र से गुप्त रखा जाता है, जिसकी न कोई खबर दी जाती है और न जिसका गुणगान किया जाता है। इस दुनिया में बाजार की विचित्र अराजकता है, जिसमें स्वार्थ-साधन, मुनाफ़ाखोरी और व्यापक पैमाने पर अनुचित व्यापार का मार्ग खुला हुआ है। जिस तरह भलाई के साथ बुराई, सुन्दरता के साथ कुरूपता, पुण्य के साथ पाप लगा रहता है, उसी तरह इस शानदार योजना के साथ आर्थिक

गड़बड़ी भी लगी हुई है। व्यवस्था और अव्यवस्था दोनों एक-दूसरे की पूरक और सुधारक हैं। विशुद्ध पूँजीवाद साम्यवाद को सम्बल प्रदान करता है। बिना लाइसेंस और बिना योजना के इस व्यापार के महाजाल को रूसी भाषा में 'ब्लाट' कहते हैं।

इस गुप्त अर्थ-व्यवस्था का विस्तार बड़ा ही आश्चर्यजनक है। यह उतनी ही विस्तृत है जितना स्वयं रूस। अधिकारी-गण इसके अस्तित्व को भली-भाँति जानते हैं, किन्तु कार्य-साधन के रूप में इसे सहन करते हैं।

'ब्लाट' कोई युद्धोत्तर नवीन पद्धति नहीं है, बल्कि सोवियत-प्रणाली के आरम्भ से ही इसका अस्तित्व है। किन्तु सरकार का रुख डावांडोल और विरोधपूर्ण रहा है।

समय-समय पर चोर बाजार और घूसखोरी को बड़ी सख्ती से दबा दिया गया; इस तरह के अपराधों के लिए मृत्यु-दण्ड की व्यवस्था की गई; और वास्तव में बहुतेरे अपराधियों को, जिनमें कुछ मामूली अपराधी भी थे, अवैध व्यापार और अवैध 'उपहार' के लिए अपने प्राण गंवाने पड़े। फिर —द्वितीय दशक में 'नेप'(Nep) की तरह 'सेफटी वाल्व' (Safety Valve) खोला गया और थोड़े समय के लिए स्वतन्त्र व्यापार को सहन ही नहीं किया गया, बल्कि प्रोत्साहित भी किया गया। बहुतेरे सरकारी अधिकारियों ने उचित लाभ की आशा के प्रलोभन में आकर 'नेप' के आदमियों के साथ सहयोग किया। लेकिन फिर वामपक्ष की ओर घुमाव हुआ और निजी आर्थिक-व्यवसाय के लिए कठोर दण्ड की फिर व्यवस्था की गई और पूँजीवाद-विरोधी भावना पुनः प्रबल हो उठी। अन्त में तृतीय दशक के मध्य से एक ऐसी प्रणाली का जन्म हुआ है जिसमें कठोर राज्य अर्थव्यवस्था के साथ-साथ कोल्कोज किसानों के लिए सीमित स्वतन्त्र व्यापार की अनुमति दी गई। सच पूछा जाय, तो इन दोनों ही तत्त्वों की पूर्ति उत्तरोत्तर बढ़ते, फैलते और फलते-फूलते 'ब्लाट' से—अर्थात् अवैध आर्थिक कार्यवाहियों के वातावरण से की गई। सोवियत अर्थ-व्यवस्था के प्रथम दो तत्त्वों का खूब प्रचार किया गया और बाहर-भीतर सभी लोग उनको जानते हैं किन्तु तीसरे तत्त्व 'ब्लाट'

को साधारण पत्रों से इस तरह दूर रखा गया कि उसके महत्त्व को कोई समझ नहीं पाया, जब कि वास्तविकता यह है कि सोवियत नागरिक के दैनिक-जीवन में इसका बहुत बड़ा स्थान है।

अनेक व्यक्तिगत वर्णनों से चुने गये कतिपय तथ्य और विवरण इस प्रकार हैं:—

श्वेत रूस (Bielorussia) के आन्तरिक व्यापार-विभाग के एक युवक कर्मचारी याकोव करास को अपनी एजेन्सी के लिए भारी मात्रा में कम्बल प्राप्त करने के लिए ग्रोडनो से ब्यालीस्टाक भेजा गया। जब उसने कपड़े की दुकान पर अपना परिचय-पत्र दिया तब मैनेजर ने उससे कहा, "यदि आप ३५ प्रतिशत कम्बल मेरी मरजी पर छोड़ दें तो आप इन कम्बलों को ले जा सकते हैं। लेकिन आपको सभी के लिए रसीद देनी होगी।

युवक करास, जिसने अपनी सारी कहानी विवरण के साथ मुझे बताई, एक अनुभवहीन और भोला-भाला व्यक्ति था। वह चोरी, बेईमानी और डाकेजनी के खिलाफ़ बरस पड़ा। लेकिन मैनेजर शान्त रहा और कहा, "अच्छी बात है, यह तो आप पर है, जो चाहें करें।" गुस्से से आगबबूला हो, याकोव उसी नगर में अपने दो पुराने मित्रों से मिलने चला गया। वह चिल्ला पड़ा, "सोचिए तो, रात में कड़ाके की सरदी, अस्पतालों में कम्बलों की कमी और यह लुटेरा मुझसे ही मेरे कम्बलों को लेने का प्रयत्न कर रहा है। मैं 'एम० वी० डी०' के सामने उसका भंडाफोड़ करूँगा और वह वर्षों के लिए काँटेदार तार के भीतर बन्द कर दिया जायगा।"

उसके मित्रों ने कहा, "ऐसा न करो, वह हर बात से इन्कार कर देगा और तुम्हारे पास सबूत के लिए गवाह नहीं हैं। मुकदमा शुरू करने में हफ़्तों लग जायँगे। अच्छा होगा उसका प्रस्ताव मान लो और जो मिले, ले लो।"

करास खिन्न हो गोदाम पर लौटा। उसने मैनेजर से एक ही सवाल किया, "मैं अपने एकाउन्टेन्ट को क्या जवाब दूँगा?" उसने जवाब दिया, "इसकी फिक्र न करो, एकाउन्टेन्ट खुद इसका इन्तजाम कर लेगा।" यह बड़ा रहस्यपूर्ण जान पड़ा, किन्तु करास ने अपने कम्बल बटोरे और घर की

ओर चल पड़ा। जब वह अपने दफ़्तर में पहुँचा तो उसका गला भरा हुआ था, लेकिन एकाउन्टेन्ट को उसकी कहानी सुनकर जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। वह न तो क्रुद्ध था और न निराश। उसने कहा, 'ठीक है, मैं १० प्रतिशत ले लेता हूँ और बाकी गोदाम में दे दो। करास ने, जो पहले ही एक तिहाई खो चुका था, कोई एतराज या बहस न की। उसने चुपचाप मंजूर कर लिया—गोदाम पर सुपरिन्टेन्डेन्ट ने सिर्फ अपने लिए कुछ कम्बल माँगे।

इस व्यापार से सम्बन्धित चारों व्यक्तियों में करास ही कच्चा था। दूसरे वर्षों से व्यापार कर रहे थे, बाजार में तरह-तरह के सामान सप्लाई कर रहे थे और कुछ अपने लिए भी मुनाफ़ा कमा रहे थे। इस प्रकार मिला अतिरिक्त हिस्सा (Lion's sharc) निश्चित सरकारी मूल्य से कहीं अधिक भाव पर चोर-बाजार (Rynok) में बेच दिया जाता है।

'रीनाक' साधारण बाजार नहीं है, जैसा कि आप समस्त संसार में हर बड़े नगर में पाएँगे। बड़े-बड़े शहरों में 'रीनाक' स्टालों पर प्रायः कोई भी चीज देखी जा सकती है, जब कि सरकारी दुकानों की अलमारियाँ खाली पड़ी रहती हैं। शायद ही किसी मौके पर पुलिस बाजार में हस्तक्षेप करती है, यद्यपि वह इन सब बातों को जानती है।

३० वर्ष पूर्व जब मार्क पोर्टनोय (Marc Portnoi) से मेरा परिचय हुआ, उस समय वह पेट्रोग्राड यूनीवर्सिटी में छात्र था। वह एक अच्छा 'वायलिनिस्ट', शान्त स्वप्नद्रष्टा था और आँखों पर भारी चश्मा लगता था। वह कविताएँ लिखता और कानून का अध्ययन करता, किन्तु अपनी शिक्षा की उपयोगिता के बारे में उसकी भावना स्पष्ट नहीं थी। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच उसकी अपनी निराली दुनिया थी; यों ही जोश में आकर उसने विवाह कर लिया और अब, जैसा कि मुझे मालूम हुआ है, उसकी दो लड़कियाँ हैं। मार्क को ईमानदार कहना ही कम होगा; वह उन मानवों में था, जो प्रयत्न करने पर भी स्वभावतः बेईमान नहीं हो सकते।

क्रान्ति के कुछ वर्षों बाद मुझे मार्क का पता नहीं चला। रूसी-पत्रों में

मैंने कभी उसका नाम नहीं देखा। वह न तो लेखक था और न वक्ता; और उसमें राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ भी नहीं थीं। संयोग से मुझे हाल में मालूम हुआ है कि पोर्टनोय एक बड़े प्रान्तीय नगर में रहता है जहाँ वह 'अण्डरवियर' तैयार करने वाली एक बड़ी मिल में डिप्टी डायरेक्टर के पद पर काम करता है। मुझे बताया गया कि उसकी मौजूदा तनख्वाह खराब तो नहीं है, लेकिन उसकी और उसके परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं है।

रूस में अधिकांश प्रकार के लिनेन, वस्त्रों और कपड़ों की माँग पूर्ति से कहीं अधिक है। अन्य नगरों और प्रान्तों से ऑर्डर-पर-ऑर्डर आते हैं और खरीदार मार्क के कारखाने में यथासम्भव अधिक-से-अधिक माल लेने के लिए पहुँचते हैं। डायरेक्टर और उसके सहायक अधिक या कम आकर्षक प्रस्तावों पर बड़ी सावधानी से विचार करते हुए बिक्री की व्यवस्था करते हैं, ताकि दूसरों की कीमत पर कुछ को तरजीह दी जा सके।

जिस व्यक्ति ने स्वप्नद्रष्टा मार्क के बारे में खबर दी, वह साशा ग्रोन्स्की था, जो ६ वर्ष से उसके सम्पर्क में था। साशा पोल १६४० तक, जब कि नये सोवियत अधिकारियों ने नौजवान स्त्री-पुरुषों को डॉक्टर, इंजीनियर या मजदूरों के रूप में रूस भेजने के लिए भरती करना शुरू कर दिया था, अपनी पत्नी के साथ लोवो (Lwow) के निकट रहता था। पोलों ने कोई उत्साहवर्द्धक उत्तर नहीं दिया, किन्तु ग्रोन्स्की ने सोवियत-प्रणाली की सफलताओं के बारे में बहुत-कुछ सुना था और उसने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। शीघ्र ही वह एक सोवियत 'आर्टेल' में दरजी का काम करने लगा। 'आर्टेल' मजदूरों का एक समूह होता है जो राज्य द्वारा मान्य होता है और जिसके पास अपनी पंचवर्षीय योजना होती है। उसे सारी सामग्री राज्य से प्राप्त होती है और वह निश्चित मूल्य पर अपना माल बेचती है, जिससे उसके सदस्य एक साधारण औद्योगिक मजदूर से अधिक नहीं कमाते।

पहले तो साशा की हालत खराब रही। 'आर्टेल' में उसके लाभ का

हिस्सा कई सौ रूबल मासिक होता था। अन्य मजदूरों की तरह उसके पास अपना शाक-भाजी का बाग नहीं था और न पास-पड़ोस के किसानों में उसका कोई सम्बन्धी था। साशा बेईमानी के व्यवहार से घृणा करता था। वह एक धार्मिक पुरुष का पुत्र था और प्राचीन ढंग की रीति-नीति में उसका पालन-पोषण हुआ था। वह बेईमानी के किसी कार्य को करने से इन्कार कर देता था और कानूनी शिकंजे से बराबर डरता रहता था। इसका नतीजा यह हुआ कि साशा को कभी भी काफी भोजन नहीं मिला और प्रायः उसके परिवार को सूखी रोटी पर गुजर करनी पड़ती थी।

एक दिन एक पड़ोसी साशा से मिलने आया और अपने लिए एक प्राइवेट सूट बनाने के लिए कहा। वह अपने साथ कपड़ा भी लाया—आवश्यकता से एक गज ज्यादा। यह एक गज साशा को देने के लिए था। वास्तव में यह कानून के खिलाफ था। 'आर्टेल' के बाहर प्राइवेट काम और चीजों के रूप में अदायगी, ये दोनों ही वर्जित थे। किन्तु प्रलोभन जबरदस्त था, साशा पहले-पहल उसमें फंस गया। वह दौड़ा हुआ बाजार गया, एक गज कपड़ा बेच दिया, अन्न और मक्खन (Butter) खरीदा और एक बार उसके परिवार ने भर-पेट भोजन किया। बाइबल में आदम की आँखें खोलने के लिए एक सेब काफी था। वस्त्र और भोजन के इस प्रथम अनुभव के बाद साशा अपने चारों ओर संसार को एक दूसरे ही ढंग से देखने लगा।

'आर्टेल' में पुरुषों के लिए नागरिक और सैनिक दोनों तरह की कमीजें तैयार होती थीं, किन्तु सामान की कमी से आधे समय तक उसका कारोबार ठप रहता था। साशा सोचने लगा कि आखिर कारण क्या है कि दूसरा 'आर्टेल' सर्वदा कार्य-व्यस्त रहता है और उसके सदस्य उत्तरोत्तर समृद्धि-शाली होते जान पड़ रहे हैं? जब दूसरे मजदूर सेना में चले गये तो साशा अपने विभाग का प्रधान चुन लिया गया और वह इस मामले में और भी अधिक सोचने लगा। संयोगवश कच्चा माल उस सूती मिल से आता था जहाँ उसका पुराना दोस्त मार्क पोर्टनोय सूत्रधार बना हुआ था। साशा वितरण-विभाग के प्रधान के पास गया जो जहाजी माल का भी अधिकारी

था। पहली मुलाकात में उन्होंने मौसम और लड़ाई के बारे में बातचीत की। दूसरी मुलाकात में कपड़े और मूल्य के बारे में बातचीत की और कुछ शराब भी पी। आखिर में साशा पूछ बैठा, "कारण क्या है कि दूसरे 'आर्टेल' को काफी कपड़ा मिल रहा है और मेरा 'आर्टेल' आधे समय तक बन्द रहता है?" उसने जवाब दिया—"क्यों, यदि आप भी निश्चित मूल्य से एक रूबल फी मीटर अधिक देना चाहें तो एक महीने में १० हजार मीटर ले सकते हैं।"

निश्चित मूल्य ८५ कोपेक्स प्रति मीटर था। चोर-बाजार में एक मीटर का भाव ३० से १०० रूबल तक था। साशा ने गैर-कानूनी तौर पर प्रति-मास यह अतिरिक्त १० हजार रूबल देना स्वीकार कर लिया। अन्य खर्चों की तरह रजिस्टर में यह अतिरिक्त मूल्य दर्ज नहीं किया जा सकता था और न उसके लिए कोई रसीद दी जा सकती थी।

अब पूर्ति की व्यवस्था हो जाने पर साशा का 'आर्टेल' भी खूब काम करने लगा। फिर भी, किसी-न-किसी तरह अतिरिक्त खर्च की पूर्ति करनी थी, अर्थात् कुछ कमीजों को स्वतन्त्र बाजार में बिक्री के लिए भेजना था। कमीजों को बेचने के लिए बहुतेरे तरीके थे; सबसे अच्छा तरीका उन्हें छोटी-छोटी राज्य-नियन्त्रित दुकानों को बेचना था जो तैयार माल के लिए काफी ऊँचा दाम देती थीं और उसमें से कुछ को तो सड़क पर लम्बी कतार में खड़े ग्राहकों को निश्चित मूल्य पर बेचती थीं और शेष को रूसी कहावत के अनुसार बाईं ओर बढ़ा देती थीं।

साशा ने इस अवैध चोरबाजार को संभालने के लिए एक विशेष बिक्री-एजेण्ट नियुक्त किया। यह एजेण्ट बड़ा ही चौकन्ना, तेज तथा होशियार था और अधिकारियों के साथ किसी खतरनाक झगड़े में कभी नहीं फँसा। उसे गुप्त काम देने के लिए ग्रोन्स्की ने दुकान में 'रात का पहरेदार' बनाया। यदि एक पहरेदार दिन-भर आसपास टहलता रहे तो उससे सन्देह नहीं पैदा होता। साशा के 'आर्टेल' की बेहिसाब कमाई का नियमित रूप से बटवारा होता और 'हिस्सेदारों' में उसे ईमानदारी से बाँट दिया

जाता। दुकान के भीतर और बाहर के लगभग ३० व्यक्ति इन व्यवस्थाओं को जानते थे, किन्तु कभी भी किसी ने दूसरे की निन्दा नहीं की।

इस बीच साशा और टेक्सटाइल्स मिल के मैनेजरों में—जिनमें मार्क-पोर्टनोय भी था—दोस्ती हो गई। अब साशा को शीघ्र ही यह मालूम हो गया कि वह तथा दूसरे लोग वितरण-विभाग को जो हजारों रूबल देते हैं, वह वास्तव में ऊपर के अधिकारियों में ही बट जाता है और प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी के पास अतिरिक्त आय का कोई-न-कोई साधन-स्रोत है। इनमें से अधिकांश कम्युनिस्ट हैं—कुछ तो विश्वास से और कुछ आवश्यकता-वश। उन्हें नियमित रूप से पार्टी 'सेल्स' और राजनीतिक पुलिस 'एम० जी० बी०' की पूछताछ के अन्दर जाना पड़ता है। लगातार कानून भंग करना ही नियम बन गया है और सोवियत-समाज में इसके लिए कोई अपवाद नहीं है।

यदि हम रूस,के औद्योगिक मजदूरों के जीवन-स्तर की ओर ध्यान दें तो हमें वही चित्र दिखाई पड़ेगा। रूस में एक मजदूर की औसत मासिक-मजदूरी एक जोड़ा जूता खरीदने के लिए भी काफी नहीं है और एक मामूली पोशाक खरीदने के लिए एक लड़की को कम-से-कम ६ सप्ताह की अपनी मजदूरी कुरबान करनी पड़ेगी। किन्तु एक शोधक-अस्त्र है, जो कभी-कभी 'प्राइवेट बजट' को बढ़ाने में सहायक हो जाता है : फिर वही पंच-वर्षीय योजना का अंधेरखाता याने 'ब्लाट की दुनिया।'

मार्टिन शारोव, जो १६१६ में गलेशिया के युद्ध के समय से पंगु बन गया था, को जीवन-निर्वाह में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। साबुन के कारखाने में, जहाँ वह काम करता था, काफी मजदूरी नहीं मिलती थी। जब वह बुड्ढा हो गया और उसकी स्त्री का देहान्त हो गया तो डायरेक्टर ने उसे कारखाने के फाटक पर गार्ड नियुक्त किया। शारोव को कारखाने में आने-जाने वाले मजदूरों की जांच करनी पड़ती थी। कभी-कभी उसे उनकी जेबों की तलाशी लेने का हुक्म दिया जाता था, रोज-रोज नहीं। सरकारी फारमूला यह था कि 'सरकारी जायदाद' के साथ पकड़े जाने

का भय ही अपराधियों को चोरी करने से रोकेगा।

लेकिन गरीबी सरकारी फारमूलों से ज्यादा ताकतवर होती है। कारखाने में काम करने वाले परिवारों के प्रधान और गृहिणियां यह समझ नहीं सकतीं कि वे अपनी घर की ग़रीबी में कुछ राहत पाने के लिए साबुन की कुछ बट्टियां क्यों न ले लें जो धनधान्य-सम्पन्न और शक्तिशाली सोवियत-यूनियन के लिए एक बहुत ही मामूली चीज है। मार्टिन शारोव भी उतना ही गरीब था, जितना दूसरे मजदूर थे और जब कभी उसे साबुन की तलाशी के लिए हुक्म दिया जाता वह बड़ी चतुरता से हाथ बढ़ाते हुए गिनता—"तीन बट्टियां····दो बट्टियां····चार बट्टियां···" और धीरे से उनको निकल जाने देता।

यदि उसे चोरी के बारे में रिपोर्ट नहीं करनी थी तो साबुन गिनने में कौनसा राज था? दूसरे दिन मजदूर अपनी चोरी का आधा माल ला कर मार्टिन को देते और उसे उन्हें अपने मन में याद रखना होता। वे वृद्ध मार्टिन के प्रति बड़े उदार थे, क्योंकि वह उनके लिए बड़ा अच्छा व्यक्ति था। उन्होंने कभी भी उसे धोखा देने की कोशिश नहीं की।

रूस-भर में सैकड़ों कारखानों के फाटकों पर यही प्रथा काम करती है, करती रही है और कर रही है।

अधिकारी 'ब्लाट' के इन कारोबारों को अच्छी तरह जानते हैं। इस संसार में सोवियत-पुलिस सबसे अधिक जानकारी वाली मानी जाती है। रूस में खाँसी और छींक की तरह प्रायः निन्दात्मक घोषणाएँ हुआ करती हैं। फिर भी पुलिस राजनीतिक मामलों को छोड़कर अन्य मामलों में उतनी सख्त और कठोर नहीं है जितना कोई सोच सकता है।

यदि सोवियत राज्य, उसके प्रधान या संस्थाओं के प्रति किसी नागरिक की वफादारी पर सन्देह हो जाय, तो उसके लिए क्षमा या दया के लिए स्थान नहीं है। किसी तरह की प्रार्थना या घूसखोरी मदद नहीं कर सकती। किसी व्यक्ति पर राजनीतिक शुबहा होने पर उसे जरूर गिरफ्तार कर लिया जायगा और किसी तरह की सहायता या दोस्ती फिर काम नहीं

आएगी। गिरफ्तारी या देश-निकाले का हुक्म निकल जाने पर उस पर बिना किसी हीला-हवाली के अमल करना ही होगा। कोई भी सोवियत पुलिस अफसर खूब अच्छी तरह समझता है कि उसके पीछे भी सख्त पहरा और निगरानी है और काफी मेहनत और कोशिशों से वह अपनी रोजी और जिन्दगी की हिफाजत करता है।

फिर चोरी, घूसखोरी, काला-बाजार और कत्ल-जैसे गैर-राजनीतिक अपराधों का एक बहुत बड़ा क्षेत्र खुला हुआ है जिसे देखने के लिए 'एम० वी० डी०' के आदमियों को 'ट्राट्स्कीवाद', 'द्रोहवाद' और 'अमरीकीवाद' के आरोपों की अपेक्षा ज्यादा आजादी होती है। रूसी पुलिसमैनों की श्रेणियों में 'एम० वी० डी०' के आदमियों का सबसे आखिरी स्थान होता है और घूसखोरी के कारण उसकी सख्ती में कुछ ढिलाई आ जाती है। वे खुद बहुत गरीब होते हैं और जिन्दा रहना चाहते हैं। वे 'ब्लाट' के कारोबार को भी अच्छी तरह जानते हैं; जो बेचारे इस तरीके से दो रूबल कमा लेने का इन्तजाम करते हैं, उन पर वे रहम करते हैं और महकमों के उन शक्तिशाली डायरेक्टरों और प्रधानों की बड़ी इज्जत करते हैं, जो उनकी जिन्दगी को कुछ आराम देने की ताकत रखते हैं।

वह किसी भी गोदाम या दुकान में यकायक पहुँचकर इधर-उधर देखने लगता है। मैनेजर उसे तुरन्त अपने ऑफिस में ले जायगा, कुरसी पर बैठाएगा और एक गिलास 'वोदका' (Vodka) भेंट करेगा। मैनेजर बड़ी ही नरमी से पेश आएगा, क्योंकि दोनों ही को मालूम है कि व्यापार में गड़बड़ी की गई है।

डायरेक्टर बड़ी उदारता से पूछेगा, "कामरेड पेट्रोव, आपका परिवार है?" "हाँ, कामरेड, एक स्त्री और दो बच्चे।" डायरेक्टर फिर पूछेगा, "क्या आपकी स्त्री को एक जोड़ा बढ़िया जूते की जरूरत है?"

पेट्रोव की स्त्री को जूते की सख्त जरूरत है और उसका वफादार शौहर सुनते ही खुश हो जाता है। लेकिन वह डरता भी रहता है कि कहीं उसे फँसाया तो नहीं जा रहा है। क्या यह प्रलोभन नहीं है? (रूस में इस शब्द

का प्रायः प्रयोग होता है।) वह अपने को बिलकुल उदासीन दिखाने की कोशिश करता है और जवाब भी नहीं देता। बजाय इसके वह मैनेजर को ही असमंजस में डाल देता है—"आपको याद है, गत सप्ताह रात को मैंने दुकान से एक ट्रक जाते देखा था···आप सच मुच किसको बेचते हैं?"

एक घण्टा होते-होते बातचीत में 'वोदका' (Vodka) का नशा चढ़ जाता है और दोनों को एक-दूसरे के हित का ख्याल चढ़ आता है। 'एम० बी० डी०' के आदमी को सन्तोष हो जाता है कि जूते की दुकान में कोई गड़बड़ी नहीं है। दूसरे ही सप्ताह उसकी स्त्री और बच्चे बड़े गर्व के साथ नया जूता पहनकर निकलते हैं—ऐसा जूता जैसा मास्को के लोग पहनते हैं। और सभी लोग खुश होते हैं।

इससे यह मालूम हो सकता है कि 'ब्लाट' के जाल से नैतिक पतन होता है और लोग गिरकर भोगी और घूसखोरी के स्तर तक पहुँच जाते हैं। लेकिन यह निष्कर्ष अनुचित होगा। वही लोग, जो अवैध व्यापार करने में संकोच नहीं करते अथवा अपनी जरूरतों के कारण उसके लिए मजबूर होते हैं, अपने व्यक्तिगत जीवन में ईमानदार मनुष्य और मित्र होते हैं। इस सोवियत-युग में साधारण रूसियों के राष्ट्रीय चरित्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। एक सच्चे मित्र के प्रति वफादारी कायम है, जरूरत पड़ने पर वह अपनी 'आखिरी कमीज' भी दे सकता है। स्त्री और पुरुष के बीच सच्चा और शुद्ध प्रेम, लज्जा और संकोच की उत्कट भावना अभी भी है।

वास्तविकता यह है कि आज रूसी जीवन में नैतिक आचार-विचार के दो पलड़े हैं—एक ओर राज्य-अर्थ-व्यवस्था और राज्य-सम्पत्ति के विरुद्ध लोगों में एकता की लोकप्रिय भावना और दूसरी ओर मनुष्य और मनुष्य के बीच और स्त्री तथा पुरुष के बीच सम्बन्धों पर 'पश्चिम' के प्राचीन नैतिक आचार-विचार का प्रभाव। किसी-न-किसी रूप में दोनों नैतिक-पद्धतियाँ साथ-साथ जीवित हैं और उनमें परस्पर संघर्ष नहीं होता। एक आदमी सरकारी सम्पत्ति को हजारों रूबल में बेच देता है, हर सप्ताह दण्ड-विधान का उल्लंघन करता है और इसकी जरा भी परवाह नहीं

करता। आज साधारण रूसी के लिए राज्य एक भयानक, शक्तिशाली और छिद्रवेषी 'देव' जान पड़ता है और व्यक्ति एक लघु और दीन-हीन मनुष्य जान पड़ता है। नागरिक को कानूनी जिम्मेदारी का निर्वाह तो करना ही है किन्तु वह इस 'विशाल देव' के प्रति नैतिक कर्तव्य महसूस नहीं करता।

'एम० वी० डी०' के पास चोरबाजार-विरोधी अभियान के लिए एक प्रकार की योजना होती है। अन्य योजनाओं की तरह इस योजना को भी पूरा करना होता है। रूस-भर में हर 'एम०वी०डी०' एजेन्सी और हर अदालत को चोर-बाजारी, ग़बन और घूसखोरी के लिए गिरफ्तारियों और सजाओं की मासिक संख्या को रिपोर्ट करनी होती है। मन्त्रालय इन रिपोर्टों की तुलना और छानबीन करता है। वर्षों के अनुभव और नई हिदायतों के आधार पर एक निश्चित संख्या गिरफ्तारियों की 'सामान्य' स्थिति मानी जाती है और वही दूसरी अवधि के लिए 'योजना' बन जाती है। इस तरह अपराधों और दुर्व्यवहारों की विभिन्न श्रेणियों में गिरफ्तारियों के लिए एक आँकड़े की योजना निकल आती है। हर अदालत अपनी योजना पूरी करती है। यदि गिरफ्तारियों और सजाओं के लिए निश्चित आँकड़े पूरे नहीं होते तो 'केन्द्र' इसे अपराधों में कमी का लक्षण नहीं मानता, बल्कि इसे पुलिस की लापरवाही समझता है। अफसरों को डाँटा फटकारा जायगा और उनकी तरक्की रोक दी जायगी। यही कारण है कि प्रतिमास और प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में लोगों को गिरफ्तार किया जाता है और उनके खिलाफ मामला सही है या झूठा, इसकी परवाह नहीं की जाती। ज्यादातर मामलों में अभियुक्त असहाय, बुद्ध्, अनुभवहीन और गरीब होते हैं।

वोरोनेज (Voronezh) में बेलोव की तीन बहनों (Belov Sisters) में से दो एक स्थानीय कारखाने में काम करती थीं। ये लड़कियाँ एक दिन चोरबाजार (Rynok) जाते समय कुछ गज 'लिनेन' (Linen) (पाट के वस्त्र) के साथ पकड़ी गईं। उनके उत्तर असन्तोषजनक थे और वे गिरफ्तार कर ली गईं। जब तीसरी बहन को यह समाचार मालूम हुआ तो वह

दौड़ती हुई अपने प्रेमी के पास गई, जो स्थानीय सोवियत में एक कर्मचारी था। वह 'प्रेमी' अपने एक पुराने साथी के पास गया, जो स्थानीय पुलिस (Militia) का प्रधान था। उसने प्रार्थना की—"वासिया, इन लड़कियों को जाने दो; तुम पर इसका क्या असर पड़ेगा?"

पुलिस-प्रधान ने कहा, "मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं नहीं जानता कि मुनाफाखोरी के लिए गिरफ्तारी का जून का कोटा अभी पूरा हुआ है या नहीं। अगर नहीं पूरा हुआ है, तो मैं सम्भवतः उन्हें छोड़ नहीं सकता। आधी रात तक इन्तजार करो; फिर हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं।"

लड़कियाँ जेल में इन्तजार करती रहीं। आधी रात को वह 'प्रेमी' लौटा। पुलिस-प्रधान ने खुश होकर कहा, "लड़के, तुम भाग्यवान हो! हमारी योजना जरूरत से ज्यादा याने ११२ फी सदी पूरी हो चुकी है!"

: ११ :

बहाना और असलियत

गत तीस वर्षों से भी अधिक समय से सामाजिक और निजी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से सोवियत-विकास की निरन्तर तीव्र धारा के साथ राज्य के क्षेत्र का उत्तरोत्तर विस्तार और व्यक्ति के क्षेत्र का ह्रास होता चला जा रहा है। आज 'पूर्ण राज्य' का विकास देखने में आ रहा है। एक के बाद दूसरा क्षेत्र व्यक्तिगत अधिकार के बाहर निकलता जा रहा है और राज्य के क्षेत्र में जुड़ता जा रहा है। पहले यह प्रक्रिया राजनीतिक क्षेत्र में आरम्भ हुई, फिर आर्थिक क्षेत्र में और उसके बाद शिक्षा और सिद्धान्त के क्षेत्र में। सैनिकीकरण (Regimentation) दिनोंदिन विस्तृत और कठोर होता जा रहा है। पुलिस-राज्य बुलन्दी पर है।

कुछ समय तक या अधिक-से-अधिक कुछ महीनों तक 'पूर्ण राज्य' की ओर इस प्रवृत्ति में बाधा पड़ी; जैसे १६२१ में मौत की सजा और भयानक 'चेका' (Cheka) की प्रथा बन्द कर दी गई। १६३४ में 'जी० पी० यू०' (G.P.U.) का अस्तित्व मिट गया। १६३६ में पुलिस के प्रधान, निकोलाई येजोव (Nikolai Yezhov) का खातमा कर दिया गया। फिर थोड़े-थोड़े समय के अन्तर से, मानो ऐतिहासिक विधान के अनुसार पुरानी प्रक्रिया फिर चालू हो गई। सर्वशक्तिमान राज्य ने छोटे-छोटे निजी द्वीपों पर पुनः प्रहार आरम्भ कर दिया और वह उन्हें खण्ड-खण्ड करके एक के बाद

दूसरे को आत्मसात करता गया।

युद्ध के दौरान में पार्टी की मशीन ठप पड़ गई। पार्टी के साथ-साथ एक नई, विशाल फौजी मशीन खड़ी की गई। कभी-कभी तो ऐसा जान पड़ता था कि सैनिक नेताओं की शानदार पोशाकें पुरानी और कम आकर्षक पार्टी-पोशाकों को भी मात कर देंगी। खेती की कोल्खोज (Colkboz) प्रणाली एकदम उलट दी गई, जिन क्षेत्रों पर शत्रु का अधिकार हो चुका था, वहाँ काफी संख्या में 'कोल्खोजों' का नाम व निशान मिट गया। नये मिलाये गए प्रान्तों में केवल व्यक्तिगत खेती होती थी। सोवियत पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों में पूँजीवादी राष्ट्रों के प्रति बड़ी सहानुभूति दिखाई जाती थी। कुछ कुछ उपेक्षित मार्क्सवाद—स्तालिनवाद को सोवियत बुद्धिजीवियों में 'विदेशी' सिद्धान्तों की उमड़ती हुई लहरों को बरदाश्त करना पड़ा। धर्म को पुनः स्थान दिया गया और राष्ट्र के जीवन में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उसकी खोज होने लगी।

इसमें आश्चर्य नहीं कि अनेक बाहरी प्रेक्षकों को यह विश्वास हो गया कि वहाँ जो कुछ हो रहा है, वह एक 'विकास' है जिसके लिए युद्धोत्तर वर्षों में विश्वासपूर्वक आशा की गई थी। बहुतेरे रूसी भी इसी की प्रतीक्षा में थे। परिवर्तनों का अर्थ स्पष्ट था। यदि 'नीचे से' अपने-आप उभरने वाली इन प्रवृत्तियों को नहीं रोका गया, तो रूसी साम्यवाद का पतन अनिवार्य हो जायगा। इसके लिए 'दुर्भाग्य' शब्द का प्रयोग और भी सही हो सकता है। इसीलिए सोवियत-शासकों को यथासम्भव शीघ्र इन विकासों का गला घोंटना पड़ा।

१६४६ से ही 'यथास्थापन और आगे विकास' से बराबर बचने की कोशिश होती रही है, राजनीतिक अनुवाद करने पर इसका अर्थ होता है फिर से युद्ध-पूर्व की स्थिति लाना और उसी आधार पर नये ढंग से उच्चतर विकास करना। मुख्यतः आर्थिक मामलों में लागू करने पर यह फारमूला व्यवहारतः पार्टी और राज्य के अन्य कार्य-क्षेत्रों को भी स्पर्श करता है। इनमें राजनीतिक मामले, कला, विज्ञान और सिद्धान्त भी आ जाते हैं। नये

अन्तर्राष्ट्रीय ढाँचे में ही सही, विदेश-नीति के प्राचीन सिद्धान्तों को भी अपनाना पड़ा। प्रत्येक क्षेत्र में प्राचीन युद्ध-पूर्व की व्यवस्था को पुनः स्थापित करने का सिद्धान्त काम कर रहा था। इन बातों से यह निष्कर्ष निकाला जाता था कि 'पुनस्संस्थापन' हमें अन्त में एक दूसरी अवस्था में ले जायगा और तब नई सफलताएँ सम्भव होंगी जो पहले के सभी रेकार्डों को मात कर देंगी।

पहले तो पार्टी का पुनरुद्धार करना था। शीघ्र ही उसने हिदायतों के मुताबिक अपना पुराना रूप धारण कर लिया। युद्ध में सारी सफलताओं के श्रेय का दावा करके उसने 'यूथलीग' के साथ-साथ अपनी सदस्य-संख्या बढ़ाई। 'पार्टी और सरकार' फिर एक आदर्श फारमूला बन गया और इसके अलावा कोई दूसरा चारा न था।

फिर युद्धोत्तर अवधि में 'शुद्धीकरण' आरम्भ होता है। यह बहुमुखी-सर्वतोमुखी कार्यवाही थी। प्रशासन के व्यक्तियों की शुद्धी, राजनीतिक अविश्वास के लिए शुद्धी, रक्तमय और रक्तहीन शुद्धी, शान्त और अशान्त शुद्धी, इन सबका अर्थ एक ही था। पार्टी की निर्विवाद सर्वशक्तिमत्ता की पुनः स्थापना के ये ही उपकरण थे। वे मार्क्सवाद-स्तालिनवाद के व्यावहारिक और सैद्धान्तिक अस्त्रों को फिर से तेज करने के भी साधन थे। युद्ध के बाद ही 'शुद्धीकरण' की कार्यवाही आरम्भ हुई और किसी भी तरह उसका अन्त नहीं हुआ है। सोवियत-राज्य में राजनीतिक जीवन के अस्तित्व के अभाव में पाँच वर्ष तक इसी का बोलबाला रहा है।

सेना का तेजी से विघटन किया गया और महत्व के स्थान से उसे हटा दिया गया। कई जनरल सरसरी तौर पर बरखास्त कर दिये गए, दूसरे दूर-दूर के प्रान्तों में भेज दिये गए। बड़े-बड़े नायक अपनी जगहों से गायब हो गए। पुलिस-प्रणाली में फिर से परिवर्तन किया गया। पिछलग्गू देशों और पश्चिम में उसने नई ज्योति और नया कार्य प्राप्त किया।

१९४६ के पतझड़-काल में कोल्खोज-प्रणाली को उसकी तमाम कठोरताओं के साथ पुनः जारी करने के उद्देश्य से एक कानून पास किया गया।

युद्ध-काल में यदि किसी किसान का खेत बढ़ गया तो उसे फिर पहले की तरह छोटा करने का आदेश दिया गया। एक किसान एक गाय रख सकता था, लेकिन एक घोड़ा नहीं रख सकता था। दो वर्ष बाद पूर्वी पोलैण्ड, बेसारेबिया, बाल्टिक राज्य-जैसे नव प्राप्त प्रान्तों में 'सामूहिक खेती' का अभियान शुरू हो गया।

स्थानीय प्रशासन के व्यक्तियों की खूब छानबीन की गई और विशेषकर उन क्षेत्रों में, जहाँ युद्ध-काल में जर्मनों का अधिकार था, उन्हें भारी और व्यवस्थित शुद्धीकरण का सामना करना पड़ा। उदाहरणार्थ १९४५-४७ में यूक्रेन में स्थानीय सोवियतों के ७० प्रतिशत से अधिक अध्यक्ष निकाल दिये गए और ४० प्रतिशत से अधिक पार्टी सेक्रेटरी निकाले गए। इसी अवधि में समस्त देश में केन्द्रीय और स्थानीय सोवियतों के चुनाव हुए। पूरी ताकत से पार्टी-नियन्त्रित एकांगी चुनावों के पुराने तरीके फिर से अपनाये गए, राजनीतिक प्रचारों की धूम मच गई और बहुतों को 'मजदूर-शिविरों' (Labour Camps) में निर्वासित कर दिया गया। ये तो केवल सरकार की आदती खूबियाँ थीं, जो युद्ध के बाद फिर सजीव हो उठीं।

पूर्व-स्थिति की पुनः सफल स्थापना का अर्थ यह नहीं है कि सब चीजें वस्तुतः पूर्ववत् कायम रहीं। छल-कपट और दाव-पेच की एक लम्बी कहानी है। वास्तविक मानसिक विकास की प्रक्रिया भी जारी है, जो उतनी स्पष्ट नहीं है। सामाजिक जीवन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में नई प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं। इस पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में उन पर प्रकाश डाला गया है। न तो वास्तविक विकास ने और न कूटनीतिक विचारों ने, सिद्धान्त या व्यवहार में नेताओं को पूर्ण तानाशाही (Complete dictatorship) की पुरानी पद्धति को छोड़ने के लिए मजबूर किया। नेताओं ने आक्रमण के स्वर को कम करने और देश या विदेश में उसके दबावों को कम करने की भी कोशिश नहीं की।

राष्ट्र की मनःस्थिति, जैसा कि युद्ध के दौरान में और युद्ध के बाद स्पष्ट हो गया, पार्टी के दमन का मुख्य विषय बनती रही है। वह कौनसी चीज

थी जिस पर पार्टी को प्रहार करना था ?

रेडियो और फ़िल्मों में कपोलकल्पित कहानियों के द्वारा निरन्तर सोवियत-प्रचार का आदिम स्तर सर्वदा घृणात्मक रहा है। चतुर, निर्दोष पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता की, युद्ध और उद्योग में उसके वीरतापूर्ण कार्य की और उसकी स्त्री और प्रेमिका की रात-दिन प्रशंसा का पुल बाँध दिया जाता। दूसरी ओर एक देशद्रोही, प्राचीन पूंजीवादी वर्ग के वंशज की तीव्र भर्त्सना की जाती थी, उसके भंडाफोड़ और सजा के प्रचार में सोवियत-प्रचारकों को खूब आनन्द मिलता। इसके विपरीत अन्त में वफ़ादार और राजभक्त लोगों का गुणगान अनिवार्य होता। साधारण जनता के अभाव, दीनता या दुःख और पीड़ाओं को उपन्यासों या नाटकों में वर्णन करने की अनुमति नहीं दी जाती और एक राजनीतिक नेता निन्दा में कोई एक शब्द भी नहीं बोल सकता। साहित्य सोवियत-हित का साधक होना चाहिए। उसका कर्त्तव्य है नये-नये कार्यों के लिए प्रोत्साहन देना और बिना किसी संकोच के सोवियत-निर्देशों की पूर्ति करना।

किन्तु रूसी पाठक और श्रोता तो कुछ और ही देखना और सुनना चाहता है। वह अन्दर-ही-अन्दर वास्तविकता को जानता है और उसके निरन्तर तोड़-मोड़ की कहानी से ऊब जाता है। वह अन्य मनुष्यों की तरह चाहता है कि सभी चीजें अपने असली रूप में मान्य की जायँ। इसके अतिरिक्त उसकी मानवीय आकांक्षाएं भी विश्व के कोने-कोने के अन्य साधारण मानवों-जैसी ही होती हैं। एक अच्छे भूभाग, कलात्मक सत्यता और मानवीय गुणों और अवगुणों की ओर वह विस्फारित नेत्रों से देखता रहता है। वह एक ओर बुराई-ही-बुराई और दूसरी ओर अच्छाई-ही-अच्छाई के विचित्र तरीकों से खिन्न और निराश हो जाता है। वह अधिक समय तक उस भूमि में रह चुका है जो सोवियत भूमि नहीं बनी थी और उसकी सचाई की भूख प्रबल और शाश्वत बनी हुई है।

'भागने' (Escape) की इच्छा कोई नई बात नहीं है। (दूसरे देशों में इसे उलटा ही कहा जायगा।) साधारण रूसी चिरकाल तक प्रचारों की

तुगुल-ध्वनि से ऊबकर टाल्स्टाय, पुश्किन, तुर्गनेव, चैकोस्थी और गिलन्का की दुनिया में भागकर जाता है। सुलभ होने पर (युद्ध-काल में सहयोगवश कुछ सुलभ था) वह विदेशी साहित्य के जगत् में भी भागकर जाता। अन्त में युद्ध के बाद कुछ सोवियत रचयिताओं ने कम्युनिस्ट गगन से पृथ्वी पर उतरने की हिम्मत की और 'सामाजिक माँग' का अपना कोटा पूरा करने में लगने के बजाय वे लेखक की अपनी प्राचीन परम्परा का पालन करने लगे। उन्होंने, दबी ज़बान में ही सही, सोवियत जीवन के कुछ तथ्यों पर प्रकाश डालना शुरू कर दिया।

इस पर पार्टी उन पर टूट पड़ी। उनकी कलात्मक भावनाएँ उन्हें अधिक पार्टी-नीति से जितनी ही दूर खींचकर ले जातीं, उतना ही उनके भाग्य में बुरा बदा होता। प्रसिद्ध व्यंग-आलोचक मिखैल जोश्चेन्को (Mikhail Zoshchenko) के प्रकाशनों पर कई वर्ष के लिए प्रतिबंध लगा दिया गया। सभी प्रकाशन-गृहों, पत्र और पत्रिकाओं को सूचित किया गया कि उनका नाम राज्य की 'काली सूची' में है। अन्य प्रसिद्ध लेखकों की खुले-आम कड़ी आलोचनाएँ की गईं। पार्टी की सेण्ट्रल कमेटी ने 'सापेक्षवादी' फ़िल्म 'दी बिग लाइफ' (The Big life) के निर्माताओं पर गम्भीर अपराध के आरोप लगाए। दृष्टान्त के तौर पर फ़िल्म में "घायल सैनिक युद्ध के मैदान में ही छोड़ दिये जाते हैं।" "खनिक की स्त्री उनके प्रति उदासीनता प्रकट करती है।" "पहुँचने वाली नौजवान मज़दूरिनों को एक बदमाश राज्य-कर्मचारी के मातहत कर दिया जाता है।" कमेटी ने सोच-समझकर निर्णय दिया। "फ़िल्म के गाने दुःखद हैं।" और ये सचमुच पार्टी की स्फूर्त, प्रफुल्ल और स्वावलम्बी विचारधारा के प्रतिकूल हैं। 'बेकेटोव्ज़ कैरियर' (Beketov's Career) के रचयिता और नाटककार ए० सैफ्रोनोव पर यह आरोप लगाया गया कि वह एक औद्योगिक कारखाने में पार्टी का संगठन-कार्य प्रदर्शित करने में असमर्थ रहा। अलेक्सीचेर्कानोव (Alexei Cherkanov) भी अपने उपन्यास "द डे स्टार्ट्स इन द ईस्ट' (The day starts in the East) में इसी प्रकार के अपराध का दोषी पाया गया। यह रचना बहुत बुरी

है। क्यों? इसमें न तो पार्टी-संगठन की बात है और न 'स्टाखनोवाइटों' (Stakhanovites) की चर्चा है।

सेण्ट्रल कमेटी ने एक विशेष नियम में नाटककारों को यह खरी-खोटी सुनाई कि उनमें से बहुतेरे सोवियत-नागरिक के सर्वोत्कृष्ट गुणों और विशेषताओं का चित्रण नहीं कर सकते। सुयोग्य और सुप्रसिद्ध लेखक वलेण्टीन कातयेव (Valentin Kateyev) की, जिसका उपन्यास 'फार सोवियत पावर' (For Soviet Power) अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ था, इसलिए भर्त्सना की गई कि उसने जर्मन-अधिकार के समय एक गुप्त भूमिगत दल के कम्युनिस्ट सेक्रेटरी का "विजय में दृढ़ता और विश्वास के आदर्श" के रूप में चित्रण नहीं किया और विदेशी नाटकों के अवगुण भी विस्मरणीय नहीं हैं। "अमरीकी और ब्रिटिश नाटक सोवियत समाज के लिए विदेशी दृष्टि-कोण से हमारी जनता के मन को विषाक्त कर देते हैं।"

'पार्टीनोस्ट' (Partyinost) पार्टी का विरोधी नारा बन गया। इस शब्द का ठीक-ठीक अनुवाद नहीं हो सकता। इसका अर्थ है पार्टी-भावना, पार्टी के प्रति भक्ति और पार्टी के निर्देशों को शिरोधार्य करना।

गैर-पार्टीबाजी प्रवृत्तियों के विरुद्ध पार्टीबाजी, लोकसेना के विरुद्ध पार्टीबाजी, कला, विज्ञान और व्यक्तिगत जीवन में पार्टीबाजी। "सापेक्षवाद (आब्जेक्टिविज्म) मुरदाबाद, पार्टीबाजी (पार्टीनोस्ट) जिन्दाबाद।" उन कम्युनिस्ट वैज्ञानिकों के विरुद्ध 'धर्मयुद्ध' छेड़ दिया गया, जिन्होंने 'पार्टीबाजी' से शत-प्रतिशत सहमति नहीं प्रकट की। कम्युनिस्ट अर्थ-शास्त्रियों का 'डीन' यूजिनी वर्गा (Eugene Varga) अपराधी सिद्ध हुआ और उसे तनज्जुल कर दिया गया। उसका अपराध? पश्चिमवादी युद्ध-युग में लिखी गई एक पुस्तक में (जो बाद में प्रकाशित हुई) उसने अमेरिकी आर्थिक-स्थिति के कुछ ठोस गुण व्यक्त किये थे। उच्च कोटि के जार्ज अलेक्जेण्डर को अपने 'दर्शन के इतिहास' (History of Philosophy) के लिए डांटा-फटकारा गया। भौतिकवाद के अतिरिक्त अन्य दार्शनिक-विचारों की व्याख्या में वह 'सापेक्षवाद' (Objectivism) का दोषी पाया गया। 'विश्वबन्धुत्ववाद'

(Cosmopolitism) ने अनेक सोवियत वैज्ञानिकों, वफादार कम्युनिस्टों तथा दूसरों के खिलाफ अपराध के प्रमाण प्रस्तुत किये। सम्पादकीय विभाग के लोग बरखास्त कर दिये गए, नये-नये आदमी अधिकारी बनाये गए और पहले के लोग गायब हो गए।

इस 'पार्टीबाजी' के साथ-साथ एक दूसरे शब्द ने सरकारी लोकप्रियता प्राप्त की : 'उद्देश्यपूर्णता' (Purposefulness)। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु सेण्ट्रल कमेटी की राजनीतिक नीति के मातहत होगी। सभी क्षेत्रों की विशेषज्ञ यह समिति नाटक और काव्य, अच्छा और बुरा-संगीत, वंश-परम्परा के सही और गलत सिद्धान्त, शुद्ध और अशुद्ध दर्शन तथा किसी अन्य समस्या पर, चाहे वह कितनी ही जटिल क्यों न हो, न्यायप्रियता के समान दावे के साथ निर्णय करती थी।

यूनानी अर्थोडाक्स चर्च आज भी उन थोड़े से क्षेत्रों तक सीमित है, जहाँ 'पुनर्संस्थापन और विकास' ने युद्धकालीन सुधारों का स्थान पूर्ण रूप से नहीं ग्रहण किया है। इस कार्य-प्रणाली का मुख्य कारण विदेश-नीति का विचार था और पिछलग्गू देशों में वेटिकन के विरुद्ध युद्ध इसका रंचमात्र भी कारण नहीं था। वस्तु-स्थिति यह है, कुछ चर्च खुले रहते हैं, उनमें 'सर्विस' कानूनन जायज है और सोवियत नागरिक धर्मोपदेश सुन सकते हैं। फिर भी, 'सैद्धान्तिक मोर्चे पर नये प्रहार' से, विशेषकर दर्शन में युद्धशील भौतिकवाद और विकास के विकृत सिद्धान्त के प्रचार द्वारा इस सहिष्णुता का प्रतिकार किया जाता है। इसीलिए युद्धोत्तर सैद्धान्तिक 'धर्मयुद्ध में प्राणिशास्त्र और दर्शन को इतना अधिक महत्त्व दिया जाता है।

इन सारी कार्यवाहियों में अपनी मृत्युपर्यन्त पोलितब्यूरो का आन्द्रेई जाद्नोव पहले नम्बर का उपद्रवी था। उसने उपन्यासकारों, नाटककारों, साहित्यिक आलोचकों, फ़िल्म-निर्माताओं, लिपि-लेखकों का सफ़ाया किया। जाद्नोव ने ही अविश्वासी दार्शनिकों के विरुद्ध अभियान चलाया। अन्यत्र अन्य सहायकों ने इस आन्दोलन को अपने हाथ में लिया। इस आन्दोलन ने समाजशास्त्रियों, इतिहासकारों, अर्थशास्त्रियों में से विरोधियों या सन्दिग्ध

व्यक्तियों पर प्रहार किया। जादनोव की मृत्यु के बाद प्राणि-विज्ञान के क्षेत्र में शुद्धीकरण ने और भी उग्र रूप धारण किया। शीघ्र ही मनोवैज्ञानिक, प्राणिशास्त्री और प्रमुख डाक्टर भी इसके फन्दे में आ गए।

इतिहास, अर्थशास्त्र, समाज-शास्त्र तथा अन्य सम्बन्धित विषय लगातार विशुद्धीकरण के लक्ष्य बने रहे हैं। १६३० के दशक के आरम्भ में निश्चित सैद्धान्तिक व्यवस्था कायम हुई। वर्तमान राजनीतिक मामलों से कम सम्बन्धित दर्शन के विरुद्ध आन्दोलन १६२० के दशक के अन्त में आरम्भ हुआ। दूसरे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में 'मेन्शेविक आदर्शवाद' के विरुद्ध अभियान पूरा हो गया और समानुरूपता के राज्य के अन्तर्गत पहले ही से काम करने वाले दार्शनिकों के लिए अन्तिम सूराख भी पूर्ण रूप से बन्द कर दिया गया। विधायक रचनाओं में, जिनमें कविता भी थी, पार्टी की तमाम कोशिशों के बावजूद बार-बार विमुखता (Deviations) के कार्य हो ही जाते थे। किन्तु इस क्षेत्र में भी उसी अवधि में युद्ध का समय आते-आते अभियान पूरा हो गया।

अब प्राकृतिक विज्ञान का विशाल क्षेत्र रह गया जो अभी तक प्रायः अछूता पड़ा हुआ था। अत्यन्त आवश्यक और तात्कालिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इस क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को ज्यादा छूट दी गई थी। इस प्रकार प्राकृतिक विज्ञान बचने का साधन बन गया था। वैज्ञानिक सैनिकीकरण (Regimentation) और 'सामाजिक माँग' के सिद्धान्त के अपमान के विरोधी हजारों छात्रों और सुयोग्य प्रोफेसरों ने मानव-ज्ञान के इन क्षेत्रों में आश्रय ग्रहण किया। उनकी प्रयोगशालाओं, दुकानों और अस्पतालों में श्वास लेना कुछ सरल है। यह उल्लेखनीय है कि गणना में पार्टी-सदस्यों की संख्या अत्यधिक होते हुए भी प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम है।

किन्तु युद्धोत्तर-काल में विज्ञान की इन शाखाओं पर भी कम्युनिस्टों का संयुक्त-प्रहार आरम्भ हो गया। सैद्धान्तिक और व्यावहारिक विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में विशुद्धीकरण की इन कार्यवाहियों को काफी और विनाशकारी-

सफलताएँ मिली हैं।

महान् सार्वजनिक व्यवसायों के चुनावों में प्रायः युद्धोत्तर विशुद्धीकरण की कार्यवाही की गई है। विज्ञानशाला (Academy of Sciences) ने इस 'चुनाव' (Setting) का वैसे ही कार्य किया है जिस तरह लेखक-यूनियन की साधारण सभाओं और वैज्ञानिकों के विशेष सम्मेलनों ने किया है। कार्य-प्रणाली एकरूप रही है। कम-से-कम सम्प्रति पार्टी का पूर्ण विश्वास-पात्र व्यक्ति अपनी प्रथम रिपोर्ट पेश करता है जिसमें नई नीति निर्धारित रहती है और पार्टी से विमुख व्यक्तियों को नामजद किया जाता है और उन्हें डाँटा-फटकारा जाता है। तब अभियुक्त अपनी 'वैज्ञानिक' और 'अपराधपूर्ण' भूलों को स्वीकार करता है। वह कह सकता है, इनमें वर्षों या दशकों लग गए। यदि अपनी इस स्वीकृति में वह अपनी काफी निन्दा नहीं करता तो उस पर झुठाई का आरोप लगाया जाता है और उसे इस नये अपराध के लिए भी प्रायश्चित करना पड़ता है। इस बीच प्रारम्भिक रिपोर्टों में लिखित विचार अपने-आप कानून बन जाते हैं जिन्हें सार्व-भौमिक रूप से स्वीकार करना पड़ता है और उसे समस्त सोवियत-यूनियन में लागू किया जाता है।

: १२ :

सन्तुलन-पत्र (Balance Sheet)

'यथास्थापन तथा और अधिक विकास' का सिद्धान्त अनेक क्षेत्रों में सफल सिद्ध हुआ है, जो ऊपरी दृष्टि से, राज्य के भविष्य के लिए निर्णायक मालूम हो सकता है। इनमें पुलिस, औद्योगिक उत्पादन, पार्टी-अनुशासन और सोवियत जनता में व्यवस्था, सभी कुछ आ जाता है।

'यथास्थापन' ने राजनीतिक पद्धति में काफी सहायता की है। सोवियत राज्य आज पूर्ण नियन्त्रण की जिस सीमा तक पहुँचा गया है उतना पहले कभी नहीं पहुँचा था। इस प्रकार के राज्यीय ढाँचे से परिपूर्ण विश्व के इतिहास में जितने भी एकतन्त्रवादी राष्ट्र हुए हैं, उनसे कहीं अधिक एकतन्त्रवादी आज सोवियत-राज्य है। यदि एकतन्त्रवादी राज्य का उद्देश्य किसी भी निर्णायक कार्य के लिए सर्वथा उद्यत रहना है, तो सोवियत-यूनियन आज तैयारी के शिखर पर है।

विदेशी मामलों में भी 'यथास्थापन और अधिक विकास' ने अपूर्व सफलता प्राप्त की है। युद्ध समाप्त होने पर सोवियत-यूनियन को १६४१ की अपनी सीमाएँ पुनः प्राप्त हुईं। तब से राज्य एक दूसरी 'उच्चतर' अवस्था में पहुँच गया है। संक्षेप में, अब राज्य ने एक साम्राज्य का रूप धारण कर लिया है जो फैलता जा रहा है। एक नया और भयंकर रेकार्ड कायम किया गया है। ८० करोड़ से अधिक आबादी के साथ—विश्व की कुल आबादी

का ३२ प्रतिशत—यह साम्राज्यवादी ढाँचा विश्व का सबसे बड़ा साम्राज्य है। यह साम्राज्य स्वयं एक सिद्धान्त से उद्भूत विस्तारवादी प्रवृत्तियों की उत्पत्ति है—और यह 'विस्तार' सीमा-सम्बन्धी नई समस्याएँ, नये अभियानों के लक्ष्य, नये नागरिक उद्देश्य और कार्य उत्पन्न करता है।

'यथास्थापन और विकास' का फार्मूला कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल पर भी लागू किया गया है। वास्तव में कभी भी भंग न होकर कामिण्टर्न—कामिन्फार्म युद्ध के पहले से भी अधिक सोवियत कठपुतली बन गया है। यह एक अद्भुत सफलता है। कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल का कार्य पिछलग्गू कम्युनिस्ट पार्टियों को मास्को-शासन के अधीन करने की स्पष्ट नीति को तथा नवीन साम्राज्यवादी शासन द्वारा अधीन राष्ट्रों के आर्थिक शोषण को भी स्वीकार कराना है। अन्तिम भीषण प्रहार की तैयारी में वर्षों तक कामिन्फार्म को सजीव रखने के बाद, जब कभी क्रेमलिन कपट-छल के आन्दोलनों और मोर्चा-दलों का उपयोग करना चाहता है, जैसे स्टाकहोम का शान्ति-आन्दोलन, तो कामिन्फार्म को स्वीकृत कम्युनिस्ट-आन्दोलनों और दलों के साथ मिला दिया जाता है।

'यथास्थापन और विकास' सोवियत अर्थ प्रणाली के लिए अपने उद्देश्यों में भी सफल हुआ है। युद्ध-पूर्व की आर्थिक प्रणाली फिर से स्थापित की गई है और उसे नये क्षेत्रों में भी विस्तृत किया गया है। युद्ध-उद्योगों पर विशेष जोर के साथ औद्योगीकरण फिर सर्वोच्च कानून हो गया है। १९४० के उत्पादन-स्तर तक पहुँचकर उसके आगे प्रगति की गई है। भूतपूर्व शत्रुओं और पिछलग्गू देशों को जो 'भेंट' देने के लिए मजबूर किया गया, उसी से विभिन्न स्तरों के सहित युद्ध के पूर्व के जीवन-स्तर तक पहुँचाना सम्भव हुआ है। मजदूर और कर्मचारी आज भी अपने कामों से बँधे हुए हैं और वे मालिकों को छोड़ या बदल नहीं सकते। १९५० के सुधार के समय से कोल्खोज (Kolkhoz) प्रणाली पहले की अपेक्षा अधिक कठोरता के साथ फिर से स्थापित और केन्द्रित की जा रही है। राज्य का बजट अपने विशाल सैनिक व्यय के साथ पुनः दृढ़ता के साथ

स्थापित किया जा रहा है और उसका मुख्य स्रोत उपभोक्ताओं का कर है। उद्योग के अनेक क्षेत्रों में नहर और रेलवे के निर्माण में, सामरिक महत्त्व के तथा अन्य मूल्यवान खनिज पदार्थों के निकालने में, कूड़ा-करकट ढोने में तथा अन्य क्षेत्रों में 'बेगारी' की प्रथा जारी है। 'ब्लाट' का व्यापक जाल अपनी अर्धकानूनी और गैर-कानूनी कार्यवाहियों से आर्थिक क्षेत्र में नौकरशाही के बँधे हुए हाथों को कुछ-कुछ ढीला करने में व्यावहारिक सहायता पहुँचाता है।

प्रत्येक स्तर में नये वर्ग-समाज 'सोशलिस्ट राष्ट्र' का सामाजिक ढाँचा फिर से तैयार किया गया है। इस विकास के लिए मनोवैज्ञानिक बाधाएँ और कम्युनिज्म के अतीत के 'नीलपत्रों' (Blue print) के अवशेष अब अन्तिम रूप से विलीन हो गए हैं। ऊपरी वर्ग विशेष रूप से अपने को सुरक्षित महसूस करता है और जब तक वह पूर्ण वफ़ादार है तब तक वह सुरक्षित महसूस करेगा। फिर कोई कारण नहीं है कि धनी और अधिक धनी क्यों नहीं होगा?

वास्तविक नग्न-नेत्रों से देखने पर सोवियत राज्य की आज यही स्पष्ट स्थिति दिखाई पड़ती है किन्तु उसके ऊपरी रूप को देखकर इसे स्वीकार करना भूल होगी।

सतह से एक इंच नीचे सोवियत राज्य के हृदय में सड़न शुरू हो गई है। सतह के नीचे साधारण जनता भी है जो तीस वर्षों के जुल्मों की शिकार बनी हुई है। वह थकित, निराश और मौन है। उसका सन्देह जीवन का अंग बन गया है। देखने में वह गम्भीर है और अपने नेताओं के 'धर्मोपदेशों' का मौखिक पालन भी करती है। किन्तु वह इतनी होशियार है कि उसे धोखा नहीं दिया जा सकता और इतनी थकी हुई है कि विद्रोह नहीं कर सकती। वह अन्यत्र से सहायता की अथवा विश्व के 'अमुक' भागों से प्रथम लाक्षणिक सहायता की प्रतीक्षा में है। उसके पास कोई विशिष्ट कार्यक्रम नहीं है और न कोई स्पष्ट कार्य-प्रणाली है, जो योजनापूर्वक 'क' 'ख' 'ग' बिन्दुओं तक घटाई जा सके। अशान्ति और अत्याचार के वर्षों

और जनता की प्रमुख इच्छा आज आराम करने की है। मानव के सम्मान की तीव्र भावना की इतनी अवहेलना की गई है कि राष्ट्र न्याय और अधिकार चाहता है। सामान्य स्थिति ही उसका परम लक्ष्य है—ऐसा जीवन जिसमें साधारण मानव, न कि राज्य द्वारा मान्य नायक या महान् पुरुष, शिष्ट जीवन व्यतीत कर सके।

राष्ट्रों के बीच भेद जरूर हैं, किन्तु इन भेदों के बावजूद साधारण रूसी नागरिकों—जिनमें अधिकांश कम्युनिस्ट भी हैं—तथा अन्य सभ्य राष्ट्रों के लोगों में बहुत-कुछ समानता है। उनकी आशाएँ और आकांक्षाएँ विश्व के अन्य नागरिकों की आशाओं और आकांक्षाओं से मिलती-जुलती है। वह मांस और रक्त का बना हुआ है। उसका मांस रौंदा गया है और रक्त बहाया गया है। कम्युनिस्टों की सर्वोत्तम सेवा यही है कि चुपके-चुपके और होशियारी से पर्याप्त उनके इस रहस्य को स्वीकार किया जाय कि जो कुछ रूसी जनता के लिए और उसके साथ किया जाता है, उसकी वह परवाह नहीं करती और वह 'केवल रूसी' है और इतने पीछे है कि उसका पिछड़ापन कम्युनिस्ट कार्यवाही के लिए मजबूर करता है। अपने जीवन की दशाओं में और कम्युनिस्ट-सिद्धान्त के अमोघ अस्त्र को अपनाकर भी उसकी आकांक्षा वही है जो हमारी है। कम्युनिस्टों ने उसकी इच्छा को न तो पूरा किया है और न वे पूरा कर सकते हैं।